वार्षिक विवरण 2016-17

नैगमिक सामाजिक उत्तरदायित्व और सतत विकास पहल

भारत डायनामिक्स लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

प्रस्तुतकर्ता

इंस्टिट्यूट ऑफ़ पब्लिक एंटरप्राइज, हैदराबाद

झलक सी एस आर की

अभिस्वीकृति

वर्ष 2016-17 के लिए सी एस आर और एस डी वार्षिक विवरण प्रचार करने के लिए इंस्टिट्यूट ऑफ़ पब्लिक एंटरप्राइज, हैदराबाद की परामर्श सेवाएं लेने के लिए हम भारत डायनामिक्स लिमिटेड के अधिकारियों को बहुत बहुत धन्यवाद प्रकट करते हैं।

अध्ययन के अवसर प्रदान करने के लिए हम श्री वी उदय भास्कर - सी।एम।डी और श्री पीरामनायगम -निदेशक, (वित्त),भारत डायनामिक्स लिमिटेड का अभिनंदन देते हैं। रिपोर्ट की तैयारी में निगमित जरूरतों (कॉर्पोरेट) और मूल्यवान अंतर्दृष्टि सहयोग के लिए श्री डी एस एन मूर्ति, प्रबंधक (पी एंड ए) हम श्री एस नारायणन, महाप्रबंधक (पी एंड ए), श्री भट्टू श्रीनिवास, डी.ई को हर्दिक धन्यवाद व्यक्त करते हैं।

इस रिपोर्ट को तैयारी के लिये मेजबान संगठन भारत डायनामिक्स लिमिटेड के पेशेवरों के सक्रिय जैसे श्री कृष्णवर्धन, प्रबंधक (पी एंड ए) / (सी एस आर), श्री सुरजीत दास, उपप्रबंधक (पी एंड ए) / (सीएसआर), श्री साईराम, सहायक प्रबंधक (पीएंडए) सहयोग से समाचार एकत्रित करने और समय पर अपना काम पूरा करने में सहयोग प्रदान के लिये सभी को प्रतिदिल से आभार व्यक्त करते हैं।

हम बीडीएल के अन्य सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को जो इसमें शामिल हुए और जो हमें इस रिपोर्ट की तैयारी में आवश्यक सहायता प्रदान किये थे उनको धन्यवाद देते हैं।

डॉ शुलगणा सरकार
सहायक प्राध्यापक, आई पी ई

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	अध्याय संख्या	विवरण	पृ.संख्या
1	अध्याय-1	परिचय	5-12
2	अध्याय-2	अनुसंधान करने की क्रियाविधि	13-18
3	अध्याय-3	विवरण,विश्लेषण	19-126
4	अध्याय-4	प्रभाव मूल्यांकन	127- 129
5	अध्याय-5	निष्कर्ष	130-132

अध्याय-I

प्रस्तावना

1.1 भारत डायनामिक्स लिमिटेड

भारत डायनामिक्स लिमिटेड (बीडीएल) रक्षा मन्त्रालय के अधीन भारत सरकार का उद्यम है। इसकी स्थापना हैदराबाद में सन् 1970 में इस उद्देश्य से की गई थी कि इसे संचलित मिसाइल और उनसे सम्बद्ध रक्षा उपकरणों के विनिर्माण का आधार-स्तम्भ बनाया जाए। बीडीएल मिनीरत्न श्रेणी-। के सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम है। यह विश्व भर में उन चुनिंदा उद्यमों में से एक है, जिनके पास उत्कृष्ट संचलित मिसाइल प्रणालियों के विनिर्माण की क्षमता है। यह कम्पनी विनिर्माण के नूतन मार्गों पर पदार्पण के लिए कटिबद्ध है। इनमें ज़मीन से हवा में मार करने वाली मिसाइलों, वायु रक्षा प्रणालियों, भार वाले टॉरपीडो, हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइलों जैसी अस्त्र-प्रणालियों की व्यापक परिधि सम्मिलित है। इस प्रकार यह उद्यम रक्षा उपकरणों का विश्व स्तरीय विनिर्माता बन गया है। बीडीएल में इस समय विभिन्न श्रेणियों में 3,105 कर्मचारी कार्यरत हैं। इसकी तीन विनिर्माण इकाइयां हैं : एक कंचनबाग, हैदराबाद में और दूसरी तेलंगाना के संगारेड्डी ज़िले के पटनचेरु मण्डल में भानूर में। तीसरी इकाई आन्ध्र प्रदेश के विशाखापट्टणम में स्थित है। कार्यस्थलों के विस्तार की योजना के अन्तर्गत बीडीएल दो और इकाइयों की स्थापना कर रहा है। एक महाराष्ट्र के अमरावती ज़िले में और दूसरी तेलंगाना राज्य के इब्राहीमपट्टणम में।

कम्पनी का ध्येय और अभियान इस प्रकार है:

ध्येय: रक्षा उद्योग के लिए अन्तरराष्ट्रीय मानक के गुणवत्तापूर्ण उत्पादों का प्रस्तुतकर्ता विश्व स्तरीय उद्यम बनना।

अभियान:अपने आपको वान्तरिक्ष और अन्तर्जल शस्त्र उद्योग में अग्रणी विनिर्माता के रूप में स्थापित करना तथा देश की सुरक्षा प्रणालियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले परिष्कृत, उत्कृष्ट और वैश्विक उद्यम के रूप में उभरना।

1.2 बी डी एल सी एस आर मिशन

बी डी एल अपने नैगमिक सामाजिक उत्तरदायित्व (सी एस आर) अभियान और सम्पोष्य पहल कदमी के माध्यम से निम्नलिखित योगदान देगा:

- अपने समाज में सुख-सुविधाओं से वंचित लोगों के जीवन-स्तर में सुधार के लिए आवश्यक साधन उपलब्ध कराना।
- गरीबी उन्मूलन में हाथ बँटाना।

- ऐसी किसी भी गतिविधि में सहयोग देना, जो परिस्थिति की सन्तुलन और सम्पोष्यता के सुधार में सहायक हो।

नैगमिक सामाजिक उत्तरदायित्व के अनुरूप उद्देश्य: निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कदम उठाए जाएंगे-

- प्राथमिकता के तौर पर आवश्यक शिक्षा की पहचान, उस पर प्रयत्न केन्द्रित करना और गाँवों के स्तर पर शिक्षा में बेहतरी के लिए अनुकूलतः हाथ बँटावना ।
- ग्रामीण जीवन को स्वच्छ और स्वास्थ्यकर बनाने के लिए आरोग्य, साफ-सफाई और पर्यावरण की कोटि का उन्नयन।
- जीविका उपार्जन की दृष्टि से स्वयं के रोज़गार की व्यवस्था करने और व्यावसायिक प्रशिक्षण लेने के लिए नवयुवकों को सीख और बढ़ावा देना
- सुख-सुविधाओं की कमी झेलने वालों के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरण सम्बन्धी विकास के लिए सरकारी प्रयासों से सहयोग और उनमें भागीदारी।

नैगमिक सामाजिक उत्तरदायित्व सम्बन्धी संगठन का ढाँचा

कम्पनी में नैगमिक सामाजिक उत्तरदायित्व सम्बन्धी पहलकदमी का संचालन दो स्तरों के ढाँचे का संगठन करेगा। इसके विवरण नीचे दिए गए हैं: बोर्ड स्तर की नैगमिक सामाजिक उत्तरदायित्व और सतत् विकास समिति में तीन या तीन से अधिक निदेशक होंगे। इनमें से एक निदेशक स्वतन्त्र निदेशक होगा।

स्वतन्त्र निदेशक : अध्यक्ष

स्वतन्त्र निदेशक : सदस्य

निदेशक (वित्त)   : सदस्य

निदेशक (उत्पादन) : सदस्य

अधिशासी निदेशक (का एवं प्रशा) : सदस्य सचिव

बोर्ड से निम्न स्तर की नैगमिक सामाजिक उत्तरदायित्व और सतत् विकास समति :

अधिशासी निदेशक (का.एवं प्र.):	अध्यक्ष
अधिशासी निदेशक (भा.इ.) :	सदस्य
महाप्रबन्धक (विश्रॉड अण्ड क.सं.):	सदस्य
महाप्रबन्धक (वि.इ.):	सदस्य
सहायक महाप्रबन्धक (सिविल एवं इन्फ्रा.):	सदस्य
सहायक महाप्रबन्धक (सीपी) भा.इ.:	सदस्य
उप महाप्रबन्धक (का.एवं प्रशा. – सी एस आर):	सदस्य
उप महाप्रबन्धक (सिस्टम ऑडिट) :	सदस्य
उप महाप्रबन्धक (वित्त एसजी-1):	सदस्य

उप महाप्रबन्धक (वित्त) निगम:	सदस्य
उप महाप्रबन्धक (वित्त) वि.इ.:	सदस्य
उप महाप्रबन्धक (वित्त) भानूर:	सदस्य
प्रबन्धक (का एवं प्र) वि.इ.:	सदस्य
प्रबन्धक (का एवं प्र) भा.इ.:	सदस्य
प्रबन्धक (का.एवं प्रशा. – सी एस आर) :	सदस्य सचिव

बीडीएल में सी एस आर परियोजानाओं के प्रस्ताव, चयन और अनुमोदन की प्रक्रिया

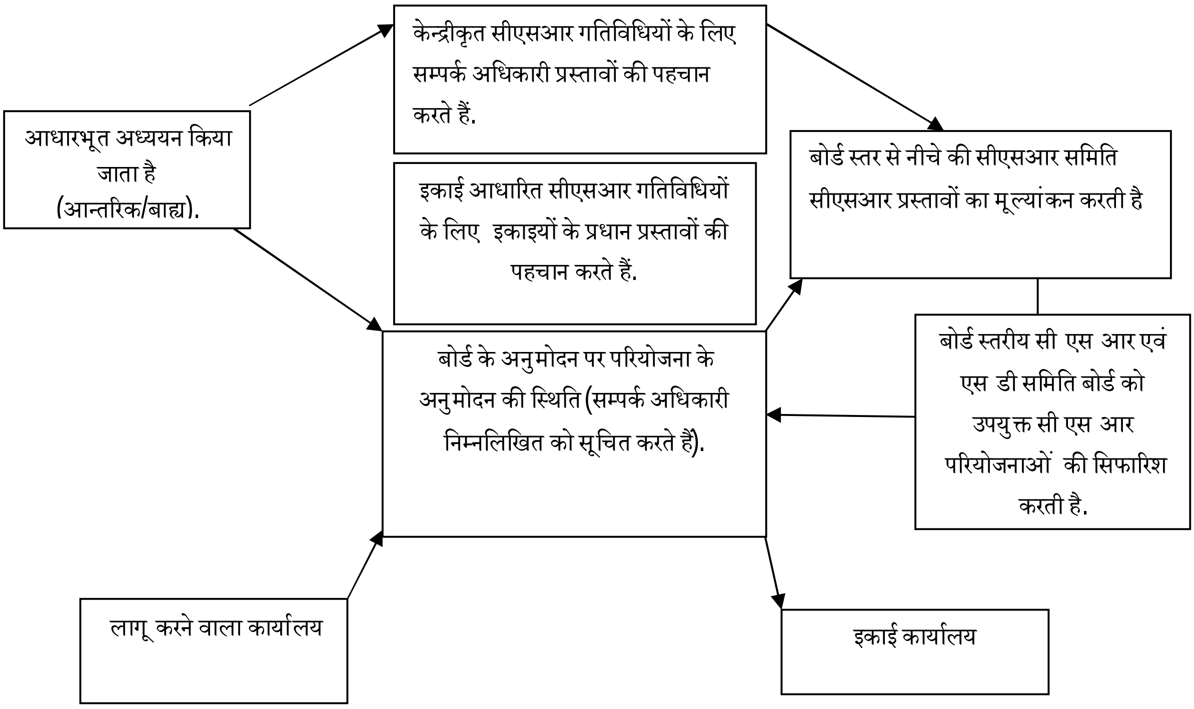

सी एस आर एवं एसडी : बीडीएल के मूलभूत क्षेत्र

- पर्यावरण की रक्षा
- ढाँचे का विकास
- पेय-जल / सफाई
- स्वास्थ्य-संरक्षण / चिकित्सा सुविधाएं
- सामुदायिक विकास
- शिक्षा
- कौशल का विकास / सशक्तीकरण
- आपदा प्रबन्धन

- कला, संस्कृति और खेल
- अनुपयोगी ऊर्जा का प्रबन्धन
- ऊर्जा के नवीकरण योग्य साधनों में बढ़ोतरी
- अनुपयोगी सामग्रियों के पुनः उपयोग और पुनर्चक्रण के लिए परियोजना
- बरसात का पानी एकत्र करना
- भू-जल आपूर्ति की सम्पूर्ति
- पारिस्थिति की प्रणाली की रक्षा, संरक्षण और पुनरुद्धार
- ऊर्जा की कम खपत करने वाली और नवीकरण योग्य ऊर्जा प्रौद्योगिकी के माध्यम से कार्बन उत्सर्जन घटाना

बीडीएल पर्यावरण से सम्बन्धित संयुक्त राष्ट्र के तीन वैश्विक संहत सिद्धान्तों का समर्थन करता है, जो निम्नलिखित हैं:

- पर्यावरण सम्बन्धी चुनौतियों के लिए रोक-थाम के उपाय का समर्थन
- पर्यावरण सम्बन्धी बृहत्तर उत्तरदायित्व को बढ़ावा देने के लिए पहलकदमी करना
- पर्यावरण के अनुकूल प्रौद्योगिकियों के विकास और विसरण को बढ़ावा देना

बीडीएल सी एस आर परियोजना आधारित रुख

दीर्घावधि सम्पोष्यता पर बल देने के लिए बीडीएल परियोजना आधारित उत्तरदायित्वपूर्ण रुख अपनाता है। इस रुख में उद्यम की कार्य-योजना के निम्नलिखित तीन विभाजन किए जाते हैं:

अल्पावधि – एक वर्ष से कम

मध्यावधि – एक से तीन वर्ष

दीर्घावधि – तीन वर्ष से अधिक

दीर्घावधि कार्यक्रम की पहचान करते समय निम्नलिखित को परिभाषित करने के यथासम्भव सभी प्रयास किए जाने चाहिए:

- कार्यक्रम के उद्देश्य
- आधारभूत सर्वेक्षण – इससे प्रतिफल के मापन के आधार का पता चलेगा।
- कार्यान्वयन की समय-सारणियां – निर्धारित समयावधि
- उत्तरदायित्व और प्राधिकार
- प्रत्याशित प्रमुख परिणाम और माप्य प्रतिफल

भारत डायनामिक्स लिमिटेड – सी एस आर के अनियोजित वर्ष 2016-17 के दौरान खर्च किए गए-परियोजनावार की एक झलक

क्र. स.	सीएसआर परियोजना का नाम	सीएसआर क्षेत्र	योजनाएँ या कार्यक्रम		राशि खर्च व्यय (लाख रुपये में) रकम (बजट) योजना या कार्यक्रमवार	प्रत्यक्ष खर्च व्यय परियोजनाओं पर या कार्यक्रमों के साथ शामिल है ओवरहेड्स	संचयी व्यय तक रिपोर्टिंग अवधि	विवरण क्रियान्वयन आढ़त
1	दोपहर भोजन की योजना	शिक्षा	स्थान	संगारेड्डी जिला, तेलंगाना राज्य और विशाखापटनम जिला, आंध्र प्रदेश राज्य	160.50	151. 89	151. 89	अक्षयपात्र फाउंडेशन
2	हेल्थकेयर नलगोंडा	स्वास्थ्य	अन्य	नलगोंडा जिला, तेलंगाना राज्य	26.95	16.21	16.21	हेल्पएज इंडिया
3	हेल्थकेयर विशाखा पट्टनम	स्वास्थ्य	स्थानीय	विशाखा पट्टनम जिला, आंध्र-प्रदेश राज्य	33.84	16.85	16.85	हेल्पएज इंडिया
4	संरक्षित पीने का पानी	स्वच्छ पीने का पानी	अन्य	पिपलपहद, नारायणपुर और जनगांव गांवों में नलगोंडा ज़िला तेलंगाना राज्य	5.40	6.30	6.30	नंदी नींव
5	गाँव अंगीकरण क्यासारम	ग्रामीण विकास	स्थानीय	क्यासारम गांव संगारेड्डी जिला,तेलंगाना राज्य	80.00	51.34	51.34	सीधा
6	गाँव अंगीकरण गोंडुपलेम	ग्रामीण विकास	स्थानीय	गोंडुपलेम, विशाखा पट्टनम जिला , आंध्र-प्रदेश	80.00	58.4	58.42	सीधा

क्र. स.	सीएसआर परियोजना का नाम	सीएसआर क्षेत्र	योजनाएँ या कार्यक्रम		राशि खर्च व्यय (लाख रुपये में) रकम (बजट) योजना या कार्यक्रमवार	प्रत्यक्ष खर्च व्यय परियोजनाओं पर या कार्यक्रमों के साथ शामिल है ओवरहेड्स	संचयी व्यय तक रिपोर्टिंग अवधि	विवरण क्रियान्वयन आढ़त
				राज्य				
7	सरकारी पाठशालओ के लिए फर्नीचर नलगोंडा जिला	शिक्षा	अन्य	तेलंगाना राज्य के नलगोंडा और सूर्यापेट जिले के पांच मंडल	20.00	9.75	9.75	केंद्रीय जेल, चंचलगुडा, हैदराबाद
8	अंगीकरण हैदराबाद और अमरावती	कौशल विकास	स्थानीय	हैदराबाद, तेलंगाना राज्य	350.00	185.24	185.24	सीधा
9	बेरोजगार युवाओं के लिए कौशल विकास	कौशल विकास	अन्य	आई आई एस सी, चित्रादुर्ग कैम्पस, कर्नाटक	100.00	90.00	90.00	आईआईएससी, बेंगलुरू
10	तेलंगाना के नलगोंडा, रंगारेड्डी जिलों, में सरकारी पाठशालओं में स्वच्छता शौचालयों के लिए पानी की सुविधा का प्रावधान करना	स्वच्छता	स्थानीय	संगारेड्डी, नलगोंडा, रंगारेड्डी जिले, तेलंगाना	16.43	16.43	16.43	तेलंगाना सर्व शिक्षा अभियान
11	आंध्र प्रदेश में सरकारी पाठशालओं के शौचालयों में पानी की सुविधा का प्रावधान करना	स्वच्छता	स्थानीय	विशाखापट्टनम जिला, आंध्र-प्रदेश राज्य	4.20	4.20	4.20	आंध्र-प्रदेश सर्व शिक्षा अभियान

अध्याय-II
अनुसन्धान का रीतिविधान

संकल्पनात्मक रूपरेखा

साहित्य में नैगमिक सामाजिक उत्तरदायित्व सबसे प्रमुख संकल्पनाओं में से एक है। संक्षेप में, यह स्टेकधारकों पर कार्य-व्यवहारों की सकारात्मक छाप सूचित करती है। इस संकल्पना पर रचित साहित्य के बढ़ते परिमाण के बावजूद, सी एस आर को मापना समस्या बना ही हुआ है। यह साहित्य नैगमिक सामाजिक उत्तरदायित्व को मापने की अनेक रीतियां बताता है, फिर भी उन सभी रीतियों की अपनी कोई न कोई सीमा है। इस प्रस्ताव का उद्देश्य है सी एस आर का विश्वसनीय पैमाना उपलब्ध कराना, जिससे विभिन्न स्टेकधारकों को किसी कार्य-व्यवहार के उत्तरदायित्व पता चल सकें।

सी एस आर हाथ में लेने और उन्हें अपने कारोबार में समन्वित करने में भारत में कम्पनियां पर्याप्त अग्र सक्रिय रही हैं। कम्पनी अधिनियम, 2013 ने अपनी परिधि में आने वाली कम्पनियों के लिए यह आवश्यक कर दिया है कि वे अधिनियम में यथा परिभाषित निर्धारित रकम खर्च करें। बीडीएल ऐसी ही कम्पनियों में से एक है, जो कम्पनी अधिनियम, 2013 की धारा 135 के मानदण्डों का अनुपालन कर रहा है।

प्रभाव का मूल्यांकन / सी एस आर का अंकेक्षण

प्रभाव का मूल्यांकन सतत प्रक्रिया है। यह सम्भावित और वास्तविक कार्यक्रमों के परिणामों तक पहुँच के लिए महत्वपूर्ण साधन है। यह सी एस आर हाथ बँटावन के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों के प्रसंगोचित साक्ष्य भी प्रस्तुत करता है।

सी एस आर मूल्यांकन कार्यक्रम सबसे अच्छे तौर-तरीकों के प्रयोग, ग्राहकों पर संकेन्द्रण और अन्य बाहरी, मूल्यवर्धित परिप्रेक्ष्यों के प्रयोग से संगठनात्मक परिवर्तन और कार्य-निष्पादन में नाटकीय सुधार में सहायक और सुविधाजनक होता है।

बी डी एल ने वर्ष 2016-17 में कुछ खास क्षेत्रों में सी एस आर परियोजनाएं हाथ में ली थीं। उनके प्रभाव का मूल्यांकन आधारभूत सर्वेक्षण रिपोर्टों और स्थानीय समुदाय तथा सरकारी निकायों से प्रस्तुत प्रस्तावों में चिह्नित मसलों पर आधारित है।

अध्ययन का रीति-विधान और सी एस आर प्रभाव के मूल्यांकन के लिए कदम

कम्पनी अधिनियम, 2013 की धारा 135 में कार्यों का मोटा-मोटा खुलासा किया गया है। कार्य-क्षेत्र उन तक सीमित है:

- प्रतिनिधि परिमाण स्वरूप कम से कम 10% लाभार्थियों का सर्वेक्षण किया गया है।
- गुणात्मक आँकड़े जुटाए गए हैं। इसमें परियोजना के विभिन्न स्टेकधारकों को संलग्न करके संकेन्द्रित सामूहिक चर्चा और प्रतिभागितात्मक रीति का प्रयोग किया गया।
- आँकड़े लाभार्थियों से भी जुटाए गए हैं। इसमें अर्ध संरचनात्मक प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्रश्न पृष्ठभूमि, विकास, वर्तमान दशाओं और परियोजना के समग्र कार्यान्वियन पर आधारित हैं।
- परियोजना से सम्बद्ध प्रमुख कर्मचारियों से टेलिफोन पर कई बार चर्चा भी की गई।

जानकारी प्रक्रिया और विश्लेषण

- ➢ डेटा/समाचार की शुद्धिकरण
- ➢ डेटा/समाचार दाखिला और प्रसंस्करण
- ➢ डेटा/समाचार की पटल, सूचक गणना और डेटा/समाचार के पृथक्करण

संग्रह की तारीख:

हितधारकों और संगठन के अधिकारियों के साथ बातचीत

संगठन का नाम	**अधिकारियों से बातचीत**	**तारीख**	**कारण**
बी डी एल	श्री साईं	11.3.2018	आरंभिक बातचीत
बी डी एल	श्री भट्टु श्रीनिवास श्री कृष्ण (टेलीफ़ोनिक चर्चा)	11.3.2018	आरंभिक बातचीत
बी डी एल	श्री डी एस एन मूर्ति, बीडीएल, विशाखापट्टणम	27.3.2018	सी एस आर कार्यकलाप के बारे में बीडीएल, विशाखापट्टनम
नांदी संस्थान	श्रीमती शिवानी बी श्रीमती अनूषा	11.3.2018	नांदी के संचालन आधार को समझना
हेल्प एज इंडिया	श्री रजा मोहम्मद श्री स्टेनली श्री नरेंद्र	11.3.2018	हेल्प एज इंडिया के संचालन को समझना
अक्षयपात्र	श्रीमती रजनी सिन्हा श्री राघवेंद्र	11.3.2018	अक्षयपात्र के संचालन को समझना
सीसीटीवी स्थापना	श्री शंकर, सी आई, कंचनबाग श्री महेश, एस आई, कंचनबाग	7.4.2018	सी सी टी वी कैमरों के संचालन को समझना
स्कूल चल सामग्री	श्री के अर्जुन राव, अधीक्षक जेल और श्री वीरा का स्वामी, प्रशासनिक अफ़सर	10.4.2018	चंचलगुडा सेंट्रल जेल में कैदियों की कौशल विकास पहल को समझना
पाठशाला शौचालय	श्री राजा रत्नम, उप कार्यकारी अभियंता	2.4.2018	पाठशाला शौचालय को समझदारी से संचालन करना-

संगठन का नाम	अधिकारियों से बातचीत	तारीख	कारण
	राज्य परियोजना निदेशक,एसएसए, तेलंगाना, हैदराबाद		तेलंगाना
जीएचएमसी "ई-शौचालय"	श्रीनिवास रेड्डी, उप अभियंता, जीएचएमसी और श्री राहुल, सहायक। अभियंता, इराम वैज्ञानिक समाधान की	2.4.2018	ई-शौचालय, विशाखापट्टणम संचालन को समझना
स्कूल शौचालय	श्री के नागभूषणम, एम.ई.ओ.	2.4.2018	पहल और इसके प्रभाव को समझना।
गाँव अंगीकरण कार्यक्रम	श्रीमती ए जयम्मा, सरपंच, गाँव क्यासारम, मंडल पटानचेरु, राज्य तेलंगाना श्री वी श्रीनिवास, सरपंच, गाँव गोंडुपलेम, मंडल कोटकपुडू, राज्य आंध्र प्रदेश	21.3.2018 27.3.2018	पहल और इसके प्रभाव को समझना।
आईटीआई अपनाना पुराना शहर, हैदराबाद	श्रीमती एस रेणुका, प्रिंसिपल	21.4.2018	महाविद्यालय की कार्य स्थिति जानें और बुनियादी ढांचागत विकास की गतिविधियाँ

गाँव का नाम और सी एस आर सर्वेक्षण कार्य विवरण की तारीख

गाँव दत्तत ग्रहण कार्यक्रम

क्र.सं.	गाँव का नाम	मुलाक़ात की तारीख़
1	क्यासारम	21.3.2018
2	गोंडुपालेम,	27.3.2018

बी डी एल मोबाइल मेडिकेर यूनिट सर्वेक्षण कार्य, चौटुप्पल एम एम यू, यादाद्री जिला

क्र.सं.	गाँव का नाम	मुलाक़ात की तारीख़
1	पलागातु थांडा	15.3.2018
2	वाच्यावाचना थांडा,	15.3.2018
3	गंगामुला थांडा	15.3.2018
4	कोत्तागुड़ेम	15.3.2018

बी डी एल मोबाइल मेडिकेर यूनिट सर्वेक्षण कार्य, नरसीपट्टनम एम एम यू, विशाखापट्टनम जिला

क्र.सं.	गाँव का नाम	मुलाक़ात की तारीख़
1	आयन्ना कॉलोनी	16.3.2018
2	पाकालापडू,	16.3.2018

बी डी एल मध्याह्न भोजन सर्वेक्षण कार्य, हैदराबाद

क्र. सं.	गाँव का नाम	मुलाक़ात की तारीख़
1	पटानचेरु	10.4.2018
2	सुल्तानपूर	16.3.2018
3	गौतमी नगर	10.4.2018
4	गाडीगुडा	10.4.2018
5	शांतिनगर	10.4.2018
6	रुद्रारम	10.4.2018
7	किस्टारेड्डी पेटा	10.4.2018
8	चिटकोलू	10.4.2018

बी डी एल स्कूल फर्नीचर, हैदराबाद और नलगोंडा

क्र.सं.	गाँव/शहर का नाम	दौरे की तारीख़
1	सेंट्रल जेल, चंचलगुडा	7.4.2018
2	चिट्याल्	9.4.2018
3	नार्केटपल्ली	9.4.2018

बीडीएल फ़िल्टर जल संयंत्र सर्वेक्षण कार्य, यादाद्रि जिला

क्र.सं.	गाँव का नाम	दौरे की तारीख़
1	नारायणपुर	23.3.2018
2	जनगाम	23.3.2018
3	पीपहाड्	23.3.2018

शी ई शौचालय, हैदराबाद

क्र.सं.	शहर का नाम	दौरे की तारीख़
1	दिलसुखनगर	5.4.2018
2	पनामा	5.4.2018

तेलंगाना और आंध्र-प्रदेश के विद्यालयों में शौचालयों का रखरखाव और पानी का प्रावधान

क्र.सं.	**गाँव का नाम**	**मुलाक़ात की तारीख़**
आंध्र-प्रदेश		
1	मधुरा मामिडी	28.3.2018
2	कर्निका लन्का	28.3.2018
3	बुरुगु वीधि	28.3.2018
4	आराम पाड्	28.3.2018
5	उबला गरुवु	28.3.2018
तेलंगाना		
1	बि जे आर नगर	3.4.2018
2	मल्कारम	3.4.2018
3	अरुंधती नगर	3.4.2018
4	शन्तिनगर	7.4.2018
5	राजीव गृहकल्पा	7.4.2018
6	रवि नारायण रेड्डी कॉलोनी	7.4.2018
7	मरिपल्ली	7.4.2018
8	सुल्तानपुर	10.4.2018
9	गौतमी	10.4.2018
10	शन्तिनगर	10.4.2018
11	गंडीगुड़ा	10.4.2018

सीसीटीवी कैमरों की स्थापना

क्र.सं.	**शहर का नाम**	**मुल शेरों की तारीख़**
1	सीसीटीवी कैमरों के स्थापन हैदराबाद	7.4.2018

आई टी आई अंगीकरण पुराना शहर, अपनाना

क्र.सं.	**शहर का नाम**	**दौरे की तारीख़**
1	आई टी आई का दत्तक ग्रहण, पुराना शहर, हैदराबाद	21.4.2018

जानकारी प्रक्रिया और विश्लेषण

- डेटा/समाचार की शुद्धिकरण
- डेटा/समाचार दाखिला और प्रसंस्करण
- डेटा/समाचार की पटल, सूचक गणना और डेटा/समाचार के पृथक्करण

मध्यम साधन उपयोग किया गया

अधिकतम दावेदारों तक पहुंचने के लिए एफ जी डी समय- समय पर आयोजित किया गया था। प्राथमिक समाचार एकत्र करने के लिए प्रश्नावली के विभिन्न स्थापित (सेट) का उपयोग किया गया था। विभिन्न लाभार्थियों स्थापित(सेट) के लिए प्रश्नावली के विभिन्न सेट का इस्तेमाल किया गया था।

क्र. सं.	परियोजना का नाम	प्रश्नावली के सेट	लक्षित समूह
1	पेय-जल की परियोजना	3	नंदी फाउंडेशन अधिकारियों के लिए ऑपरेटर के लिए लाभार्थी के लिए
2	मोबाइल मेडिकेयर इकाई, स्वास्थ्य देखभाल पर परियोजना	3	एच ए आई अधिकारियों के लिए एम एम यू लाभार्थी के लिए डॉक्टर के लिए
3	स्वच्छता और स्वच्छ भारत परियोजना अभियान	3	विभाग के अधिकारियों के लिए शौचालय मालिकों के लिए शौचालय के मालिकों के लिए नहीं
4	मिड डे मील परियोजना	3	प्रधानाचार्य के लिए छात्रों के लिए माँ बाप के लिए
5	नागरिकों की सुरक्षा के लिए सीसीटीवी परियोजना	2	बी डी एल आधिकारी के लिए लाभार्थियों के लिए।
6	कौशल विकास परियोजनाएँ	2	बीडीएल आधिकारी के लिए लाभार्थियों के लिए।
7	ग्रामीण विकास परियोजनाएँ	--	काम के क्षेत्रों के आधार पर

प्रत्येक परियोजना को 5 बिंदु दर्ज़ा पैमाने का उपयोग करके निम्नलिखित मापदंडों में मापा गया था।

आई पी ई दल

डॉ शुलागणा सरकार ,सहायक प्राध्यापिका, आई पी ई

श्री मानवामन रेड्डी, रिसर्च सहायक

अध्याय-III
आँकड़ों का विश्लेषण

क्षेत्र-I: ग्रामीण विकास

परियोजना-1: गाँव गोद लेना

स्थल**:**

1) क्यासारम, पटानचेरु मण्डल, संगारेड्डी ज़िला, तेलंगाणा
2) गोण्डुपाडु, के कोटपाडु मण्डल, विशाखापट्टणम ज़िला

खर्च की गई राशि: क्यासारम: 51.34 लाख रुपये और गोण्डु पालेम: 58.42 लाख रुपये

कार्य की स्थिति: सम्पन्न

i) क्यासारम गाँव

विकास की गतिविधियों की संख्या: 4

- प्राथमिक स्वास्थ्य-रक्षा केन्द्र का निर्माण
- रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र की स्थापना
- सामुदायिक केन्द्र का निर्माण
- घरेलू शौचालयों और विद्यालयों में शौचालयों का निर्माण

गाँव की भौगोलिक रूपरेखा:

क्यासारम गाँव भारत में तेलंगाणा के संगारेड्डी ज़िले के पटानचेरु मण्डल में स्थित है। यह गाँव मण्डल मुख्यालय पटानचेरु से 11 किलो मीटर दूर है। संगारेड्डी इसका ज़िला मुख्यालय है। इससे सबसे निकटवर्ती शहर लगभग 20 किलो मीटर दूर है। गाँव का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 788 हेक्टेयर है। क्यासारम की कुल जनसंख्या 2,752 है। क्यासारम गाँव में कुल 669 घर हैं।

क्यासारम के निकटवर्ती गाँव: रामेश्वर बंडा**,** इन्द्रेशम**,** इनोल**,** बचुगुड़ा**,** पाशा मैलारम्**,** नन्दीगाँव**,** पाटि घनपुर**,** कर्दनुर**,** पोचारम**,** रेण्डल गड्डा और पटेल गुड़ा।

जनगणना 2011

विवरण	कुल	पुरुष	महिला
कुल मकानों की संख्या	**669**	**--**	**669**
जनसंख्या	**2752**	**1420**	**1332**
बच्चा **(**०**-6** साल**)**	**242**	**179**	**163**
अनुसूचित जाति	**669**	**461**	**338**
अनुसूचीत जनजाति	**10**	**07**	**03**
साक्षरता	**62.99%**	**74.38%**	**40.90%**
कुल श्रमिक	**1251**	**842**	**409**

प्रस्तुत कैसाराम गाँव की कुल जनसंख्या और परिवार

पुरुष	स्त्री	कुल	कुल मकानों की संख्या
1327	**1261**	**2589**	**517**

ओ सी जन			बी सी जन			एस सी जन			एस टी जन			अल्पसंख्यक		
पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल
238	**207**	**445**	**624**	**615**	**1239**	**305**	**313**	**618**	**13**	**8**	**21**	**148**	**118**	**266**

स्रोत: गाँव के अंगनवाड़ी सर्वेक्षण 2016-17 के अनुसार

क्यासारम गाँव को दत्ततग्रहण के तहत की गई कार्यकलाप

क्यासारम के निकटवर्ती गाँव: रामेश्वर बंडा, इन्द्रेशम, इनोले, बचुगुड़ा, पाशा मैलारम, नन्दीगाँव, पाटि घनपुर, कर्दनुर, पोचारम, रेण्डलगड्डा और पटेलगुड़ा।

श्रीमती हेमलता, अंगनवाड़ी कार्यकर्ता, केन्द्र-I, क्यासारम् से आपसी चर्चा की गई। जुटाई गई सूचना का सार संक्षेप ऊपर दिया गया है। परियोजना का उद्घाटन 10 जून 2017 को सम्पन्न हुआ।

टिप्पणियां एवं निष्कर्ष :

1. देखा गया है कि बीडीएल के बनवाए हुए सामुदायिक केन्द्र का उपयोग किया जा रहा है। सामुदायिक केन्द्र में इक्रिसैट और एशियन पेंट्स लि। 30 महिलाओं के कढ़ाई-कौशल के विकास के लिए प्रशिक्षण कक्षाएं चला रहे हैं। यह केन्द्र लगभग 1500 वर्ग फुट क्षेत्रफल में निर्मित है।

2. लगभग 500 घर रिवर्स ऑस्मोसिस जल सुविधा का लाभ उठा रहे हैं। जल संग्रह के लिए 5,000 लीटर क्षमता की चार सिंटैक्स टंकियों का उपयोग किया जा रहा है। छने हुए पानी के लिए स्टेनलेस स्टील की दो टंकियों का उपयोग किया जा रहा है। संयन्त्र के परिचालन के लिए ग्राम पंचायत ने एक व्यक्ति को नियुक्त किया है। रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र के परिचालन व्यय के प्रबन्ध के लिए ग्राम पंचायत बीस लीटर पानी के कनस्तर पर नाममात्र को पाँच रुपये उगाह रही है। ग्रामीणों के उपयोग के लिए प्रत्येक संयन्त्र से रिवर्स ऑस्मोसिस जल लेने को चार नल लगाए गए हैं। संयन्त्र प्रति घण्टा लगभग 2,000 लीटर पानी को शुद्ध करता है। संयन्त्र से जल के दैनिक उपयोग की मात्रा दो से तीन हजार लीटर है। संयन्त्र सुबह सात बजे से रात दस बजे तक चालू रहता है।

3. बीडीएल ने गाँव गोद लेने के कार्यक्रम के अन्तर्गत 50 घरों में शौचालय बनवाए हैं। देखा गया है कि शौचालय की सुविधा केवल कुछ ही घरों में (दस-पन्द्रह) नहीं रह गई है। अधिकांश ग्रामीणों ने दिसा-मैदान बन्द कर दिया है। वे शौचालय का उपयोग कर रहे हैं। उन्हें इससे होने वाले स्वास्थ्य-लाभों की जानकारी है।

4. नवनिर्मित प्राथमिक स्वास्थ्य-रक्षा केन्द्र में एक मण्डप, तीन कमरे और दो शौचालय हैं। इसमें स्वास्थ्य-रक्षा गतिविधियां अभी प्रारम्भ होनी शेष हैं।

5. ग्रामीणों ने बीडीएल की गाँव गोद लेने और विकासपरक निसादा पहलकदमी की जी भरके सराहना की है।

पणधारकों से आपसी चर्चा :

आपसी चर्चा-1

श्रीमती ए. जयम्मा, सरपंच, क्यासारम से साक्षात्कार:

दिनांक और समय: 21-3-2018 को दोपहर 12:00 बजे

स्थान: क्यासारम

श्रीमती ए.जयम्मा ने क्यासारम गाँव में बीडीएल निसादा अंगीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत हाथ में ली गई बीडीएल निसादा परियोजनाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने प्राथमिक स्वास्थ्य-रक्षा केन्द्र, सामुदायिक भवन, घरेलू शौचालयों और रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र का विशेष उल्लेख किया। बीडीएल ने सामुदायिक केन्द्र के निर्माण पर लगभग 38 लाख रुपये खर्च किए हैं। दस लाख रुपये प्राथमिक स्वास्थ्य-रक्षा केन्द्र पर और 15 लाख रुपये रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्रकी स्थापना पर खर्च किए हैं। बीडीएल ने ही 50 घरों में शौचालय भी बनवाए हैं।

नवनिर्मित सामुदायिक मण्डप – महिलाओं के लिए कढ़ाई प्रशिक्षण की पहल

उन्होंने बताया कि विकास की इन सभी गतिविधियों से गाँववासियों को भारी लाभ हुआ है। गरीब शादी-मिजवानी आदि समारोह सामुदायिक मण्डप में करते हैं, जिसे ग्राम पंचायत नाममात्र के भाड़े पर देती है। सामुदायिक केन्द्र का उपयोग महिलाओं के प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में भी किया जाता है। यहाँ उनके सिलाई-कढ़ाई आदि कौशल का विकास किया जाता है। फ़िलहाल इक्रिसैट और एशियन पेंट्स लि। कौशल विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत यहाँ 30 महिलाओं के लिए कढ़ाई प्रशिक्षण की कक्षाएं चला रहे हैं।

स्वास्थ्य-रक्षा गतिविधियों का आयोजन पहले ग्राम पंचायत कार्यालय में किया जाता था। बाद में इनका आयोजन विद्यालय भवन में किया जाने लगा। विद्यालय प्रशासन की ओर से सहकार की कमी के कारण विद्यालय परिसर में स्वास्थ्य रक्षा सेवाएं दे पाना सुविधाजनक न रह गया था। नवनिर्मित स्वास्थ्य केन्द्र के भवन से स्वास्थ्य-रक्षा केन्द्र की गतिविधियों का श्री गणेश किया जाना अभी शेष है। इसमें एक मण्डप, तीन कमरे और दो शौचालय हैं। यह केन्द्र ग्रामवासियों के लिए और विशेष रूप से गर्भवती महिलाओं के लिए सुविधाजनक है।

श्री वी. उदय भास्कर, अ.प्र.नि. बीडीएल के हाथों क्यासारम गाँव में फलक का अनावरण

गाँव पहले पीने के पानी की कठिनाई से जूझ रहा था। गाँववासी ग्राम पंचायत की ओर से पहुँचाया जाने वाला नलकूप का जल पीते थे। वह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक था। इससे पेचिस, टॉयफ़ायड, विषम ज्वर, सर्दी-खाँसी जैसे रोग हो जाते थे। रिवर्स ऑस्मोसिस संयन्त्र की स्थापना के बाद इन रोगों की रोक-थाम हुई है। कुछ गाँव वाले पहले रिवर्स ऑस्मोसिस जल आयुध निर्माणी से दस रुपये में बीस लीटर की दर से खरीद लाते थे। इसके लिए उन्हें गाँव से दो किलोमीटर दूर जाना पड़ता था। उधर बहुतेरे गाँव वालों ने ग्राम पंचायत से पहुँचाया जाने वाला पानी पीना जारी रखा था। इससे घातक जलजन्य रोगों की आशंका बनी रहती थी। बीडीएल रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र से प्राप्त पानी का लाभ लगभग 500 घर उठा रहे हैं। ग्राम पंचायत इस बीस लीटर पानी के लिए नाममात्र पाँच रुपये लेती है। वह भी इसलिए कि संयन्त्र का परिचालन खर्च निकल आए। संयन्त्र सुबह सात बजे से दस बजे तक और शाम पाँच से आठ बजे तक काम करता है। यह प्रति दिन औसतन तीन से चार हजार लीटर पानी की आपूर्ति करता है। गरमियों में पानी की खपत बढ़ जाती है। ग्राम पंचायत ने संयन्त्र की देख-रेख के लिए एक सहायक नियुक्त कर दिया है।

श्री वी.उदय भास्कर, अ.प्र.नि., बीडीएल के हाथों से गाँववासियों को पीने के पानी का वितरण

उन्होंने यह भी कहा कि बीडीएल ने 50 घरों में अलग-अलग शौचालय बनवाए हैं। ग्राम पंचायत की टीम ने ऐसे लाभ ग्राहियों की पहचान की थी, जिनके यहाँ शौचालय नहीं थे। इस प्रयोजन से चुने गए गाँववासियों की सूची बीडीएल को वर्ष 2016-17 में सौंपी गई थी।

आपसी चर्चा-2:

बीडीएल से स्वतन्त्र घरेलू शौचालय की लाभग्राही श्रीमती मलगल्ला शान्तम्मा से बातचीत

दिनांक और समय: 21-3-2018, दोपहर बाद 12:45 बजे

स्थान: क्यासारम

बीडीएल से स्वतन्त्र घरेलू शौचालय की लाभग्राही श्रीमती मलगल्ला शान्तम्मा, क्यासारम

श्रीमती मलगल्ला शान्तम्मा क्यासारम् गाँव की वासी हैं। उनकी अवस्था 50 वर्ष है। श्रीमती शान्तम्मा और उनके पति श्री सैमसन छोटे-से घर में रहते हैं। उन्होंने बातचीत में बताया कि बीडीएल ने उनके परिवार के लिए शौचालय मुफ़्त बनवाया है। उनके पास इतना पैसा न था कि वे अपने लिए अलग घरेलू शौचालय बनवा लेते। उनकी आय बहुत कम है। इससे उनके परिवार को दिसा-मैदान के लिए घर से किलो मीटर भर दूर जाना पड़ता था। ग्राम पंचायत ने उन्हें बीडीएल निसादा अंगीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत स्वतन्त्र घरेलू शौचालय के लाभार्थी के रूप में चुना। उन्होंने बीडीएल की शौचालय-निर्माण की पहल की खुले मन से सराहना की। उन्होंने यह भी बताया कि शौचालय का निर्माण बहुत अच्छी सामग्री से किया गया है। शौचालय सात ही दिन में बना दिया गया। इन दिनों उनका परिवार पर्याप्त पानी समेत शौचालय की सुविधा का लाभ उठा रहा है।

आपसी चर्चा-3

बीडीएल से स्वतन्त्र घरेलू शौचालय के लाभग्राही श्री बुचिगारि शंकरय्या से आपसी बातचीत

दिनांक और समय: 21-3-2018, दोपहर बाद 1:00 बजे

स्थान: क्यासारम

श्री बुचिगारि शंकरय्या क्यासारम गाँव के वासी हैं। उनकी अवस्था 60 वर्ष है। उनके परिवार में छह सदस्य हैं। उन्होंने बताया कि बीडीएल ने उनके परिवार के लिए शौचालय मुफ़्त बनवाया है। शौचालय की सुविधा मिलने से पहले उनका पूरा का पूरा परिवार दिसा-मैदान के लिए जाता था। परिवार का मुख्य व्यवसाय है खेती-बाड़ी। उनकी आय बहुत कम है। इससे वे शौचालय नहीं बनवा सकते थे। ग्राम पंचायत ने घर-घर सर्वेक्षण किया और

ऐसे घरों को चीन्हा, जिनमें शौचालय नहीं थे। बीडीएल के स्वतन्त्र घरेलू शौचालय कार्यक्रम के अन्तर्गत शंकरय्या परिवार भी लाभार्थी था। बीडीएल ने उनके परिवार के लिए शौचालय दस ही दिन में बनवा दिया। उन्होंने इस सहृदय प्रयास के लिए बीडीएल का आभार व्यक्त किया।

आपसी चर्चा-4

श्रीमती एम.उमा, ग्राम संगठन सहायिका से बातचीत

दिनांक और समय: 21-3-2018, दोपहर बाद 12:30 बजे

स्थान: क्यासारम

श्रीमती एम.उमा, ग्राम संगठन सहायिका, प्रभारी (ड्वाकरा समूह) ने कहा कि बीडीएल ने ग्रामीणों के लिए सामुदायिक मण्डप वर्ष भर पहले ही बनवा दिया था। उसका उद्घाटन छह महीने पहले किया गया है। इन दिनों वह इक्रिसैट और एशियन पेंट्स लि. के सहयोग से महिला समूहों के लिए कढ़ाई की कक्षाएं चला रही हैं। सिर पर छत न होने के कारण महिलाओं के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण कक्षाएं चलाना पहले कठिन था। उनकी योजना है कि भविष्य में 30 महिलाओं के समूह के लिए सिलाई की प्रशिक्षण कक्षाएं चलाएं।

उन्होंने यह भी बताया कि बीडीएल ने गाँव में प्राथमिक स्वास्थ्य-रक्षा केन्द्र बनवाया है। उनके यहाँ पहले स्थायी स्वास्थ्य-रक्षा केन्द्र न था। स्वास्थ्य-रक्षा सम्बन्धी गतिविधियों का आयोजन ग्राम पंचायत और विद्यालय भवन में किया जाता था। लगभग 50 गर्भवती महिलाएं और बच्चे (0-5) स्वास्थ्य की जाँच, टीके लगवाने और टॉनिक आदि लेने के लिए नियमित रूप से केन्द्र में आते हैं। औसतन लगभग 30 गाँववासी दिन प्रति दिन के सलाह-मशवरे के लिए स्वास्थ्य-रक्षा केन्द्र में आते हैं, जिसकी सुविधा पन्द्रह दिन में एक बार ही मिलती है। विद्यालय ने स्वास्थ्य-रक्षा केन्द्र के लिए एक कमरा भर दिया था। वह अपर्याप्त था। इसलिए कि बच्चों और गर्भवती महिलाओं की जाँच और सलाह-मशवरे के लिए अलग कमरा न था। बीडीएल से स्वास्थ्य-रक्षा केन्द्र की व्यवस्था के बाद ये मामले सुलझ गए हैं।

श्री पिरमनायगम , निदेशक (वित्त), बीडीएल के हाथों प्राथमिक स्वास्थ्य-रक्षा केन्द्र का उद्घाटन

आपसी चर्चा-5

श्रीमती संगीता, ए एन एम, प्राथमिक स्वास्थ्य उप केन्द्र – क्यासारम से बातचीत

फोन पर बातचीत दिनांक 21-3-2018, दोपहर 1:30 बजे बाद

श्रीमती संगीता एएनएम (सहायक नर्स प्रसूति विद्या) पद पर गाँव में पिछले दस वर्ष से काम कर रही हैं। उन्होंने बताया कि बीडीएल ने अपने निसादा ग्राम अंगीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत प्राथमिक स्वास्थ्य-रक्षा केन्द्र का निर्माण वर्ष 2016-17 में कराया था। इससे पहले स्वास्थ्य-रक्षा की गतिविधियों का आयोजन विद्यालय के भवन में पन्द्रह दिन में एक बार किया जाता था। स्वास्थ्य-रक्षा केन्द्र में लगभग 35 गर्भवती महिलाएं, 20 बच्चे और 50 गाँववासी आया करते थे। किसी छोटे-से कमरे में बहुतेरी स्वास्थ्य-रक्षा गतिविधियों का एक साथ आयोजन बड़ा कठिन है। गर्भवती महिलाओं और बच्चों-बूढ़ों के लिए प्रतीक्षा का अलग मण्डप नहीं है। स्वास्थ्य-रक्षा केन्द्र को अभी नवनिर्मित प्राथमिक स्वास्थ्य-रक्षा केन्द्र में स्थानान्तरित किया जाना शेष है। उन्होंने बिजली की सप्लाई और दवा-उपकरणों के भण्डारण के छोटे-छोटे मामले उजागर किए। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि ग्राम पंचायत और बीडीएल इन्हें बहुत जल्दी हल कर देंगे। बीडीएल से उपलब्ध सुविधाएं और बड़ा भवन गाँव में स्वास्थ्य-रक्षा गतिविधियों के सुचारु संचालन में अतीव सहायक होंगे।

आपसी चर्चा-6

श्री यादय्या, सदस्य, ग्राम पंचायत का तीसरा वार्ड, से बातचीत

दिनांक और समय: 21-3-2018, 2:00 बजे

स्थान: क्यासारम

ग्राम पंचायत के तीसरे वार्ड के सदस्य श्री यादय्या ने क्यासारम गाँव में बीडीएल की ओर से निसादा के अन्तर्गत गाँव गोद लेने के कार्यक्रम में की गई पहल को खुले दिल से सराहा। उन्होंने बीडीएल निसादा ग्राम अंगीकरण कार्यक्रम के भाग के रूप में सामुदायिक मण्डप, प्राथमिक स्वास्थ्य-रक्षा केन्द्र, 50 स्वतन्त्र घरेलू शौचालयों और रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र की स्थापना का साभार उल्लेख किया। उन्होंने यह उल्लेख भी किया कि क्यासारम् गाँव बुनियादी तौर पर दूर-दराज का पिछड़ा इलाका है। यहाँ ग्राम पंचायत की आय इतनी कम है कि विकास की गतिविधियों के लिए पर्याप्त पैसा लगा पाना दूभर है। गाँव में पहले न रिवर्स ऑस्मोसिस जल की सुविधा थी न प्राथमिक स्वास्थ्य-रक्षा केन्द्र न सामुदायिक भवन। सीमेंट की सड़कें, गन्दी नालियां और सड़क पर बत्तियां भी न थीं। ग्राम पंचायत और गाँव के गण-मान्य जनों ने ये समस्याएं एमपीडीओ, पटानचेरु को सूचित की थीं। उनके समर्थन से सरपंच और गण-मान्य जनों ने बीडीएल के अधिकारियों से अनुरोध किया कि वे अपने निसादा कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्राम विकास की गतिविधियां प्रारम्भ करें। अन्त में, बीडीएल ने गाँव का अनुरोध स्वीकारा, निसादा की रकम आवंटित की और वर्ष 2016-17 में गाँव गोद लेने का कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न किया।

उन्होंने आगे बताया कि इक्रिसैट और एशियन पेंट्स लि। सामुदायिक केन्द्र में महिला समूहों के लिए कढ़ाई प्रशिक्षण कार्यक्रम चला रहे हैं। गाँववासी शादी-ब्याह, पारिवारिक कार्यक्रमों, पर्वों, बैठकों आदि के लिए सामुदायिक भवन का लाभ उठाने लगे हैं। ग्राम पंचायत सामुदायिक भवन के एक दिन के उपयोग के लिए मात्र

हजार रुपये उगाहती है, जिससे परिचालन और देख-रेख का खर्च निकल आए। गाँववासी रिवर्स ऑस्मोसिस पेयजल का लाभ भी उठा रहे हैं। इससे उनके स्वास्थ्य में भारी सुधार आया है।

बीडीएल के प्रयासों से ग्राम विकास में भारी परिवर्तन आया है। उन्होंने बताया कि गाँव का विकास करना बहुत कठिन था, बल्कि बीडीएल का सहारा न मिला होता तो यह असम्भवप्राय था।

निगमित सामाजिक दायित्व गतिविधि का नाम: भारत डायनामिक्स लिमिटेड का गाँव गोद लेना
ii) गोण्डुपालेम गाँव Gondupalem Village
विकास गतिविधियों की संख्या: 3
1) रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र की स्थापना
2) सामुदायिक केन्द्र का निर्माण
3) 80 घरेलू शौचालयों और विद्यालय में शौचालयों का निर्माण

भौगोलिक रूपरे
गोण्डुपालेम गाँव आन्ध्र प्रदेश के विशाखापट्टणम ज़िले के कोटपाडु मण्डल में स्थित है। यह विशाखापट्टणम ज़िला मुख्यालय से पश्चिम में 32 किलोमीटर दूर है। गोण्डुपालेम किंतदा कोटपाडु से सात किलो मीटर दूर है। किंतदा (दो किलोमीटर), आर्ले (दो किलोमीटर), पैदमपेटा (तीन किलोमीटर), सीमुनपल्ले (चार किलोमीटर) और अलमंदा भीमवरम (चार किलोमीटर) इसके निकटवर्ती गाँव हैं। गोण्डुपालेम गाँव पच्छिम की ओर चोडावरम मण्डल, दक्खिन की ओर सब्बवरम् मण्डल, उत्तर की ओर देवरपल्ले मण्डल और पूरब की ओर चीडिकड मण्डल से घिरा है।

2011की जनगनना 2011

विवरण	कुल	पुरुष	महिलाएं
कुल घर	**777**	**-**	**-**
आबादी	**2,926**	**1441**	**1,485**

बच्चे (0-6 वर्ष)	**344**	**176**	**168**
अनुसूचित जाति	**25**	**16**	**09**
अनुसूचित जनजाति	**15**	**09**	**06**
साक्षरता	**53.45%**	**67.51%**	**39.94%**
कुल कार्यकर्ता	**1,634**	**903**	**731**

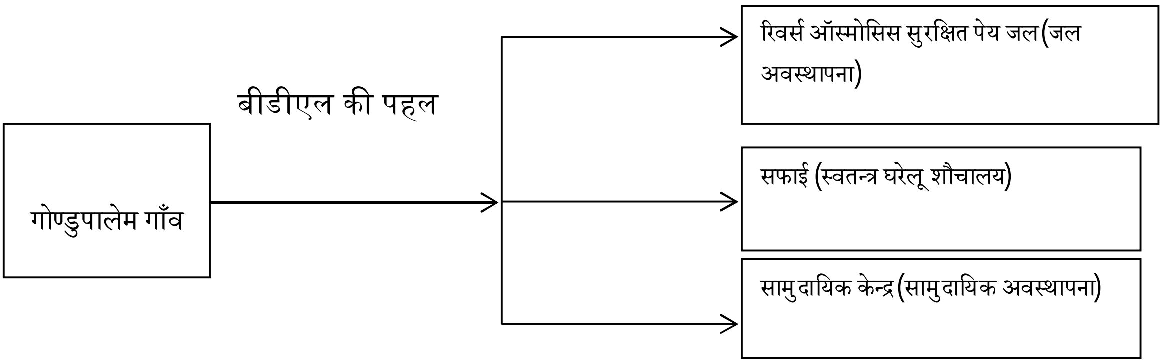

टिप्पणियां एवं निष्कर्ष:

1. सामुदायिक केन्द्र का निर्माण लगभग 2400 वर्ग फुट (45**X**60) के क्षेत्रफल में किया गया है। इसमें एक बड़ा मण्डप, एक दुलहन कक्ष, एक दूलह कक्ष, एक पूजा (कार्यालय) कक्ष और दो शौचालय हैं। ग्राम पंचायत सामुदायिक केन्द्र की चहारदीवारी के निर्माण की योजना बना रही है। सामुदायिक केन्द्र में नलकूप पर मोटर लगाया जा रहा है। बीडीएल के निदेशक (तकनीकी) ने 07 नवम्बर 2017 को सामुदायिक केन्द्र का औपचारिक उद्घाटन किया। इसका निर्माण गाँववासियों की शादी-मिजवानी, सामुदायिक पर्वों और समारोहों के प्रयोजन से किया गया है। आशा की जाती है कि इस सामुदायिक केन्द्र से गाँव के 800 से अधिक घर-बार लाभान्वित होंगे।
2. बीडीएल ने वर्ष 2016-17 में गाँव में रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र स्थापित किया था। अनछने पानी के भण्डारण के लिए 1,000 लीटर क्षमता की दो सिंटैक्स टंकियों का प्रयोग किया गया है। दो हजार लीटर की स्टेनलेस स्टील की टंकी का उपयोग छने-छनाए पानी के भण्डारण के लिए किया जा रहा है। ग्राम पंचायत 20 लीटर पानी के कनस्तर के लिए नाममात्र पाँच रुपये ले रही है, जिससे संयन्त्र का परिचालन खर्च निकल आए। रिवर्स ऑस्मोसिस जल लेने के लिए एक-एक संयन्त्र में चार-चार नल लगाए गए हैं। यह संयन्त्र घंटे भर में 2,000 लीटर पानी को शुद्ध कर देता है। संयन्त्र का उपयोग प्रतिदिन 1,000 से 2,000 लीटर शुद्ध पानी लेने के लिए किया जा रहा है। संयन्त्र सुबह 7।00 से 10।00 बजे तक और शाम में 4।00 से 7।30 बजे तक काम करता है।
3. गाँव गोद लेने के कार्यक्रम के भाग के रूप में बीडीएल ने 80 स्वतन्त्र घरेलू शौचालय बनवाए हैं। देखा गया है कि अब भी कोई 70 घरों में शौचालय की सुविधा नहीं है, क्योंकि ऐसे बहुतेरे घरों में शौचालय

बनाने के लिए पर्याप्त स्थान ही नहीं है। इन शौचालयों के निर्माण के बाद अधिसंख्यक ग्रामीणों ने दिसा-मैदान बन्द कर दिया है। वे घरेलू शौचालय की सुविधा का प्रयोग करने लगे हैं। वे आसपास की साफ-सफाई, स्वच्छ भारत अभियान और सुरक्षित पेय जल आदि के प्रति जागरूक हो गए हैं।

4. गाँववासियों ने गाँव गोद लेने और विकास के निसादा के अन्तर्गत पहल को जी भर सराहा।

गोण्डुपालेम गाँव, के। कोटपाडु मण्डल, विशाखापट्टणम् ज़िला, आन्ध्र प्रदेश में बीडीएल की ओर से स्थापित नवीन रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र

पणधारकों से आपसी चर्चा :

आपसी चर्चा-1

श्री वंटकु श्रीनिवास, सरपंच, गोण्डुपालेम गाँव से साक्षात्कार

दिनांक और समय: 27-3-2018 को दोपहर 12:00 बजे

स्थान: गोण्डुपालेम गाँव

गोण्डुपालेम गाँव में बीडीएल की ओर से नवनिर्मित सामुदायिक केन्द्र

गाँव के सरपंच श्री वी। श्रीनिवास बीडीएल निसादा परियोजनाओं से अत्यन्त सन्तुष्ट हैं। बीडीएल ने गोण्डुपालेम गाँव में इनका शुभारम्भ वर्ष 2016-17 में अपने निसादा ग्राम अंगीकरण कार्यक्रम के भाग के रूप में किया था। उन्होंने सामुदायिक मण्डप, स्वतन्त्र घरेलू शौचालयों और रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र की स्थापना को रेखांकित किया। बीडीएल ने सामुदायिक केन्द्र के निर्माण पर 37 लाख रुपये, 80 स्वतन्त्र घरेलू शौचालयों के निर्माण पर 27.20 लाख रुपये, रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र की स्थापना पर आठ लाख रुपये,

विद्यालय में अविरल जल की व्यवस्था पर 1.35 लाख रुपये और गाँव में बिजली के ट्रांसफ़ार्मर पर 2.35 लाख रुपये खर्च किए हैं। बीडीएल ने गाँव में विकास की गतिविधियां एमपीडीओ सुश्री पूर्णिमा देवी, ज़िलाधीश, श्री रामनायडु, पूर्व विधायक और गाँव के अन्य गणमान्य जनों के नेतृत्व में प्रारम्भ की हैं।

रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र की मशीन

उन्होंने यह भी कहा कि रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र का उद्घाटन श्री वी उदय भास्कर, अ.प्र.नि., बीडीएल ने 23 जुलाई 2016 को किया था। गाँववासी पहले ग्राम पंचायत के नलकूप का पानी पीते थे। उसमें फ्लोराइड की मात्रा बहुत अधिक थी। इससे स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियां उत्पन्न हो जाती थीं। ग्राम पंचायत बीस लीटर पानी के कनस्तर के लिए नाममात्र पाँच रुपये ले रही है, जिससे संयन्त्र का परिचालन व्यय निकल आए।

उन्होंने आगे बताया कि बीडीएल ने गाँव गोद लेने के कार्यक्रम के अन्तर्गत 80 स्वतन्त्र घरेलू शौचालय बनवाए हैं। ग्राम पंचायत की टीम ने ऐसे लाभार्थियों की पहचान की थी, जिनके यहाँ शौचालय की सुविधा नहीं हैं। वर्ष 2016-17 में 80 स्वतन्त्र घरेलू शौचालयों के निर्माण के लिए चुनींदा लाभार्थियों की सूची बीडीएल को सौंपी गई थी।

पहले गाँव की बहुसंख्यक महिलाएं दिसा-मैदान के लिए रात की बाट जोहती थीं। बीडीएल के प्रयासों से दिसा-मैदान के मामलों में कमी आई है, क्योंकि ग्रामीणों के पास अब उनके अपने स्वतन्त्र घरेलू शौचालय हैं। हाँ, 70 घर अब भी ऐसे हैं, जिनके पास शौचालय के निर्माण के लिए जगह की कमी के कारण यह सुविधा नहीं है। बीडीएल के सहयोग से ग्राम पंचायत इस समस्या को हल करने का प्रयत्न कर रही है।

उन्होंने आगे उल्लेख किया कि गाँव गोद लेने के कार्यक्रम के अन्तर्गत गाँव में निर्मित बहुउद्देशीय सामुदायिक मण्डप बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ है। लोग सामुदायिक पर्व, शादी-ब्याह, सांस्कृतिक कार्यक्रम, बैठकें आदि यहीं आयोजित करने लगे हैं। सामुदायिक मण्डप के उपयोग पर ग्राम पंचायत एक दिन के लिए नाममात्र रु। 1,000/- लेती है, जिससे इसका परिचालन खर्च निकल आए। नलकूप पर मोटर लगाने और चहारदीवारी के निर्माण जैसे कुछ बकाया मामलों के कारण सामुदायिक केन्द्र का पूरा-पूरा उपयोग नहीं हो पा रहा है। इन्हें जल्दी हल कर लिया जाएगा।

आपसी चर्चा-2
बीडीएल स्वतन्त्र घरेलू शौचालय लाभार्थी श्रीमती बोडा वरलक्ष्मी से बातचीत
दिनांक और समय: 27-3-2018, 1:00 बजे
स्थान: गोण्डुपालेम

श्रीमती बोडा वरलक्ष्मी, बीडीएल स्वतन्त्र घरेलू शौचालय की लाभार्थी

बातचीत-3
बीडीएल स्वतन्त्र घरेलू शौचालयों की लाभार्थी
श्रीमती झांसी, श्रीमती सुरम्मा, श्रीमती नूका रत्नम और अन्य ग्रामीण महिलाओं से बातचीत
दिनांक और समय: 27-3-2018, दोपहर बाद 2:00 बजे
स्थान: गोण्डुपालेम

श्रीमती पैदी तल्लम्मा, कन्देपल्ली लक्ष्मी, के। नाग सन्तोषी, श्रीमती झांसी, श्रीमती सुरम्मा, श्रीमती नूका रत्नम और अन्य ग्रामीण महिलाओं से आपसी बातचीत में पता चला कि पहले उनके परिवारों के पास इतना पैसा न था कि वे उनके अपने घरेलू शौचालयों का निर्माण करा पाते। उनकी आय बहुत कम थी। परिणामस्वरूप इन परिवारों को घरों से किलोमीटर भर दूर दिसा-मैदान के लिए जाना पड़ता था। गाँव की अधिसंख्यक महिलाएं शौच जाने के लिए रात होने तक बाट जोहती थीं। शौच-स्थल भी झाड़-झंखाड़, कंकड़-पत्थर और साँप-बिच्छू भरा था। रात में विशेष रूप से खतरनाक। श्रीमती नाग सन्तोषी एक लाभार्थी हैं। उन्होंने अपने परिवार को मनाया कि स्वतन्त्र घरेलू शौचालय के लिए ग्राम पंचायत में तुरत आवेदन करें। वह आवेदन स्वीकार लिया गया और उनके परिवार को बीडीएल स्वतन्त्र घरेलू शौचालय निर्माण कार्यक्रम के लिए चुन लिया गया।

बातचीत-4
श्री अबद्दम, रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र परिचालक, से बातचीत
दिनांक एवं समय: 27-3-2018, दोपहर बाद 3:00 बजे **Date & Time:** 27:3:2018, 3:00 **pm**

स्थान: गोण्डुपालेम

श्री अबद्दम् रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र परिचालक के रूप में गाँव में इस संयन्त्र के प्रारम्भ से ही कार्यरत हैं। रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र की स्थापना से पहले गाँववासी ग्राम पंचायत के नलकूप का पानी पीते थे। इससे उन्हें सर्दी-बुखार, टायफायड और अन्य जलजन्य रोगों का सामना करना पड़ता था। रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र की स्थापना के बाद स्वास्थ्य सम्बन्धी इन सभी समस्याओं की रोक-थाम हो रही है। वह पानी की छन्नियां दो दिन में एक बार साफ करते हैं और 30 दिन में एक बार बदल देते हैं। वह रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र एक दिन आड़ दो घण्टे तक चलाते हैं। रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र घण्टे भर में 2,000 लीटर पानी को शुद्ध कर देता है। रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र से प्राप्त पानी को महीने में एक बार परखा जाता है, जिससे सुनिश्चित किया जा सके कि वह पीने योग्य है और गुणवत्ता के पैमानों पर खरा उतरता है।

संतुष्टि

क्र. सं.	मानदंड	शेयरधारकों संतुष्टि के स्तर			
		ग्राम सरपंच	ग्राम पंचायत वार्ड सदस्य और ग्राम वृद्धा	गाँव	ए एन एम, वी ओ ए, आंगनवाड़ी श्रमिक और स्वास्थ्य कर्मचारी
ए) आर ओ जल प्लान्ट की स्थापना					
1	सुरक्षित **पेयजल (**आरवोजल**)** सुविधा तक पहुंचाने में वृद्धि **(24 X 7)**	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
2	सुरक्षित **पेयजल** की खपत में वृद्धि	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
3	स्वास्थ्य पीने के जल पर जागरूकता पैदा करने में पहल और समर्थन के सामुदायिक स्वामित्व में सुरक्षित में वृद्धि	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
4	जैसे टायफाइड**,** कोलेरा**,** डाइसेंटरी**,** मलेरिया जो पानी से उत्पन्न होने**वाली** बीमारियों में कमी**,**	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
बी**)** व्यक्तिगत घरेलू शौचालयों का निर्माण					
1	स्वच्छता सुविधाएं का **बेहतर**	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
2	स्वास्थ्य और स्वच्छता का **बेहतर**	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
3	खुले शौच में कमी	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
4	स्वच्छ पेयजल**,** स्वच्छता और स्वच्छता के बारे में जागरूकता में **वृद्धि**	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
सी**)** सामुदायिक केंद्र					

1	ग्राम विकास में सामुदायिक भागीदारी में **वृद्धि**	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
2	विभिन्न त्योहारों, समारोहों आदि के आयोजन में समृन्नत	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
3	सामुदायिक केंद्र में विभिन्न कौशल विकास गतिविधियों मे वृद्धि	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
4	समाज में रिश्तों का वृद्धि	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
डी) प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र					
1	स्वास्थ्य बुनियादी ढांचा का समृन्नत	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
2	स्वास्थ्य केंद्र का काम में समृन्नत	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
3	स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं की पहुंच में वृद्धि	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
4	विभिन्न स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम / करिक्रमो आदि आयोजन करने में वृद्धि	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
5	चार गतिविधियों की कुल दर्ज़ा उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च

क्षेत्र-IIरक्षा-स्वास्थ्य --

परियोजना-1 रक्षा की सुविधाएं-हेल्पएजइंडिया के माध्य्म से वरिष्ठ नागरिकों के लिए स्वास्थ्य :

स्थल:

1) चौटुप्पल, यादाद्रि ज़िला, तेलंगाणा

2) नरसिपट्नम्, विशाखापट्टणम ज़िला, आन्ध्र प्रदेश

खर्च की गई राशि: चौटुप्पल चलती :(एमएमयू) सेवा इकाई-कित्साफिरती चि-16.21 लाख रुपये और नरसिपट्टणम चलती :सेवा इकाई-फिरती चिकित्सा-16.85 लाख रुपये।

वर्तमान स्थिति: जारी परियोजना

प्रस्तावना

जिसे देश में 90% बड़े-बूढ़ों को जीवित रहने के लिए उजरती काम करना पड़ता हो, वहाँ उनका स्वास्थ्य के बढ़िया उपायों पर पैसा खर्च कर पाना दूर का सपना ही होता है। अनुमान है किसन् 2050 तक अर्थात् सबसे बड़े-बूढ़े अस्सी बरस से ऊपर के लोगों की संख्या 480 लाख तक जाएगी। सबसे बूढ़ों में से (8088 + % उच्च रक्तचाप, दमा, गठिया, हृदय की समस्याओं आदि पुराने रोगों से ग्रस्त हैं।) जहाँ चलती-फिरती स्वास्थ्य रक्षा इकाइयाँ (एम एच यू) उपलब्ध नहीं हैं, वहाँ बड़े-बूढ़ों और उनके समुदाय को हेल्पएज के रक्षा कार्यक्रम के चलते हीन स्वास्थ्य का समाधान उपलब्ध कराना अपेक्षित है। हर एक चलती-फिरती सेवा इकाई में डॉक्टर, भेषजज्ञ और एक सामाजिक कार्यकर्ता होता है। ये चलती-फिरती स्वास्थ्य रक्षा इकाइयाँ शहरी और गाँवों के झुग्गी-झोपड़ियों के अंदरूनी हिस्सों में पहुँचती हैं। वस्तुत: बड़े-बूढ़े दीन और बहुतेरे के स्वास्थ्य से पीडित लोगों को लम्बी कतारों लगने से बच जाते हैं यह अस्पताल के दरवाजे तक पहुँचा देती है।ये अस्पताल उनके बसेरों से दूर-दूर है। उन्हें महीने भर की दवाएं भी मुफ्त मिल जाती हैं। उनके अपने कार्ड में रोगी के उपचार का रिकॉर्ड दर्ज

रहता है। इससे स्वास्थ्य सुधार का विवरण देखने में सहायता मिलता हैं।

ये चलती रक्षा इकाइयाँ विभिन्ना रोगों पर विशेष स्वास्थ्य शिविर लगाती रहती हैं। स्वास्थ्य की जाँच मुफ्त करती हैं। ये चलती-फिरती रक्षा केन्द्र इकाइयाँ जागरूकता उत्पन्न करतीहै। असहाय बड़े-बूढ़ों के विभिन्न रोगों के संबंधी सूचनाओं से सामाजिक कार्यकर्ता जागरूक बनाते हैं। रोगों की रोकथाम के विविध उपाय भी सिखाते हैं। वे उन्हें, जिससे घातक रोगों के फैलाव से बचे रहें। बड़े-बूढ़ों के हित चलती-फिरती सेवा इकाई एशिया की सबसे बडी मान्यता प्राप्त चलती सेवा इकाई है । सेवा इकाई नेटवर्क के चलती फिरती स्वास्थ्य रक्षा इकाइयाँ 1920 सामुदायिक स्थलों में 24 राज्यों में इकाइयाँ फैले हैं। अब तक 23.25 लाख लोगों को चिकित्सा सुविधाएँ दे चुकी हैं।

बीडीएल – हेल्पएज इंडिया की चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई – संचालन विवरण

- बीडीएल और हेल्पएज इंडिया के अधिकारियों ने दिनांक 5.7.2016 को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। यह समझौता ज्ञापन वित्तीय वर्ष 2016-17 से 2018-19 तक वैध है।(चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई-चौटुप्पल).
- बीडीएल और हेल्पएज इंडिया के अधिकारियों ने दिनांक 3.12.2015 को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। यह दिनांक 1.1.2016 से 31.12.2018 तक तीन वर्ष के लिए वैध है।(चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई-नरसीपट्टणम).

कामकाज की विधि :

गरीबी में जीवन बिताने वाले बड़े-बूढ़ों की स्वास्थ्य में सुधार के लिए झोपड़ियों और ग्रामीण क्षेत्रों के वरिष्ठ नागरिकों के स्तर तक रक्षा सेवाएँ पहुँचाने के लिए चलती-फिरती स्वास्थ्य चिकित्सा रक्षा सेवाओं, चिकित्सा उपचार, दवाएं और अन्य स्वास्थ्य रक्षा सेवाएं उपलब्ध कराती हैं। हर चलती-फिरती चिकित्सा इकाई में एक योग्यता प्राप्त डॉक्टर, भेषजज्ञ और सामाजिक कार्यकर्ता के साथ घूमती है। यदि आवश्यक हो तो वह रोगियों को स्थानीय अस्पतालों के हवाले करने में सक्षम होती है। "चलती-फिरती चिकित्सा रक्षा इकाई" कार्यक्रम के अंतर्गत घर पर ही सेवा उपलब्ध कराई जाती है। रोगशय्या में पड़े बड़े-बूढ़ों के लिए फ़िजियो थेरापी, ध्यानयोग काक्षाएँ लगाई जाती है, बेसहारे को सहायता दी जाती है, विकलांगों को शारीरिक संबल दिए जाते हैं और वृद्धावस्था पेंशन पाने के लिए परामर्श तथा सहायता दी जाती है। चलती-फिरती स्वास्थ्य रक्षा इकाई" कार्यक्रम बड़े-बूढ़ों के तन-मन को स्वस्थ्य रखने और स्वास्थ्य के सुधार में सहायक है। हेल्पएज इंडिया अपने पास हितभागी के केस-शीट्स और अन्य रिकॉर्ड रखती है जिसमें हितभागी रिपोर्टें, मेडिसिन कंसप्शन रिपोर्ट, हितभागी की आर्थिक स्थिति और मासिक समिक्षा रिपोर्टें होते हैं। हेल्पएज इंडिया द्वारा संपूर्ण विवरण ई-चिकित्सा सॉफ्टवेयर पर रखा जाता है।

जिन सामान्य रोगों की चिकित्सा की जाती है, वे इस प्रकार हैं :

ऐलर्जी **Allergy**	पेट दर्द **Abdominal Pain**	दमा **Asthma**
कब्ज़ **Constipation**	मोतियाबिंद **Cataract**	सर्दी-खाँसी **Cough and cold**
पुराना बाधक रोग	मधुमेह **Diabetes Mellitus**	अपंगता **Disability**
उच्च रक्तचाप **Hypertension**	हाइपोथायराइड **Hypothyroid**	जोड़ों में सूजन **Osteoarthritis**

अस्थिछिद्रण **Osteoporosis**	जोड़ों का दर्द **Joint pain**	मूत्र वाहिका में संक्रमण

अन्य अस्पतालों के हवाले करने के मामले:

अपस्फीत नीला **Varicose veins**	नाक, कान, गला **ENT**	सीवीए **CVA**
तन्त्रिका विकृति **Neuropathy**	मूत्राशय में पथरी **Renal calculi**	त्वचा के रोग **Dermatology**

रोगियों के पंजीयन का आधार

- रोगी की अवस्था वर्ष या उससे ऊपर हो 55।
- गरीबी की रेखा से नीचे की कोटि का नागरिक हो।
- उपर्युक्त में से किसी रोग से ग्रस्त हो।

2016-17 के दौरान एम एम यूद्वारा उपयोग की जा रही दवाओं की सूची

अल्बेन्डा ज़ोल **(400** मिली ग्राम**)** अमलोडाइपिन बेसिलेट एटिनोल **(5+50** मिलीग्राम**)** अमलो दीपिन **(2.5** और **5** मिलीग्राम**)** एमोक्सिसिलिन और क्लावुनेटेट पोटेशियम **(625** मिलीग्राम**)** एमोक्सी सिलिन **(250** और **500** मिलीग्राम**)** आंद्रे **(10** मिली**)** एस्पिरिन **(75** एमजी**)** एट्रोवास्टैटिन **(10** मिलीग्राम**)** अजीथ्रो माइसिन **(500** मिलीग्राम**)** बेंजाइल बेंजोएट **25% (100** मिलीलीटर**)** बीटा मेथेसोन **0.05% (20** मिलीग्राम**)** बीटा मेथेसोन **0.10% (20** मिलीग्राम**)** बिसा कोडाइल **(5** मिलीग्राम**)**	आइसोसा बाइड डिनिट्रेट **(10** मिली ग्राम**)** लोडोपा**-**कार्बिडोपा **(100** मिली ग्राम**)** लेवोफ्लोक्सासिन **(500** मिलीग्राम**)** ट्उर्टर्पेन्टाइन **(100** मिलीलीटर**)** कीलम्बाई तरलपैराफिन **+** मिल्कॉफ मैग्नेशिया **(170** मिलीलीटर**)** लॉसर्टन **(25** और **50**मिलीग्राम**)** लॉसर्टिन **+** हाइड्रो क्लोराइड मेटफॉर्मिन **(500** मिली ग्राम**)** मेटफॉर्मिन सीनियर **(500** मिली ग्राम**)** मेटोपोलोल **(50** मिलीग्राम**)** मेट्रोनिडाज़ोल **(200** मिलीग्राम**)** नियोस्पोरिन **(5** मिलीग्राम**)** नाइट्रो फुरनशन **(100**मिलीग्राम**)** ओंडान्सेट्रॉन **(8** मिली ग्राम**)**

बुडसोनाइड (100 मैक) कैल्शियम एलिमेंटल (500 मिलीग्राम) + विटामिन डी 3 (250 मिलीग्राम) कार्बि माज़ोल (10मिलीग्राम) सेफिक्सइम (200 मिलीग्राम) सेटरिजिन (10 मिलीग्राम) क्लोरोम्फेनिकोल एप्लिकैप्स (1%) क्लोरोक्विन फॉस्फेट (250 मिली ग्राम) कैनरिन (25 मिलीग्राम) सिप्रोफ्लोक्सासिन (500 एमजी) सिप्रोफ्लोक्सासिन आईकान ड्रॉप (0.03% - 5 मिली लीटर) क्लोट्रिमा ज़ोल मलहम (1% -15 मिलीलीटर) खांसी सिरप (बाल चिकित्सा) - 60 मिली लीटर डेरिफाइल लाइन रिटार्ड (150 और 300 मिलीग्राम) यजेपाम (2 मिलीग्राम) डिस्लोफेनाक जेल (30 मिलीग्राम) डाइसिलोमाइन + पैरासिटामल डायथिल कारबा मेज़िनसाइट्रेट (100 मिलीग्राम) डिगॉक्सिन (0।25 मिलीग्राम) डोमपेरिडोन (10 मिलीग्राम) सूखे एल्यूमिनियम हाइड्रोक्साइड जेल 250 मिलीग्राम + मैग्नीशियम हाइड्रोक्साइड + सक्रिय डिमेथिकॉन 50 मिलीग्राम (एंटासिड) एनालैप्रिल (5 मिलीग्राम) एटोरिकोक्सिब (60 मिलीग्राम)	ओ आर एस (21.8मिलीग्राम) ऑक्सी मेटाज़ोलिननाक की बूंदें पंतप्राज़ोल (40 मिलीग्राम) पैरासिटामोल (500 मिलीग्राम) पैरासिटामोल सस्पेंशन (बालचिकित्सा) डायजेपाम (2 मिलीग्राम) डिस्लोफेनाक जेल (30 मिलीग्राम) डाइसिलोमाइन + पैरासिटामोल डायथिल कारबामेज़िनसाइट्रेट (100मिलीग्राम) डिगॉक्सिन (0।25मिलीग्राम) डोमपेरिडोन (10मिलीग्राम) सूखे एल्यूमिनियम हाइड्रोक्साइड जेल 250 मिलीग्राम + मैग्नीशियम हाइड्रोक्साइड+सक्रियडिमेथिकॉन 50एमजी (एंटासिड) एनालप्रिलिल (5 मिलीग्राम) एटोरिकोक्सिब (60मिलीग्राम) फ्लर्बोप्रोफेन आईड्रॉप (0।03% - 5मिलीलीटर) फ्रूसमाइड (40 मिलीग्राम) ग्लिमाइराइड (1और2मिलीग्राम) ग्लिमाइराइड१मिलीग्राम+मेल्टफॉर्मिन 500 मिलीग्राम सीनियर ग्लिपिजाइड (5मिलीग्राम) फेनीटोइन (100मिलीग्राम) पोविडोन आयोडीन (5%) प्रेडनी सोलोन (5और10मिलीग्राम) प्रिमाक्विन (15मिलीग्राम) प्रोक्लोर पेरिनमालेनेट (5मिलीग्राम)	

फ्लर्बो प्रोफेन आईड्रॉप **(0.03% - 5** मिलीलीटर**)** फ्रूसमाइड **(40** मिलीग्राम**)** ग्लिमाइराइड **(1** और**2** मिलीग्राम**)** ग्लिमाइराइड**1** मिलीग्राम **+** मेल्टफॉर्मिन**500** मिली ग्राम सीनियर ग्लिपिसाइड **(5** मिलीग्राम**)** हाइड्रो क्लॉर्थियाजाइड **(**25 मिलीग्राम**)** इबप्रोफेन **(400**मिलीग्राम**)** आयरन **+** फोलिकएसिड **+** साइनोकोलामिन इसाफुलाहुस्क **(100**मिलीग्राम**)** इसाबाइड५मोनोनीट्रेट **(20**मिलीग्राम**)**	रैबे प्राज़ोलसोडियम **(20**मिलीग्राम**)** रानीटाइडिन **(150**मिलीग्राम**)** रिस्पेरिडोन **(**१**)** एमजी**)** सालबुटामोल **(100**मिलीग्राम**)** सर्ट्रालाइन **(50**मिलीग्राम**)** रजत सल्फाडिआज़िन**+**क्लोरोक्साइडिन **(1% 15** मिलीग्राम**)** थायरोक्साइन **(25, 50** और**100**मैक**)** टिनिडाज़ोल **(500**मिलीग्राम**)** यूनिएंजाइम विटामिन बी कॉम्प्लेक्स विटामिन बी कॉम्प्लेक्स **+** सी विटामिनसी **(500**मिलीग्राम**)**	

चलती-फिरती चिकित्सा परियोजना के अंतर्गत तेलंगाणा में नलगोण्डा ज़िले के 12 गाँव और आन्ध्र प्रदेश में विशाखापट्टणम ज़िले के 23 गाँव हैं। चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई की टीमों की समय-सारणी निम्नलिखित तालिका में दी गई है। समय-सारणी इस प्रकार बनाई गई है कि आसपास के दो से पाँच गाँव का दौरा एक दिन में संपन्न हो जाए।

वर्ष 2016-17 के लिए चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई के अंतर्गत लाभार्थियों की स्थिति

वर्ष 2016-17 के लिए हेल्पएज इंडिया की चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई कार्यक्रम के अंतर्गत पूरे 35 गाँव हैं इनमें 4000 लाभार्थियों को चिकित्सा सुविधाएँ दी गईं।

हेल्पएज इंडिया के चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई से जुड़े प्रत्येक कर्मचारी

- **सामाजिक रक्षा अधिकारी-1**
- **चिकित्सक डॉक्टर-1**
- **भेषजज्ञ-1**
- **ड्राइवर-1**

हेल्पएज इंडिया में परियोजना कार्यान्वयन समिति के सदस्य :

श्री कलाधर – सामाजिक रक्षा अधिकारी, चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई – चौटुप्पल, नलगोण्डा.

श्री किरण बाबू- सामाजिक रक्षा अधिकारी, चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई, नरसीपट्टणम.

श्री स्टैनली ओगुरि – परियोजना समन्वयकर्ता

श्री मोहम्मद रज़ा – राज्य कार्यकारी प्रधान – तेलंगाणा राज्य.

श्री मृणाल श्रीकांत लंकापल्ली – प्रबंधक, आन्ध्र प्रदेश.

जनगणना 2011 के अनुसार ग्राम पंचायत की रेखा-चित्र,चौटुप्पल एमएमयू आवृत्त क्षेत्र

1. जनसंख्या

क्र सं	ग्राम पंचायत का नाम	कुल परिवार	जनसंख्या			अनुसूचित जाति जनसंख्या (एस सी)				अनुसूचित जनजाति जनसंख्या			
			कुल जन संख्या	पुरुष	स्त्री	कुल एस सी जनसंख्या	पुरुष	स्त्री	%	कुल एस टी जनसंख्या	पुरुष	स्त्री	%
	नारायणपुर मंडल												
1	नारायणपुर	1820	7927	3832	4095	1077	492	585	13.59	503	171	332	6.35
2	जनगाम	1415	5663	2911	2752	1081	534	547	19.09	2321	1226	1095	40.99
3	मोहम्मदा बाद	288	1173	614	559	171	96	75	14.58	536	285	251	45.69
4	रचाकोंडा	344	1300	682	618	70	35	35	5.38	1182	621	561	90.92
5	सरवैली	1957	8084	4433	3651	1970	1044	926	24.37	143	96	47	1.77
6	कोत्तगुडेम	328	1199	605	594	196	99	97	16.35	0	0	0	0
	चौटुप्पल मंडल												
1	अल्लापूर	147	687	343	344	137	71	66	19.94	0	0	0	0
2	पीपल पैहद	678	2789	1413	1376	448	212	236	16.06	639	328	311	22.91
3	डी नागाराम	1541	6321	3253	3068	821	425	396	12.99	23	11	12	0.36
4	लक्कारम	954	3945	2024	1921	674	339	335	17.08	51	23	28	1.29

ii) कार्य प्रलेखा-चित्र

	ग्राम पंचायत का नाम	कुल श्रमिक	मुख्य श्रमिक	हाशिये श्रमिक
नारायणपुर मंडल				
	नारायणपुर	3544	3175	369
	जनगाम	2761	2320	441
	मोहम्मदाबाद	561	492	69

	रचाकोंडा	769	191	578
	सरवैली	4254	2292	1962
	कोत्तगुडेम	655	578	77
चौटुप्पल मंडल				
	अल्लापूर	370	365	5
	पीपल पहाड़	1421	1067	354
	डीनागाराम	2986	2870	116
	लक्कारम	1799	1713	86

चौटुप्पल एमएमयू आवृत्त क्षेत्र कार्यक्रम

क्र। सं	जिल्ला का नाम	मुक़ाम का नाम	दिन	पारी	समय	ग्राम पंचायत का नाम
1	यादाद्री	नारायणपुर	सोमवार	सुबह	9:15 am to 1:00 pm	नारायणपुर ग्राम पंचायत
2	यादाद्री	जनगण	सोमवार	दोपहर	2:00 pm to 4:30 pm	जनगण ग्राम पंचायत
3	यादाद्री	चंद्रगोनी थांडा	मंगलवार	सुबह	9:15 am to 10:30 am	मोहम्मदाबाद ग्राम पंचायत
4	यादाद्री	वेंकोम्बाई थांडा	मंगलवार	सुबह	10:30 am to 11:15am	नारायणपुर ग्राम पंचायत
5	यादाद्री	दुब्बागुंडला	मंगलवार	सुबह	11:15 am to 11:45am	पिपलपहड ग्राम पंचायत
6	यादाद्री	येनागोंडी थांडा	मंगलवार	सुबह	11:45 am to 12:30pm	पिपल पहड ग्राम पंचायत
7	यादाद्री	अल्लापूर	मंगलवार	दोपहर	12:30 pm to 2:00 pm	अल्लापूर ग्राम पंचायत
8	यादाद्री	पिपलपहद	मंगलवार	सुबह	2:00 pm to 4:45 pm	पिपल पहद ग्राम पंचायत
9	यादाद्री	रचाकोंडा (दो सप्ताह एकबार)	बुधवार	सुबह	9:15 am to 12:00 pm	रचाकोंडा ग्राम पंचायत
10	यादाद्री	मलेरेड्डीगुड़ेम (दो सप्ताह एकबार)	बुधवार	दोपहर	12:30 Pm to 2:00 Pm	मलेरेड्डीगुड़ेम ग्राम पंचायत
11	यादाद्री	नागवरीगुड़ेम (दो सप्ताह एकबार)	बुधवार	सुबह	9:15 am to 11:15 am	सरवैल ग्राम पंचायत

12	यादाद्री	लिंगवारी गुड़ेम (दो सप्ताह एकबार)	बुधवार	सुबह	11:15 am to 12:45pm	सरवैल ग्राम पंचायत
13	यादाद्री	सरवैल	बुधवार	दोपहर	1:00 pm to 4:30 pm	सरवैल ग्राम पंचायत
14	यादाद्री	गंगामुला थांडा	गुरूवार	सुबह	9:15 am to 10:45 am	सरवैल ग्राम पंचायत
15	यादाद्री	पालेगट्टू थांडा	गुरूवार	सुबह	11:00 am to 12:00pm	जनगण ग्राम पंचायत
16	यादाद्री	वाच्याथांडा	गुरूवार	दोपहर	12:15 pm to 1:00 pm	जनगण ग्राम पंचायत
17	यादाद्री	कदपगोंडी थांडा	गुरूवार	दोपहर	1:15 pm to 2:00 pm	जनगण ग्राम पंचायत
18	यादाद्री	कोट्टागुडेम	गुरूवार	सुबह	2:45 pm to 4:30 pm	कोत्तगुडेम ग्राम पंचायत
19	यादाद्री	गोलागुड़ेम (दो सप्ताह एकबार)	शुक्रवार	सुबह	7:30 am to 10:00 am	सरवैल ग्राम पंचायत
20	यादाद्री	मोहम्मदाबाद (दो सप्ताह एकबार)	शुक्रवार	सुबह	10:15 am to 12:15pm	मोहम्मदाबाद ग्राम पंचायत
21	यादाद्री	लक्कारम (दो सप्ताह एकबार)	शुक्रवार	सुबह	1:00 pm to 3:30 pm	लक्कारम ग्राम पंचायत
22	यादाद्री	डी.नागारम (दो सप्ताह एकबार)	शुक्रवार	सुबह	7:30 am to 10:00 am	डी.नागारम ग्रामपंचायत
23	यादाद्री	कोयाला गुडम (दो सप्ताह एकबार)	शुक्रवार	दोपहर	1:00 pm to 3:30 pm	कोयाला गुडम ग्राम पंचायत

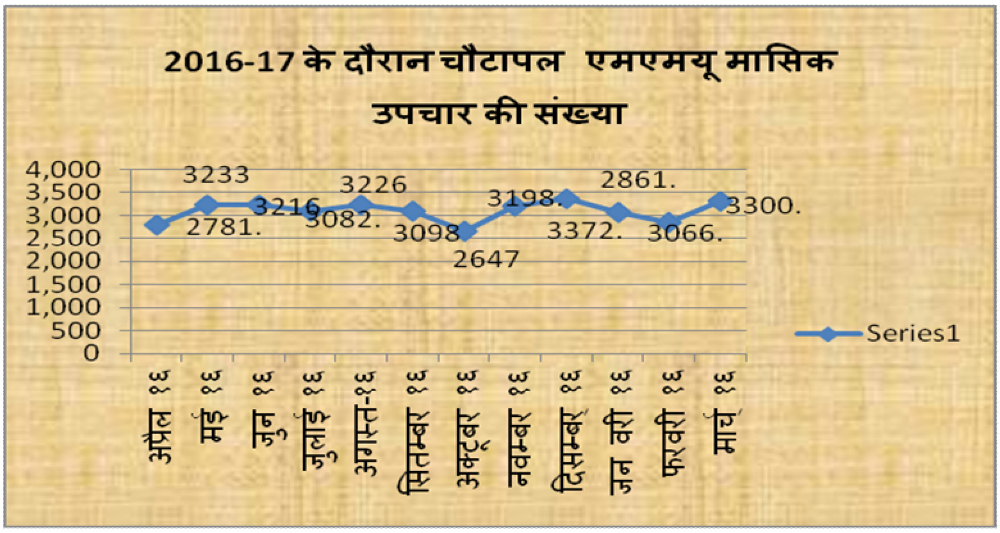
2016-17 के दौरान चौटापल एमएमयू मासिक उपचार की संख्या
4,000
3,500
3,000
2,500
2,000
1,500
1,000
500
0
3233
3216
3226
2781.
3082.
3098
2647
3198.
2861.
3372.
3066.
3300.
Series1
अप्रैल १६
मई १६
जून १६
जुलाई १६
अगस्त-१६
सितम्बर १६
अक्टूबर १६
नवम्बर १६
दिसम्बर १६
जन वरी १७
फरवरी १७
मार्च १७

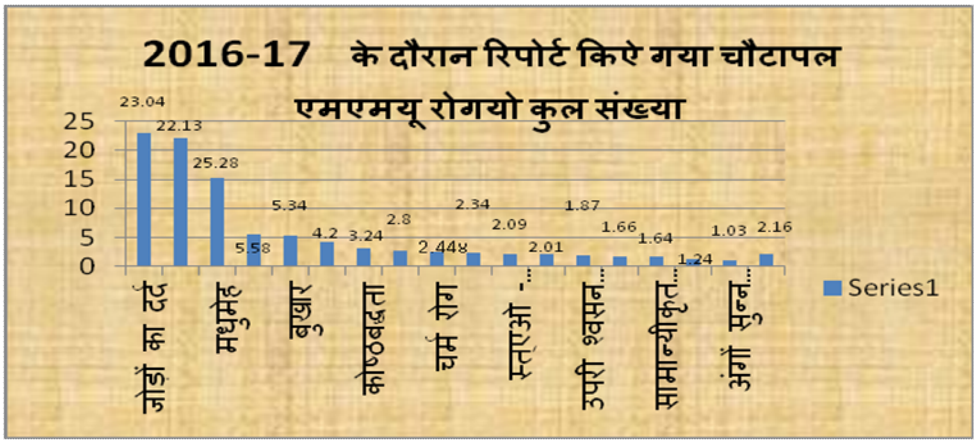
2016-17 के दौरान रिपोर्ट किए गया चौटापल एमएमयू रोगयो कुल संख्या
25
20
15
10
5
0
23.04
22.13
25.28
5.58
5.34
4.2
3.24
2.8
2.448
2.34
2.09
2.01
1.87
1.66
1.64
1.24
1.03
2.16
Series1
जोड़ों का दर्द
मधुमेह
बुखार
कोष्ठबद्धता
चर्म रोग
स्तएओ -...
उपरी श्वसन...
सामान्यीकृत...
अंगों सुन्न...

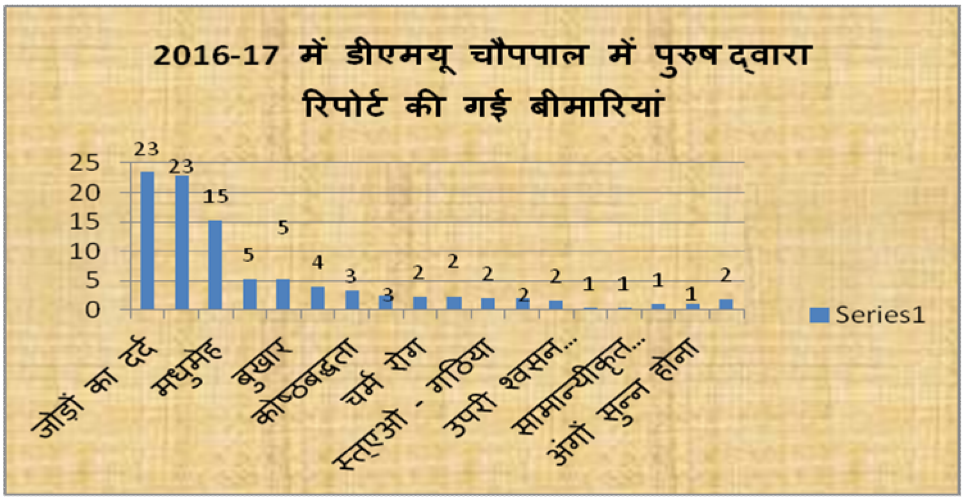
2016-17 में डीएमयू चौपपाल में पुरुष द्वारा रिपोर्ट की गई बीमारियां
25
20
15
10
5
0
23
23
15
5
5
4
3
3
2
2
2
2
2
1
1
1
1
2
Series1
जोड़ों का दर्द
मधुमेह
बुखार
कोष्ठबद्धता
चर्म रोग
स्तएओ - गठिया
उपरी श्वसन...
सामान्यीकृत...
अंगों सुन्न होना

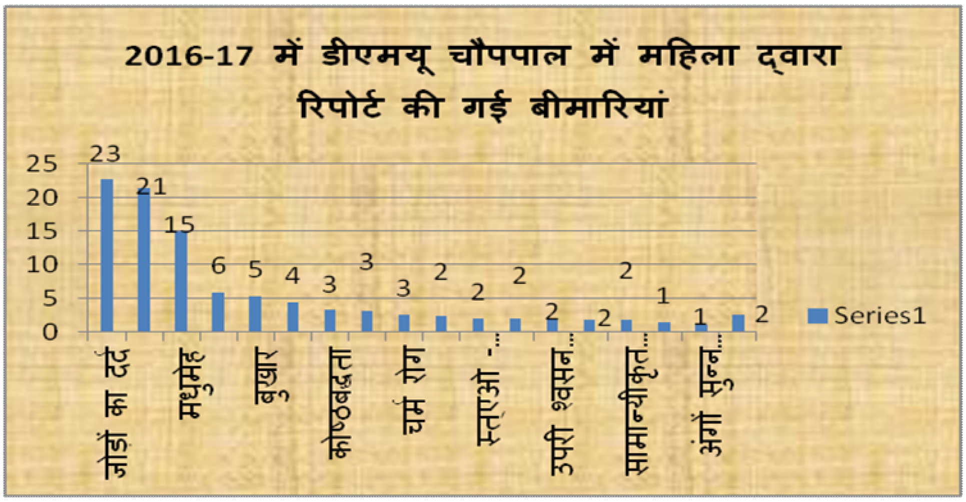

आंकड़े यह स्पष्ट करते हैं कि संयुक्त दर्द, उच्च रक्तचाप और मधुमेह मेलिटस चोटोपपाल एमएमयू में बुजुर्ग लोगों के लिए आम बीमारियां हैं।

प्राथमिक समाचार विश्लेषण

भेंट की तिथि: 15.3.2018

कुल नामांकित लाभार्थियों : लगभग 1400 लोग चौटुप्पल के सभी एमएमयू साइट गांवों के लोग

नियमित रूप से देखे गए लाभार्थियों : सभी एम एम यू साइट गांवों के लगभग 1000 से 1100 लोग

कुल नमूना आकार –एम एम यू चौटुप्पल

क्र सं	**एम एम यू स्थान का नाम**	**नमूने का आकार**
1	गंगामुला थांडा	30
2	पल्ल गुट्टा थांडा	21
3	कोत्तगुडेम	52
	कुल	103

1 एम एम यू सेवा की संतुष्टि स्थिति

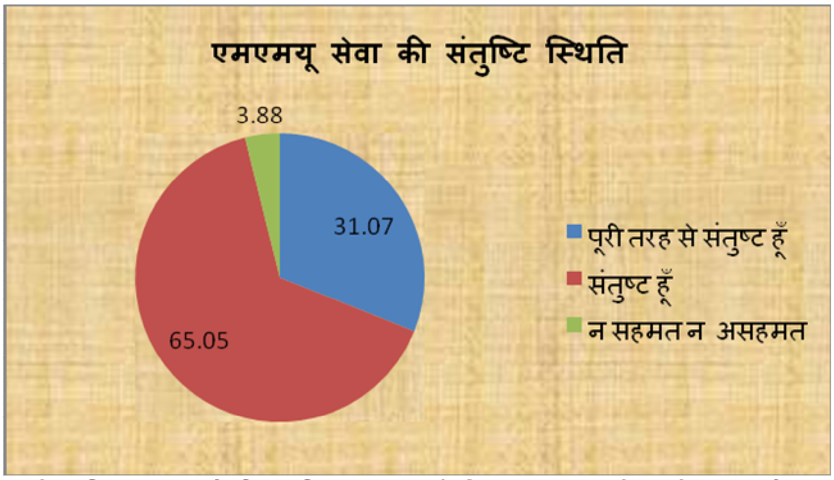

लेखा चित्र स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि अधिकांश बुजुर्ग लोग एमएमयू सेवा से संतुष्ट हैं।

2) 15/3/2018 के अनुसर वर्ग विशिष्ट प्रतिरूप को रिपोर्ट किया गया

मरीजों की कुल संख्या: **103**

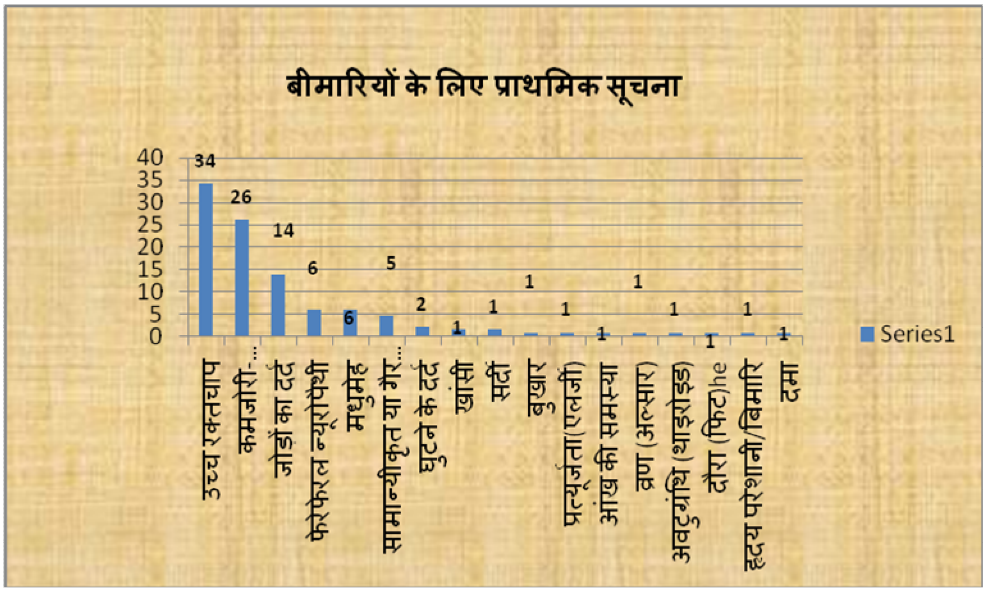

आधार-सामग्री यह स्पष्ट करता है कि संयुक्त दर्द, उच्च रक्तचाप और मधुमेह मेलिटस वृद्ध लोगों के लिए आम बीमारियां हैं। बीमारियों के लिए प्राथमिक सूचना दि गई है।

3) स्वास्थ्य सुधार – एम एम यू सेवा के बाद

मरीजों की कुल संख्या: 103

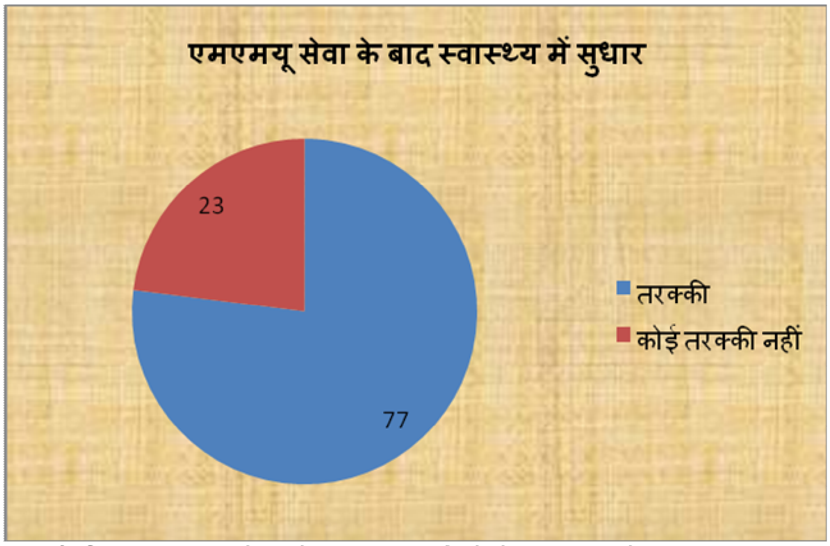

आंकड़ों से पता चलता है कि एम एम यू सेवा के बाद वृद्ध लोगों के स्वास्थ्य में सकारात्मक सुधार हुआ है आरंभ किया गया।

4) एम एम यू गाड़ी की अनुसूची और समय निर्धता

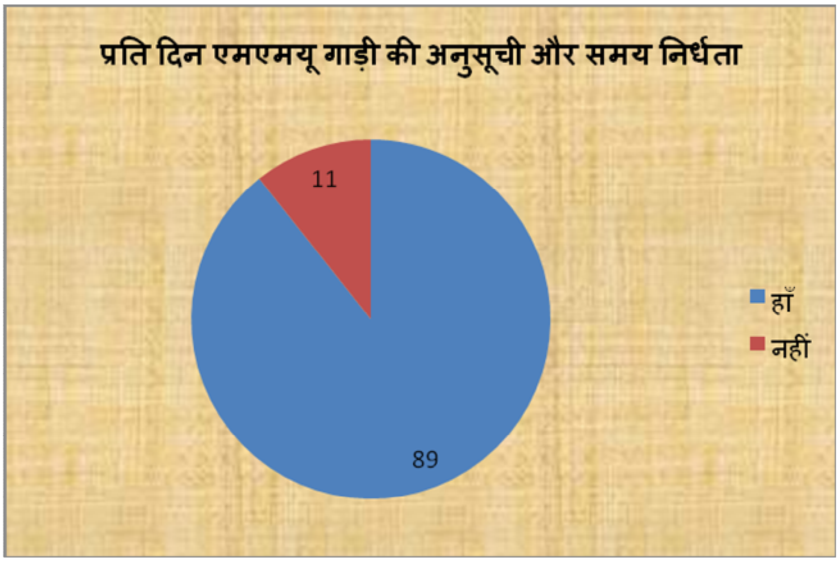

डेटा यह स्पष्ट करता है कि अधिकांश बुजुर्ग लोगों ने कहा कि एम एम यू वैन एम एम यू दिए गए दिन अनुसूची और समय पर सटीक रूप से साइट पर जाता है ।

5) बी डी एल के बारे में जागरूकता

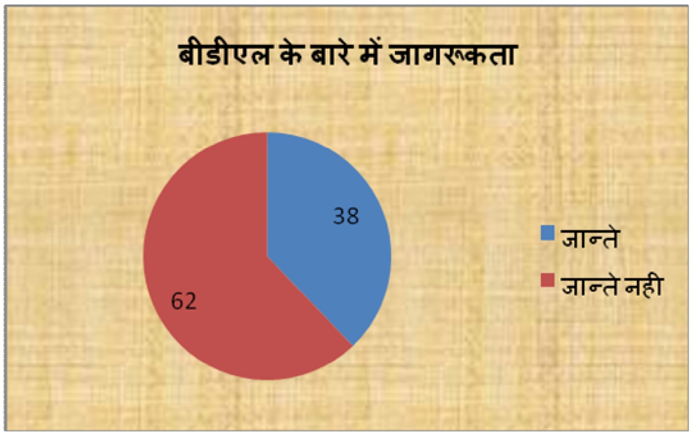

आंकड़ो से पता चलता है कि बुजुर्गों में से अधिकांश लोग बीडीएल के बारे में नहीं जानते हैं।।

क्र सं	प्राचल	संतुष्टि स्तर		
		अत्यधिक संतुष्ट	संतुष्ट	कुछ हद तक संतुष्ट
1	सेवा में दाखिला लेने में आसानी	☑		
2	सभी स्वास्थ्य मामलों का उपचार			☑
3	रोगियों पथी चिकित्सकों की व्यवहार और श्रद्दा	☑		
4	औषधीय मुहैया किया हुआ		☑	
5	सेवा की प्रक्रिया	☑		

चलती-फिरती चिकित्सा इकाई पणधारकों से आपसी चर्चा-डॉक्टर से साक्षात्कार
डॉक्टर का नाम : डॉ युवराज
योग्यता : एम बी बी एस
भेंट की तारीख : 15-3-2018

डॉ युवराजू, एम बी बी एस चलती-सेवा इकाई स्थल डॉक्टर के रूप में चौटुप्पल चलती-फिरती चिकित्सा-सेवा इकाई के लिए डेढ़ वर्ष से कार्य कर रहे हैंफिरती चिकित्सा।उन्होंने बताया कि उनके पास आने वाले 60% रोगी ग्रामीण बड़े बूढ़े होते हैं। वे उच्च रक्तचाप, मधुमेह और जोड़ों के दर्द की चिकित्सा के लिए आते हैं। बूढ़ों को मुफ्त प्राथमिक चिकित्सा और मुफ्त दवाएं दे रही है- हेल्पएज इंडिया– बीडीएल, ऐसे बड़े बुजुर्ग लोगों के लिए जिनकी अवस्था 55 से अधिक है। दूर दराज के इलाकों में ये गाँव स्थित हैं। ग्रामीणों को बुनियादी चिकित्सा किलोमीटर की यात्रा करनी पड़ती थी 15 सुविधाएँ पाने के लिए भी पहले औसतन, फिर वे चाहे आपातकालीन स्थिति में हों या रोगशय्या पर। ऐसे रोगियों के लिए तो यह विकट स्थिति थी। उन्हें प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएँ अब घर बैठे मिल रही हैं। स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की विभिन्न रोगों की दवाएँ भी मुफ्त मिल रही हैं और भाल

भी लगे हाथ हो जा रही है – यथा समय देख। बूढ़े विभिन्न रोगों की – के बीच बड़े 200 से 140 लगभग सेवा इकाई स्थल पर पहुँचते हैं – फिरती चिकित्सा – चिकित्सा के लिए चलती। बूढ़ों को पहले- इन बड़े उच्च रक्तचाप, मधुमेह और जोड़ों के दर्द की दवाओं पर हर महीना रुपये 700/- से 1000/- खरचने पड़ते थे। ये दवाएँ उन्हें अब मुफ्त मिलने लगी हैं। उन्होंने आगे बताया कि चलती सेवा इकाई की चलती-फिरती चिकित्सा वाहन आसपास के इलाकों में "पूर्व निर्धारित यात्रा चक्र योजना" के अनुसार घूमता है। गाँववासी इसी योजना के अनुसार उसके पास पहुँच जाते हैं, जब वह उनके क्षेत्र में आता है। इस चलती-फिरती सेवा से 90% से अधिक बड़े-बूढ़े सेवा इकाई की चिकित्सा से अत्यंत संतुष्ट हैं।

चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी से साक्षात्कार

नाम : कलाधर

भेंट की तारीख : 15-3-2018

श्री कलाधर सामाजिक सुरक्षा अधिकारी के रूप में चौटुप्पल में चलती– फिरती चिकित्सा सेवा इकाई के लिए – पिछले दो वर्ष से कार्य कर रहे हैं। वह चलती-फिरती चौटुप्पल चिकित्सा सेवा इकाई के संपूर्ण परिचालन पर नियंत्रण रखते और उसका मॉनिटरन करते हैं। उन्होंने चौटुप्पल चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई के स्थलों के ब्योरों और समय सारणियों के बारे में बहुमूल्य सूचनाएँ दीं। उन्होंने बताया कि अधीनस्थ ग्राम में बड़े-बूढ़ों के आम रोग कौन-कौन से हैं। उन्होंने रोगशय्या पर पड़े लोगों की विशेष चिकित्सा, छाया स्वास्थ्य शिविरों, स्वास्थ्य जागरूकता शिविरों, लाभार्थियों के दौनिक रिकॉर्ड, नए रोगियों के पंजीकरण का आधार आदि के बारे में सविस्तार प्रकाश डाला। वह भेषजज्ञ की सहायता से प्रतिदिन आने वाले रोगियों की संख्या, ग्राम अनुसार अलग हुए रोगियों के ब्योरे, विभिन्न रोग और उनके निदान की रिपोर्टें, विभिन्न दवाएं औषधिया/ उनके स्टॉक के विवरण और, पुन: क्रय आदेश स्टॉक के ब्योरे, अन्य अस्पतालों के हवाले किए गए रोगियों के ब्योरे आदि स्थल विवरण रिपोर्ट करते हैं। बवासीर, क्षय रोग, मलेरिया, टायफायड और मोतिया बिंद जैसी स्वास्थ्य की भीषण समस्याओं ड़ोस के सरकारी और निजी अस्पतालों में रोगों के मामले में वह रोगियों के पास को हवाले करने में भी सहायक हैं।

लाभार्थी-1

लाभार्थी का नाम :श्री बिच्छा	अवस्था : 55 वर्ष
व्यवसाय : कृषि	
गाँव का नाम : गंगामुला टांडा	
रोग : रक्तचाप, अल्सर	
भेंट की तारीख : 15-3-2018	

श्री बिच्छा ने बेसहारा बड़े-बूढ़ों की औषधीय चिकित्सा के मामले में हेल्पएज इंडिया बीडीएल-सेवा इकाई इस पहल को खुले मन से सराहा। उन्होंने बताया कि बीडीएल और हेल्पएज इंडिया गाँव में पिछले पाँच साल से चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई से सेवा दे रहे हैं। चलती-फिरती सेवा चिकित्सा चलता-फिरता दवाखाना सेवा इकाईयों में समय-सारणी के अनुसार प्रत्येक गुरुवार को सुबह 9 बजे 30 गाँवों में चिकित्सा दी गई। बीडीएल हेल्पएज इंडिया की ओर से प्रारंभ की गई इस सेवा से पहले गाँववासी प्राथमिक औषधीय उपचार के लिए चिकित्सालयों में जाते थे। इसके लिए उन्हें पाँच किलोमीटर की श्रमसाध्य यात्रा करनी पड़ती थी। आपात्कालीन स्थिति में चिकित्सा के लिए हैदराबाद में चौटुप्पल तक जाते थे। चिकित्सा सुविधा पाने में, वह

रात में भी, हैदराबाद में चौटुप्पल या परिवहन के साधन का अभाव राह का प्रमुख रोड़ा था। उन्होंने आगे कहा कि गाँव के अधिसंख्या बड़े-बूढ़े या तो खेत मज़दूर या सेवानिवृत्त हैं। वित्तीय दुर्दशा के कारण अपने बच्चों पर आश्रित होने के कारण हर माह औषधीय चिकित्सा पर पैसा खर्च कर पाने में अशक्त रहते है। बूढ़ों को परिवार पर वित्तीय बोझ डाले बिना चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई से बड़े औषधीय चिकित्सा पाने में समुचित सहायता मिली है।

श्री बिच्छा इन दिनों उच्च रक्तचाप और अल्सरों से पीड़ित हैं। वह इकाई में चलती-फिरती चिकित्सा सेवा उपचार से लाभान्वित हो रहे हैं। वह सप्ताह भर की दवा ले लेते हैं। इस पर पहले उन्हें हर महीना रु 700/- खर्च करने पड़ते थे। उन्हें दवा अब मुफ्त भी मिल जाती है। वह चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई से अत्यंत संतुष्ट हैं और उनके प्रति आभारी भी।

लाभार्थी-2

लाभार्थी का नाम : श्री गोट्या	अवस्था : 72 वर्ष
व्यवसाय **:** सेवानिवृत्त	
गाँव का नाम : पल्लगुट्टा टांडा	
रोग : झुनझुनी, जोड़ों का दर्द और सुन्नपन	
भेंट की तारीख : 15-3-2018	

श्री गोट्या ने बताया कि बीडीएल एज इंडिया गाँव में पिछले पाँच बरस से मुफ्त औषधीय चिकित्सा और हेल्प- दवाएं उपलब्ध करा रहे हैंवह जोड़ों के दर्द , झुनझुनी और सुन्नपन के इलाज के लिए अब चलती फिरती- सेवा इकाई स्थल पर जाते हैं-चिकित्सा।वह प्राथमिक औषधीय चिकित्सा के लिए पहले चौटुप् पल, नारायणपुर और वैलपल्ली जाया करते थे। अवस्था की विवशता के चलते वह अस्पताल अकेले नहीं जा पाते थे ।हर बार बच्चों पर बुरी तरह आश्रित थे-अस्पताल जाने के लिए अपने बाल।हर महीने लगभग रु । 1,000/- खर्च कर देते थे। ग्रामीण स्वास्थ्य रक्षा के उपायों के विकास के लिए बीडीएल ज इंडिया पहल के बाद प्राथमिक हेल्पए- स्वास्थ्य सेवाओं तक उनकी घर बैठे पहुँच सरल हो गई है।-उन्होंने खुलासा किया कि पल्लगुट्टा टाँडा जैसे दूर रक्षा तक लोगों की पहुँच बहुत बढ़ गई है-दराज के गाँवों में स्वास्थ्य। फिरती स्वास्थ्य रक्षा इकाई से-वह चलती नियमित रूप से लाभान्वित होते हैं।पर्याप्त दवाएं मुफ्त ले लेते हैं ।उन्होंने सामाजिक पहलों के लिए बीडीएल और हेल्पएज इंडिया के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

लाभार्थी-3

लाभार्थी का नाम : श्रीमती आर सायम्मा	अवस्था : 64 वर्ष
व्यवसाय **:** कृषी	
गाँव का नाम : कोत्तगुड़ेम	
रोग : उच्च रक्तचाप और मधुमेह	
भेंट की तारीख : 15-3-2018	

श्रीमती सायम्मा बड़े लंबे समय से उच्च रक्तचाप और मधुमेह से ग्रस्त हैं। वह उच्च रक्तचाप और मधुमेह की जाती रहती थीं और हर बार लगभग चिकित्सा के लिए 2000/- खर्च कर देती थीं। उनके परिवार की पैसे की बदहाली के चलते यह उनके लिए आसान काम न था। वह अब हर सप्ताह गुरुवार को आती हैं और चलती-फिरती सेवा इकाई में उच्च रक्तचाप तथा मधुमेह की पर्याप्त दवाएं मुफ्त पा लेती हैं। फिर भी, उन्हें उन्नत चिकित्सा के लिए चौटुप्पल जाना ही पड़ता है। उन्होंने बीडीएल हेल्पएज इंडिया सेवा इकाई से अनुरोध किया है कि चलत-फिरती चिकित्सा स्थलों पर मधुमेह के स्तर के परीक्षण की व्यवस्था कर दें। इन चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई के स्वास्थ्य स्थलों पर रक्षा सेवाएँ उपलब्ध होने से वह हर महीने लगभग रु. 1000/- की बचत कर पा रही हैं। गरीबों ने हेल्पएज इंडिया बीडीएल के उदार प्रयासों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

एम एम यू उपस्थिति की प्रोफाइल ग्राम पंचायत प्रोफाइल (जनगणना 2011) – नरसीपट्टनम मंडल, विशाखापट्टनम जिला

i) जनसंख्या

क्र। सं	ग्राम पंचायत का नाम	कुल परिवार	जनसंख्या			अनुसूचित जाति जनसंख्या (एस सी)				अनुसूचित जनजाति जनसंख्या			
			कुल जनसंख्या	पुरुष	स्त्री	कुल एससी जनसंख्या	पुरुष	स्त्री	%	कुल एससी जनसंख्या	पुरुष	स्त्री	%
नरसीपट्टनम मंडल													
1	नरसी पट्टनम आयनना बस्ती		33757	16076	17681	-	-	-	-	-	-	-	-
गोलगुंडा मंडल													
	पाकाला पडु	981	3587	1783	1804	208	106	102	5.80	0	0	0	0
	पथ मल्लाम्पेटू	426	1422	698	724	129	62	67	9.07	608	293	315	42.76
कोययुरु मण्डल													
1	चित्तम पडू	76	438	305	133	0	0	0	0	420	288	132	95.89
2	नदीम महल	362	1221	588	633	3	1	2	0. 25	1035	502	533	84.77
3	नदीम पालेम	130	409	204	205	0	0	0	0	335	162	173	81.91
4	रामाजु पालेम	136	434	207	227	0	0	0	0	386	186	200	88.94
कोटौरतला मंडल													

1	पामुला वाका	795	2858	1404	1454	509	259	250	17।81	3	1	2	0.10
2	रामन्ना पालेम	175	622	316	306	18	8	10	2।89	0	0	0	0
3	केवेंटटा पुरम (कोडवत पुडीजीपी	1882	6,901	3406	3495	646	314	332	9।36	167	77	90	2.42
चंथापल्ली मंडल													
1	सामागिरी	121	413	192	221	0	0	0	0	400	189	211	96.85
2	लामामा सिंगी	418	1943	969	974	2	2	0	0.10	1797	902	895	92.49
नथवारम मंडल													
1	माधव नगर	1962	7469	3758	3711	1842	899	943	24.66	273	137	136	3.66

श्रामिक का प्रोफाइल

क्र.सं.	ग्राम पंचायत का नाम	कुल श्रमिक	मुख्य श्रमिक	हाशिये श्रमिक
नरसीपट्टनम मंडल				
1	नरसीपट्टनम आयनना बस्ती	-	-	-
गोलुगोंडा मण्डल				
2	पाकाला पाडु	1856	1600	256
3	पथामल्लंपेटा	837	660	177
कोय्यूर मंडल				
4	चित्तम पडू	149	149	0
5	नदीम महल	682	388	294
6	नदीम पालेम	246	161	85
7	रामाजु पालेम	282	282	0
कोटौरतला मंडल				
8	पामुला वाका	1599	899	700
9	रामन्ना पल्लेम	390	351	39
10	केवेट्टापुरम (कोडवतपुडी जीपी	3910	3306	604
चंथापल्ली मंडल				

11	सामागिरी	256	251	5
12	लामामासिंगी	989	776	213
नथवारम मंडल				
13	माधव नगर	-	-	-

नरसीपट्टनम मंडल चलती) सेवा इकाई-फिरती चिकित्सा-एम एम यू) आवृत्त क्षेत्र कार्यक्रम

कं सं	जिल्ला का नाम	मुक़ाम का नाम	दिन	पारी	समय	ग्राम पंचायत का नाम
1	विशाखापट्टणम	आयनना बस्ती	सोमवार	सुबह	9:30 am to 12:30 pm	नरसीपटनम ग्राम पंचायत
2	विशाखापट्टणम	पाकालापडु	सोमवार	दोपहर	1:30 pm to 4:30 pm	पाकालापडु ग्राम पंचायत
3	विशाखापट्टणम	नदीम्पालेम	मंगलवार	दोपहर	10:45 am to 11:45 am	नंदीपालेम पंचायत
4	विशाखापट्टणम	रमराजुपालेम	मंगलवार	दोपहर	12:00 pm to 1:30pm	रमराजु पालेम ग्राम पंचायत
5	विशाखापट्टणम	चित्तमपडू	मंगलवार	दोपहर	2:00 pm to 3:00 pm	चित्तमपडू ग्राम पंचायत
6	विशाखापट्टणम	पथमल्लाम्पेटू	बुधवार	सुबह	3:15 pm to 4:00 pm	पथ मल्लाम्पेटू ग्राम पंचायत
7	विशाखापट्टणम	माधव नगर	मंगलवार	सुबह-दोपहर	10:30 am to 4:30 pm	माधव नगर ग्राम पंचायत
8	विशाखापट्टणम	वेंटटापुरम	गुरूवार	सुबह	10:30 am to 12:30 pm	कोडावटि पुडी ग्राम पंचायत
9	विशाखापट्टणम	रामन्ना पल्लेम	गुरूवार	दोपहर	1:30 pm to 2:30 pm	रामन्ना पालेम ग्राम पंचायत
10	विशाखापट्टणम	पामुला वाका	गुरूवार	दोपहर	3:00 pm to 4:30 pm	पामुला वाका ग्राम पंचायत
11	विशाखापट्टणम	सामागिरी	शुक्रवार	सुबह	11:00 am to 1:00 pm	सामागिरी ग्राम पंचायत
12	विशाखापट्टणम	लामामासिंगी	शुक्रवार	दोपहर	2:00 pm to 4:30 pm	लामा मासिंगी ग्राम पंचायत

चलती-फिरती चिकित्सा इकाई – (नरसीपट्टणम – एम एम यू) महीने वार उपचार की संख्या

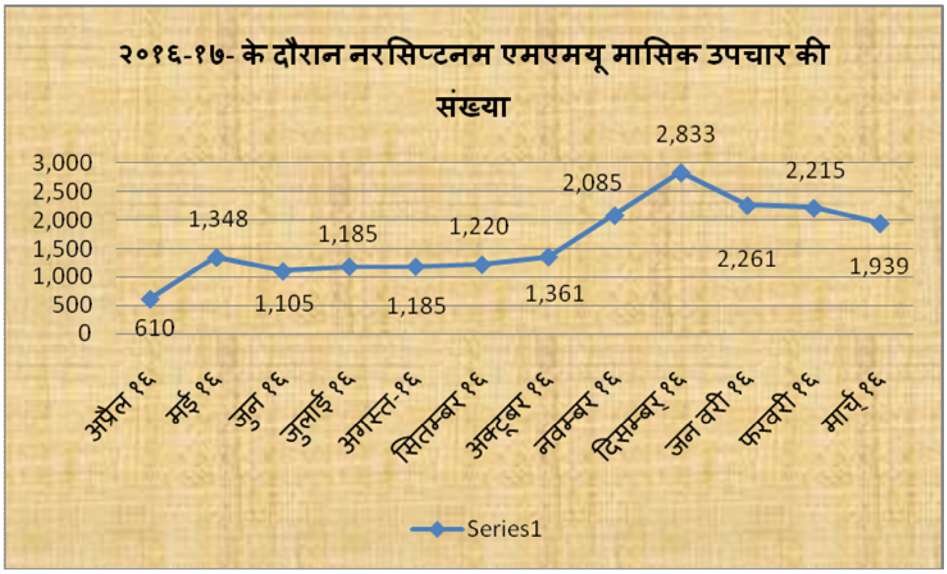

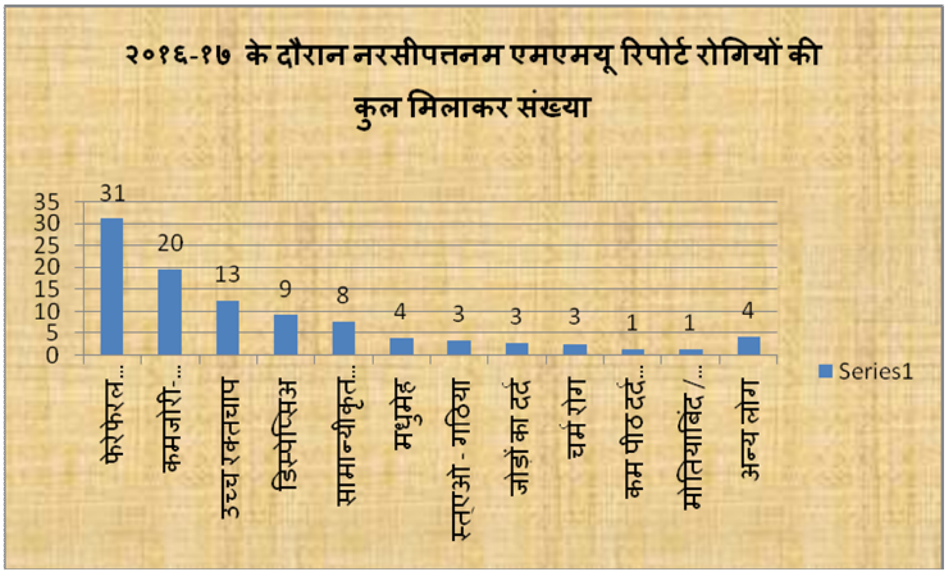

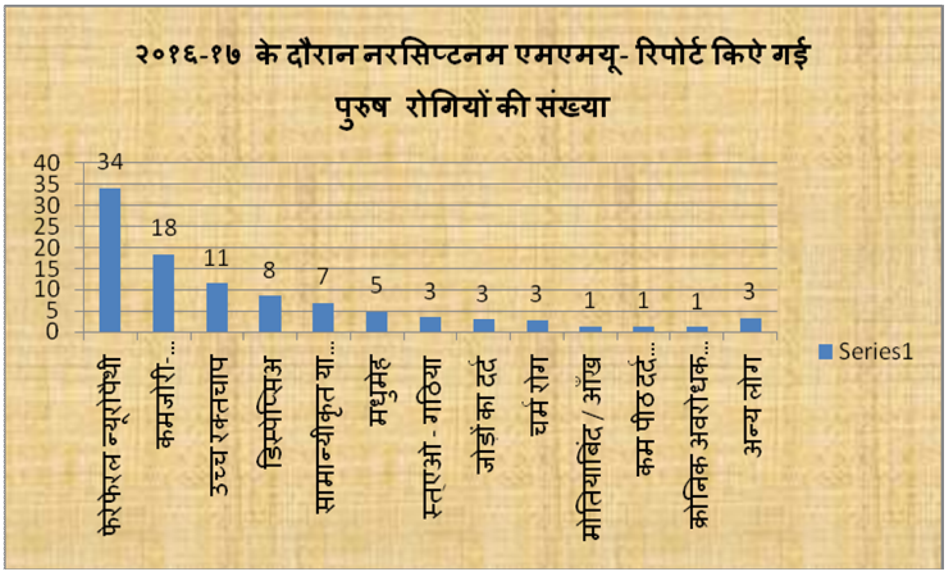

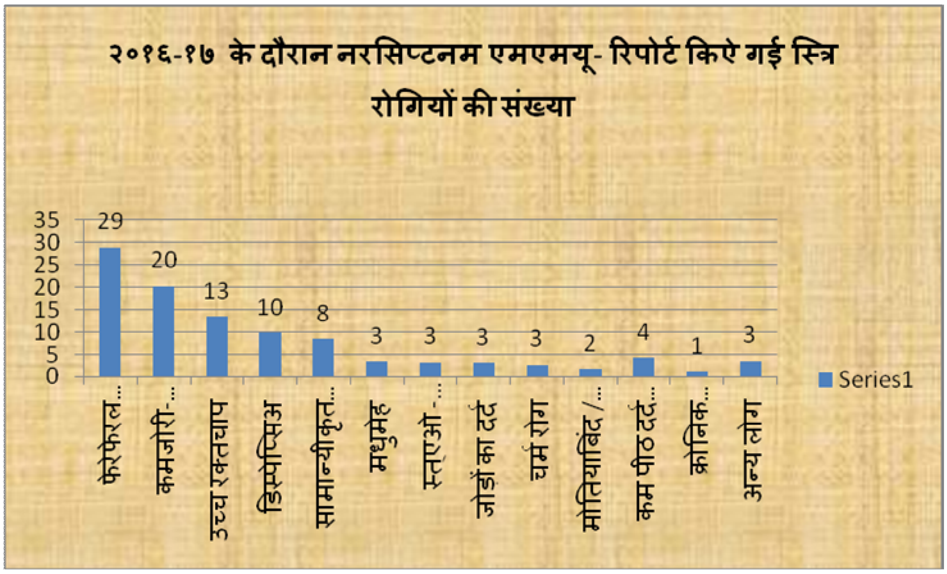

आंकड़ों से पता चलता है कि नरसिपट्टनम एम एम यू में बुजुर्ग लोगों के लिए आम बीमारियां न्यूरो पैथी, कमजोरी-सामान्यीकृत और उच्च रक्तचाप हैं।

प्राथमिक समाचार संग्रह:

देखी गई तिथि: 26.3.2018

कुल नामांकित लाभार्थियों: नरसीपट्टणम के सभी एमएमयू साइट गांवों के लगभग 1100 लोग

नियमित रूप से देखी गई लाभार्थियों: सभी एमएमयू साइट गांवों के लगभग 400 से 500 लोग

कुल लाभार्थियों का नमूना आकार-नरसीपट्टनम एम एम यू:

क्रं. सं.	एम एम यू का नाम	नमूना आकार
1	अय्यान्ना कॉलोनी	28
2	पाकलापाडू	27
	कुल	55

1) एम एम यू सेवा संतुष्टि स्तर:

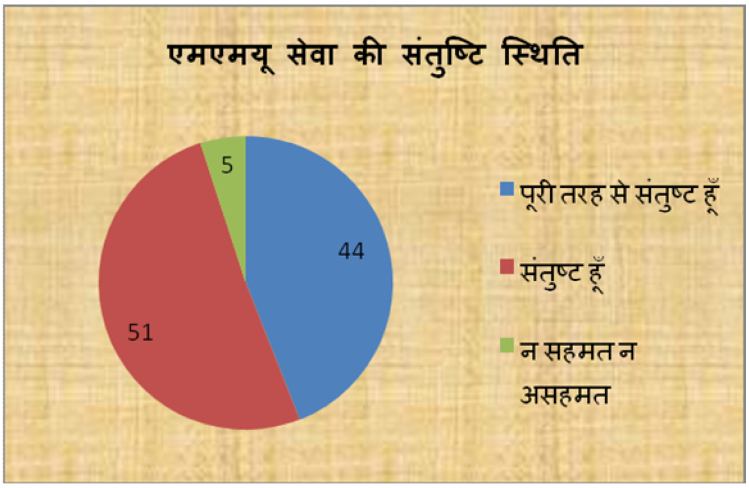

आंकड़ों यह स्पष्ट होता है कि बुजुर्ग लोगों के लिए उच्च रक्तचाप, कमजोरी सामान्यीकृत और संयुक्त दर्द आम बीमारियां हैं।

2) 15/3/2018 दुवारा बीमारियों पर सामाचार

मरीजों की कुल संख्या: 55

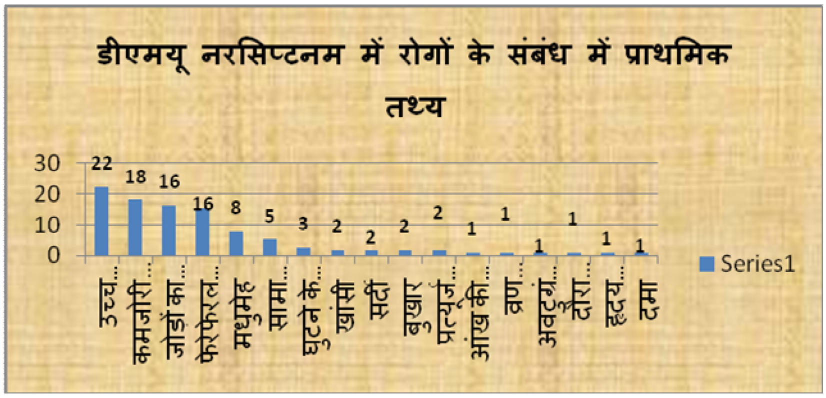

3)एम एम यू सेवा के बाद स्वास्थ्य में सुधार

मरीजों की कुल संख्या: 55

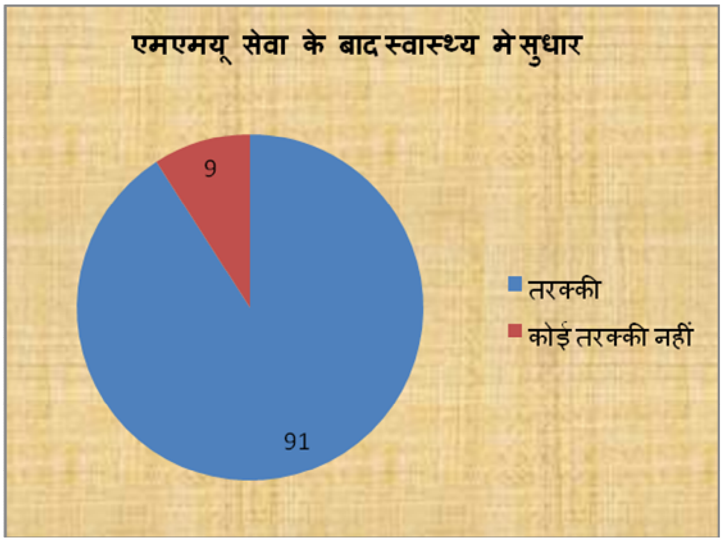

आंकड़ों से पता चलता है कि एम एम यू सेवा शुरू होने के बाद वृद्ध लोगों के स्वास्थ्य में सकारात्मक सुधार हुआ है।

4) एम एम यू गाड़ी पर दिए गए दिन के अनुसूची और समय के सही रूप चलती है।

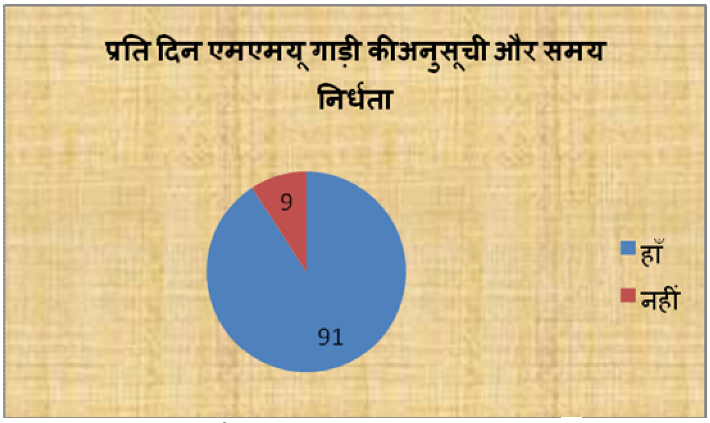

अधिकांश बुजुर्गो ने कहा कि एम एम यू **गाड़ी** पर दिए गए दिन और समय के अनुसर चलती है।

5)बीडीएल के बारे में सब कुछ जानें

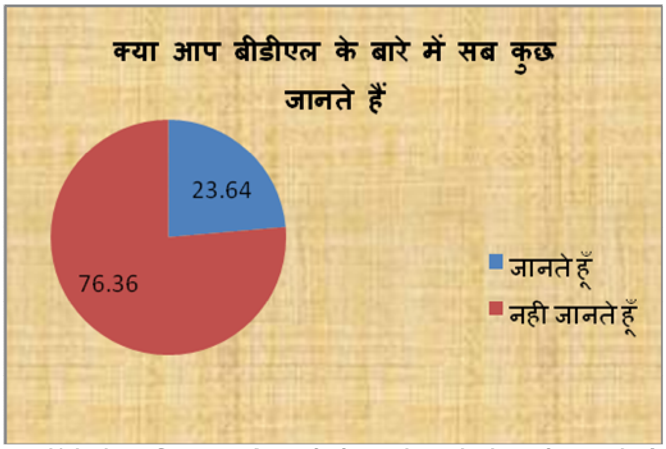

आंकड़ों से पता चला कि बुजुर्गों में से अधिकांश लोग बीडीएल के बारे में नहीं जानते हैं।

क्र। सं	प्राचल	संतुष्टि स्तर		
		अत्यधिक संतुष्ट	संतुष्ट	कुछ हद तक संतुष्ट
1	सेवा में दाखिला लेने में आसानी	☑		
2	सभी स्वास्थ्य मामलों का उपचार		☑	
3	रोगियों पथी चिकित्सकों की व्यवहार और चिंता	☑		
4	औषधी या मुहैया किया हुआ		☑	
5	सेवा की प्रक्रिया	☑		

आयन्ना कालनी– नरसीपट्टनम एम एम यू साईट

चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई पणधारकों से आपसी चर्चा- डॉक्टर से साक्षात्कार
डॉक्टर का नाम : डॉ श्रीराम मूर्ति
योग्यता : एम बी बी एस
भेंट की तारीख : 26-3-2018

डॉ श्रीराम मूर्ति, पिछले एक साल से चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई के लिए एम बी बी एस डॉक्टर के तौर पर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने आन्ध्र-प्रदेश सरकार, स्वास्थ्य विभाग की विभिन्न शाखाओं में कार्य किया है। वह डी एम एवं एच ओ के रूप में सेवानिवृत्त हुए। उन्हें स्वास्थ्य चिकित्सा और रक्षा के क्षेत्र में 25 बरस का खासा अनुभव है। उन्होंने बताया की बड़े-बूढ़ों की विभिन्न रोगों की चिकित्सा के लिए सेवा इकाइ स्थलों पर 100 वाहन है। बड़े-बूढ़े विविध रोगों की चिकित्सा स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों की चिकित्सा के लिए चलती-फिरती सेवा इकाई स्थलों पर आते हैं। इनमे कुछ हैं जोड़ों का दर्द, हड्डियों मे छेद पड़ जाना, उच्च रक्तचाप, कमजोरी, सामान्य और तन्त्रिका सतह की विकृति आदि। चलती-फिरती चिकित्सा के लिए बहुसंख्य बड़े-बूढे अब नियमित रूप से आते हैं। यदि वे स्वयं न भी आ सकें तो अपने परिजनों से दवा ले सकते हैं। डॉक्टरों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। तब भी, वे धीरज नहीं खोते और ग्रामीणों से विनम्र बने रहते हैं।

बीडीएल हेल्पएज इंडिया की चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई की सेवाओं में और लम्बे अनुभव प्राप्त सरकारी अस्पतालों की सेवाओं में अंतर को अलग पाए हैं। सरकारी अस्पतालों में विभिन्न उपचारों के लिए दवाएं पर्याप्त सुविधाएँ उपलब्ध नहीं रहतीं। इसलिए वहाँ जाने से बड़े-बूढ़े बहुतेरे कतराते हैं। बीडीएल हेल्पएज इंडिया की पहल बड़े-बूढ़े के स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं की सुध ले रही है। वह पर्याप्त दवाएँ मुफ्त बाँट रही है। वह हृदय के विकारों, क्षय रोग, टायफायड और डेंगू जैसे जटिल रोगों और आपात्कालिक मामलों को विभिन्न अस्पतालों के हवाले करते हैं। उन्हें यह बताते हुए अतीव प्रसन्नता हो रही थी कि दी जा रही चिकित्सा सेवाओं से रोगी बड़े खुश हैं। वे स्वयं को बीडीएल-हेल्पएज इंडिया का आभारी अनुभव करते हैं। उन्होंने कहा कि गाँव में समग्रत: स्वास्थ्यप्रद और सकारात्मक वातावरण व्याप्त है।

श्री किरण बाबू, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी से साक्षात्कार,
चलती-फिरती सेवा इकाई – चौटुप्पल
भेंट की तारीख : 26-3-2018.

जब 2017, अप्रैल को चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई की योजना नरसीपट्टणम में प्रारंभ हुई थी तब से श्री किरण बाबू, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी के रूप में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि बड़े-बुढ़ों के लिए चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई, नरसीपट्टणम के अंतर्गत 13 गाँव आते हैं। इन चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई के स्थलों के आस-पडोस में 30 गाँव इन सुविधाओं का लाभ उठाते हैं। प्रतिदिन औसतन 120-130

बड़े-बूढ़े इन चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई की सेवा का लाभ उठाते हैं। इन क्षेत्रों में बड़े-बूढ़ों के रक्तचाप, जोड़ों का दर्द, मधुमेह, दमा, शौच के रोग, खराब पाचन आम स्वास्थ्य बीमारिरों की समस्याएँ हैं। उन्होंने यह भी बताया कि बड़े-बूढ़े विभिन्न रोगों की चिकित्सा के लिए चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई, नरसीपट्टणम तुनी, काकीनाड़ा और विशाखापट्टणम जाते थे। उन्हें इस पर रु.1000/- से 1,500 खरचने पड़ते थे। इस बात का पुछवैया भी नहीं किया कि उन्होंने दवाएँ ठीक-ठाक ली हैं या नहीं ताकि अच्छे परिणाम मिले। चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई प्रारंभ होने के बाद बड़े-बूढ़े विभिन्न रोगों की दवाएं हर सप्ताह मुफ्त ले जाते हैं। चलती-फिरती चिकित्सा के कर्मचारी बड़े-बूढ़ों को न केवल विभिन्न रोगों की दवाएँ बाँटते हैं बल्कि इसे जाँच के लिए अनुवर्तन भी करते हैं कि उन्होंने ये दवाएं ठीक ठीक ली है कि नहीं। सेवा इकाई के सेवाओं के बारे में अनुक्रिया भी लेते हैं ताकि वे इन चलती-फिरती चिकित्सा से कठिनाइयां दूर की जा सके और सेवाओं को बेहतर बनाया जा सके। चलती-फिरती चिकित्सा इकाई के डॉक्टर आपात्कालिन दशा या नाजूक मामले में विशाखापट्टणम या काकीनाड़ा अस्पतालों के हवाले कर देते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि छाया स्वास्थ्य शिविर, सामान्य शिविर और स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई-नरसीपट्टणम सेवा इकाई के स्थलों में या उनके आसपास क्षेत्रों में आयोजन किया जाता है। उच्च रक्तचाप, मधुमेह, हड्डियों में छेद और अन्य अनेक रोगों के बारे में छाया स्वास्थ्य शिविर नियमित रूप से लगाए जाते हैं। इनमें भाग लेने वाले बड़े बुढ़ों को 10 दिन की दवाएं दे दी। चलती-फिरती सेवा इकाई के कर्मचारी गरीबी की रेखा से नीचे के नागरिकों को और 55 वर्ष या उससे ऊपर के व्यक्तियों को मुफ्त में सेवा इकाई सेवाओं की जानकारी ही नहीं देते बल्कि निकटवर्ती चलती-फिरती चिकित्सा इकाई सेवाओं का लाभ उठाने में सहायता भी करते हैं।

लाभार्थी-1

लाभार्थी का नाम : दादि वीरभद्र राव	अवस्था : 63 वर्ष
व्यवसाय : कृषि	गाँव का नाम : मदगुला (म) तिरुवाड़ा
रोग : झुनझुनी, सुन्नपन और हड्डियों में छेद	
भेंट की तारीख : 26-3.2018	

तिरसठ वर्षीय श्री वीरभद्र राव, तिरुवाड़ा गाँव, मदगुला (मण्डल), अयन्ना कॉलनी चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई स्थल में पिछले एक महीने से आ रहे हैं। उन्हें चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई –हेल्पएज इंडिया की स्वास्थ्य चिकित्सा सेवा इकाई के बारे एक मित्र से में पता चला। उन्होंने अयन्न कॉलनी चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई स्थल में अपना नाम दर्ज करा लिया। उनसे बातचीत की गई और उन्होंने कहा कि मैं वह चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई, तिरुवाड़ा गाँव, मदगुला (मंडल) आयन्न कॉलनी 50 किलोमीटर दूर से आया हूँ। वह पहले चौड़वरम, विशाखापट्टणम और अनकापल्ली के अलग-अलग अस्पतालों में जाते थे और झुनझुनी, सुन्नपन, हड्डियों में छेद और जोड़ों के दर्द आदि के इलाज पर रु. 500/- से 1000/- तक खरचते थे, लेकिन उनके स्वास्थ्य में सुधार नहीं आया था। बीडीएल चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई में पहुँचने के बाद जोड़ों का दर्द, झुनझुनी और सुन्नापन तनिक कम हुआ है। वह हर सोमवार को बीडीएल-चलती-फिरती

चिकित्सा सेवा इकाई स्थल पर पहुँचते हैं और बीडीएल के करुणामय प्रयास की मुक्त कंठ से सराहना करते हैं।

लाभार्थी-2

लाभार्थी का नाम: श्रीमती किल्लड़ बुल्लम्मा	अवस्था : 60 वर्ष
व्यवसाय	: कृषि
गाँव का नाम	: पाकालापाडु
रोग	: ज़ोड़ों में दर्द, रक्तचाप, हड्डियों में छेद
भेंट की तारीख	: 26-3-2018

श्रीमती किल्लड़ बुल्लम्मा, अवस्था: 60 वर्ष, पाकालापाडु इस पाकालापाडु क्षेत्र में चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई की स्थापना के समय से लाभ उठा रही हैं। जोड़ों में दर्द, रक्तचाप, हड्डियों में छेद की चिकित्सा कराने के लिए वह हर गुरुवार चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई में आती है। चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई प्रारंभ से पहले वह उच्च रक्तचाप, जोड़ों में दर्द, हड्डियों में छेद चिकित्सा के लिए आर एम पी सेवा में जाया करती थीं। वह उस सेवा से पूरी तरह संतुष्ट न थीं। वह हर माह अपनी चिकित्सा पर रुपये 300/-से 400/- तक खरचती थीं। वह इन चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाई से जोड़ों में दर्द, उच्च रक्तचाप और हड्डियों में दर्द के लिए मुफ्त में दवा का लाभ उठा रही हैं। वह इन चलती-फिरती चिकित्सा सेवा इकाईसे बड़ी संतुष्ट हैं।

निष्कर्ष / टिप्पणियां

- लगभग 60% लाभार्थी उच्च रक्तचाप, मधुमेह, जोड़ों के दर्द और हड्डियों में छेद से पीड़ित हैं।
- प्रतिदिन औसतन सेवा इकाई सुविधा का लाभ उठाते -फिरती चिकित्सा-बूढ़े चलती-बड़े 150 से 140 हैं।
- *रोगशय्या पर पड़े मरीज़ों की चिकित्सा:* चलतीसेवा इकाई के डॉक्टर और उनके -फिरती चिकित्सा-के घर जाते हैं दिन में एक बार रोगशय्या पर पड़े मरीज़ 15 सहायक।उनका रक्तचाप जाँचते और प्राथमिक स्वास्थ्य चिकित्सा तथा दवाएं देते हैं।

कोत्तगुडेम एम एम यू साइट गाँव में बिस्तर पर सवार इलाज

- चलती सेवा इकाई-फिरती चिकित्सा- स्थलों के पासपड़ोस के स्थानों पर स्वास्थ्य जागरूकता शिविरों - से किया जाता है का आयोजन नियमित रूप।
- गम्भीर रोग की स्थिति में डॉक्टर रोगी को आसपास के अस्पतालों के हवाले करते हैं।
- डॉक्टर सभी बड़ेबूढ़े रोगियों की समस्याएं धैर्य और सावधानी से सुनते हैं-।
- बड़ेबू-ढ़े रोगियों को पर्याप्त दवाएं दी जाती हैं।
- हम जिन स्थलों पर पहुँचे**,** वहाँ बड़ेस्थल में आगन्तुकों की -रोगियों के प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधा बूढ़े- संख्या बढ़ गई है।
- देखा गया है कि बड़ेबूढ़ों की औसत आयु में वृद्धि हुई है-।
- सभी सुविधा स्थलों पर प्राप्य चिकित्सा को ऊँचा आँका गया है।

उच्च रक्तचाप पर स्वास्थ्य जागरूकता शिविर

सुझाव:

- बीपी, शुगर, रक्त और मूत्र परीक्षण के लिए प्रयोगशाला उपकरण सुविधा करना।
- संबंधित मुद्दों के लिए दवा की सुईओ की सुविधा करना।
- प्रति4-5 गांवों के लिए1-5 छोटे अस्पतालों जो (10-15 बिस्तर) उपलब्ध
- बरसात के मौसम के दौरान चिकित्सक और मरीजों के लिए आश्रय सुविधा प्रावधान

संतुष्टि

क्र.सं.	पैमाना	शेयरधारकों की संतुष्टि के स्तर			
		ग्राम सरपंच बुजुर्गों	ग्राम वृद्धा (लाभार्थी)	गाँव	चिकित्सक और एम एम यू अधिकारी &कर्मचारी
1	वृद्धलोगों की पहुंच और स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं की वृद्धि	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
2	बुजुर्गों में मृत्यु की औसत मूल्यांकन में कमी	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
3	बुजुर्गों के लिए स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों / छाया स्वास्थ्य शिविरों आदि की संख्या में वृद्धि	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
4	एम एम यू सेवा के बाद बुजुर्गों के वित्तीय बोझ में कमी	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
5	एम एम यू सेवा के बाद बुजुर्ग लोगों के स्वास्थ्य स्तर में सुधार वृद्धि	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
6	पर्याप्त दवाएं / टैबलेट उपलब्ध हैं बुजुर्ग लोग।	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
7	एम एम यू गाड़ी दिन सारिणी और समय पर सटीक रूप से काम करता है	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
8	चिकित्सक बुजुर्ग लोगों को स्वास्थ्य समस्याओं को ध्यान से सुनता है	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
9	स्वास्थ्य के कुल संतुष्टि के स्तर	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च

क्षेत्र-III: सफाई

परियोजना-1: इलेक्ट्रानिक शौचालयों का निर्माण (स्त्रियों के लिए इ-शौचालय)

बजट आवंटन: रु 2-00 करोड़

किया गया खर्च: रु। 1-80 करोड़

दौरे की तारीख: 4-4-2018

तेलंगाणा सरकार ने स्वच्छ तेलंगाणा अभियान छेड़ा है। यह स्वच्छ भारत अभियान के अनुरूप है। लक्ष्य है सन् 2019 तक "दिसा-मैदान मुक्त नगर।" प्राथमिक उद्देश्य है शौचालयों का निर्माण –-स्वतन्त्र घरेलू शौचालयों, सामुदायिक शौचालयों तथा सार्वजनिक शौचालयों का निरन्तर निर्माण, उनका असरदार परिचालन, उनकी देख-रेख, उनकी पर्याप्त संख्या सुनिश्चित करना और दिसा-मैदान मुक्त शहर हासिल करना। प्रतिष्ठा, निजता, संरक्षा और सामाजिक हैसियत की बहाली के अलावा सफाई, बाल-मृत्यु, मातृ-स्वास्थ्य, जल की गुणवत्ता, लैंगिक-समता, भूखों की कमी, खाद्यान्न की सुरक्षा, पर्यावरण की सम्पोष्यता, अन्ततः गरीबी घटाने और जीवन की समग्र गुणवत्ता के सुधार की दिशा में ज़ोरदार प्रभाव डालती है। भारत डायनामिक्स लिमिटेड (बीडीएल) ने अपने निगमित सामाजिक दायित्व के अंग के रूप में बृहत् हैदराबाद नगर निगम (बृहैननि) से अनुबन्ध किया है कि नगर में सन् 2016-17 में स्त्रियों के 21 इ-शौचालयों का निर्माण करेंगे।

बृहैननि-बीडीएल ने स्त्रियों के इ-शौचालयों के लिए बस अड्डे, उद्यान, रेलवे स्टेशन जैसे सार्वजनिक स्थल चुने हैं। यहाँ से अधिकतर लोग अन्य स्थानों को जाते हैं। यह छात्रों, कर्मचारियों और प्रति दिन आने-जाने वालों के लिए बहुत उपयोगी है। स्त्रियों का इ-शौचालय गुमटीनुमा बना-बनाया सार्वजनिक शौचालय होता है। इसमें विशेष रूप से महिलाओं के लिए बने स्टेनलेस स्टील के साज-सामान लगे होते हैं। ये उपयोक्ताओं की दृष्टि से सहज इलेक्ट्रानिक अन्तरा फलकों से समन्वित होते हैं। ये नफ़ासत भरे और स्वचल होते हैं। इनमें परिचर भी नहीं होता। वेबसाइट पर इनका हाल-चाल देखकर इनकी खोज-खबर दूर ही से रखी जा सकती है।

इ-शौचालयों में बिजली चालित, यान्त्रिक और वेब मोबाइल तकनीक समन्वित होती है। इसलिए इनमें विशेष रूप से महिलाओं के लिए स्थापित सम्पोष्य सफाई में पूर्ण चक्र रुख समाहित होता है। महिलाएं अपने लिए स्वचल परिचालन प्रणाली से लैस और अपनी विशिष्ट आवश्यकताएं पूरी करने वाले अनन्य इ-शौचालय न होने से समस्याओं का सामना करती हैं। इ-शौचालयों के लाभ अनमोल हैं। इनमें महिलाओं और विकलांगों को सबसे अच्छा प्रसाधन प्रदान करना और शौचालय के प्रयोग को बढ़ावा देना सम्मिलित है।

बृहैननि के अनुरोध और पहल पर इस नवोन्मेषी कार्यक्रम को अनेक सम्मानित संगठनों की ओर से निसादा पहल के अन्तर्गत वित्तीय भागीदारी का सहयोग प्राप्त हुआ है। इस पहल का प्रयोजन है नगर की सार्वजनिक सुविधाओं में सुधार, नागर सुन्दरता बढ़ाना और सार्वजनिक शौचालयों की भारी माँग, विशेष रूप से महिला-

शौचालयों की माँग, पूरी करना, क्योंकि वे ऊपर बताए ढब के आधुनिक साज-सामान युक्त शौचालयों की कमी का सामना करती हैं, जो खास उनकी आवश्यकताएं पूरी कर सकें। इ-शौचालय इस प्रकार के साज-सामान से लैस होते हैं। इसलिए इन्हें हैदराबाद नगर के विभिन्न स्थलों पर यथा आवश्यकता लगाने की योजना बनाई गई है। स्त्रियों के इ-शौचालय का उपयोग रु। 1/-, 2/- या 5/- का सिक्का डालकर किया जा सकता है। इनमें बाँकी और पारिस्थितिकी के अनुकूल बत्तियां और जलस्रावी प्रणालियां लगी रहती हैं।

"इ-शौचालय संवेदी-आधारित साफ-सफाई और जलस्रावी प्रणाली से लैस होते हैं। उपयोगकर्ता इ-शौचालय से बाहर निकली नहीं कि इसमें पानी अपने आप बह निकलता है।सो, स्वच्छता की अनदेखी का प्रश्न ही नहीं उठता।" ये शौचालय फर्श की धुलाई की स्वचल सुविधा से भी लैस होते हैं। इससे परिसर साफ-सुथरा रहेगा।

स्त्रियों के 24 इ-शौचालयों में से अभी तक 21 ही चालू हैं। अधिकतर महिलाएं इनके प्रयोग से अनजान हैं। इसलिए इनका प्रयोग बहुत कम हो पाता है। प्रत्येक इ-शौचालय की लागत लगभग 6।75 लाख रुपये है। यह पहल बीडीएल ने वर्ष 2016-17 में की थी, लेकिन अधिकतर शौचालय लगाए गए वर्ष 2017-18 के दौरान। इस वर्ष भी तीन शौचालय स्थापित किए जाने शेष हैं।

शीई-शौचालय की स्थिति

इकाइयां जो खुली सार्वजनिक (कार्यरत) हैं

- 4A –दिलसुखनगर सस्थान
- 8 - गोलकोंडा
- 2- हब्सीगुडा
- 18 – सिकंदरा बाद ब सस्थान
- 18 –जनरल बाजार,पार्क लेन
- पनामाब सस्थान/ गणेशनगर,स्वरि शीगार्डेन के सामने
- सनतनगर, पुलिस स्टेशन के सामने
- के बी आर पार्क1
- के बी आर पार्क2
- तर्नकाब सस्थान

इकाइयों ने प्रगति पर काम स्थापित किया

- 7A – मेहदी पट्टनम ब सस्थान
- 10 –नामपल्ली सार्वजनिक उद्यान
- ए एस राव नगर ब सस्थान

- एल बी नगर (नक्षत्र होटल)
- मियापुर, ट्राफिक स्टेशन के सामने
- सुचित्रा, बालाजी अस्पताल (पेट-बशीराबाद)
- सुचित्रा अकाडमी1
- के पी एच बी ब सस्थान (लिंगमपल्ली रेल्वे स्टेशन)
- ए पी आई आई सी कालोनी, जिड़ीमेटला ब सस्थान के सामने
- फीवर आस्पताल ब सस्थान
- चैतन्य पुरी ब सस्थान
- आर वि बि आर कालेज
- कुतुबशाही टोंब्स
- नल्लकुंटा तरकारी मार्केट

प्रतिदिन औसत उपयोगकर्ता

क्र. सं.	**वहई-शौचालय क्षेत्र**	**प्रारंभ**	**प्रतिदिन लाभार्थियों की औसत संख्या**
1	दिलसुखनगर	27.3.2017	25-30
2	गोलकोंडा	8.3.2018	25-30
3	सिकंदराबाद	2.8.2017	25-30
4	जनरल बाजार	3.8.2017	25-30
5	केबीआर पार्क -1 और केबीआर पार्क -2	8.3.2018	20-25
6	हब्सीगुडा	06.6.2017	20-25
7	पनामा बस कर्मचारी	29.12.2017	15-20
8	तारनाका बस कर्मचारी	08.3.2018	15-20
9	सनथनगर	16।2।2018	15-20

24शि-ई शौचालयों में से केवल 10 शौचालय अब तक परिचालित हैं और अधिकांश महिलाएं इन शौचालयों से अवगत नहीं हैं, इसलिए इन शौचालयों के उपयोग स्तर बहुत कम हैं। प्रत्येक इकाई की लागत 6.75 लाख रुपये है। यह पहल 2016-17 के दौरान की गई थी, लेकिन अधिकांश शौचालय 2016-17 के दौरान स्थापित किए गए थे।इस सालअभी भी14 इकाइयां स्थापित की जा रही हैं।

इ-शौचालयों की विशेषताएं:

- स्टेनलेस स्टील (एसएस 304)
- शौचालय 126 वर्ग फुट क्षेत्रफल में लगाया जा सकता है
- शौचालय की स्थिति का प्रदर्शन – खाली/खाली नहीं
- हाथ से खुल-बन्द होता दरवाजा
- पच्छिमी ढब का स्टेनलेस स्टील का टपरा
- ध्वनि साहाय प्रणाली
- शौचालय की स्वचल सफाई-धुलाई की कार्य-प्रणाली
- स्टेनलेस स्टील का ढाँचा
- सिक्के से परिचालित कागज़ी रुमालदायी मशीन और रुमाल नाशक
- वेब/मोबाइल ऐप के माध्यम से दूरस्थ मॉनिटरन और नियन्त्रण सुविधा
- भीतर निर्मित पानी की टंकी

स्त्रियों के इ-शौचालय की विशेषताएं

- परिचर बिल्कुल नहीं और स्वचल परिचालन
- स्वतः जलस्राव और फर्श की स्वतः धुलाई के माध्यम से बेहतर साफ-सफाई
- हाल-चाल के दूरस्थ मॉनिटरन के लिए ढेर सारी प्रौद्योगिकी से समन्वित
- सरलता से खड़ा करने के लिए स्टील का बना-बनाया ढाँचा
- ऊर्जा संरक्षी और पर्यावरण के अनुकूल
- इ-शौचालयों के दूरस्थ मॉनिटरन के लिए मोबाइल/वेब ऐप

उपयोग के निदेश:

- हरी बत्ती जलती हो तो ही शौचालय का प्रयोग करें।
- सिक्का डालें (रु। 1/-, 2/- या 5/-)
- दरवाजा खींचें
- भीतर से तालाबंद कर लें
- बाहर निकलने के लिए दरवाजा हाथ से खोलें

दिलसुखनगर बस अड्डे पर स्त्रियों का इ-शौचालय

बृहैननि स्त्रियों के इ-शौचालयों का परिचालन/देख-रेख मेसर्स इरम साइंटिफिक सॉल्यूशन के माध्यम से करता है। वे स्त्रियों के इ-शौचालय लगाते और मोबाइल तथा वेब ऐप के माध्यम से उनकी कुल गतिविधियों का मॉनिटरन करते हैं। यदि स्त्रियों के इ-शौचालयों में कोई समस्या हो, तो उसकी सूचना मॉनिटरन प्रणाली या मोबाइल में तुरत चढ़ जाती है। तब उस क्षेत्र का तकनीशियन समस्या ग्रस्त शौचालय पर पहुँच जाता है। वह समस्या हल करता और सेवा तत्काल बहाल कर देता है। वे यह भी मॉनिटर कर सकते हैं कि दिन भर में शौचालय का प्रयोग कितनी बार किया गया और कितने सिक्के डाले गए आदि-आदि।

श्री पवन साई, स्त्रियों के इ-शौचालयों के तकनीशियन, इरम साइंटिफिक सॉल्यूशन, से आपसी चर्चा

श्री पवन साई स्त्रियों के इ-शौचालयों के तकनीशियन के रूप में इरम साइंटिफिक सॉल्यूशन के लिए पिछले आठ महीने से काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि दिलसुख नगर में स्त्रियों का इ-शौचालय मार्च 2017 में लगाया गया था। प्रतिदिन औसतन 20-25 स्त्रियां इसका उपयोग करती हैं। यदि शौचालय का स्थिति-सूचक बक्स हरा हो तो शौचालय खाली है। यदि लाल हो, तो समझिए कि भीतर कोई है। यदि कोई महिला रु। 1/-, 2/- या 5/- का सिक्का डाल दे, तो दरवाजा अपने आप खुल जाता है। यह पूरी तरह स्वचल प्रणाली है। स्त्रियों के इ-शौचालयों

की प्रणाली में सफाई रुमालदायी मशीन और रुमाल दाहक की सुविधा उपलब्ध है। सफाई रुमाल उपलब्ध रहते हैं और रु। 5/- का सिक्का डालने पर स्वतः बाहर निकल आते हैं। स्त्रियों के इ-शौचालय बहुत कम जगह घेरते हैं। वे अन्य सार्वजनिक शौचालयों की तुलना में बड़े स्वास्थ्यप्रद हैं। पाँच-छह बार उपयोग के बाद फर्श की सतह भी अपने आप साफ हो जाती है। फर्श को आवश्यकता के अनुसार साफ करने के लिए पानी बहाने के दस्ती खटके भी लगे रहते हैं। हर शौचालय से 1000 से 2000 लीटर पानी का हौज जुड़ा रहता है। इन सभी शौचालयों के लिए पानी की आपूर्ति बृहैननि करता है। दिलसुख नगर के शौचालय का हौज बृहैननि की पानी की अहर्निश लाइन से सीधे जुड़ा है। स्त्रियों का हर एक इ-शौचालय उपयोग के लिए 300 लीटर पानी की ऊपरी टंकी से लैस है। हौज का पानी मोटर से टंकी में स्वतः चढ़ जाता है। पानी की ऊपरी टंकी में पानी बहुत नीचे आ जाए या टंकी खाली हो जाए, तो मोटर अपने आप चलने लगता है। शौचालय की दस्ती सफाई के लिए पानी के बहाव के खटके एक-एक उपयोगकर्ता के लिए मात्र पाँच-पाँच बार काम करते हैं। उपयोगकर्ता बाहर निकली नहीं कि पानी के बहाव से शौचालय अपने आप साफ हो जाता है। रात में उपयोग के लिए स्वचल फर्शी बत्तियां लगाई गई हैं। प्रत्येक उपयोगकर्ता को दस मिनट मिलते हैं। इसके बाद उसे रिकार्ड किया गया सन्देश सुनाई पड़ता है, “आपका समय समाप्त हुआ।” स्त्रियों के इ-शौचालय के सफाईकर्मी इनकी दस्ती सफाई सुबह-शाम करते हैं। यदि शौचालय में बिजली की शार्ट सर्किट हो जाए, तो शौचालय अपने आप बन्द हो जाता है और यह सूचना रख-रखाव इकाई (सेवा इकाई) के अनुवर्ती पटल पर चढ़ जाती है। ऑनलाइन अद्यतन प्रणाली (मोबाइल/वेब ऐप) के माध्यम से डाले गए सिक्कों की कुल संख्या, पानी की स्थिति, उपयोगकर्ताओं की कुल संख्या आदि विवरण बृहैननि/इरम साइंटिफिक सॉल्यूशन के रख-रखाव कार्यालय में अपने आप चढ़ जाते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि शौचालय के उपयोगकर्ताओं की संख्या कम है, क्योंकि बहुसंख्यक महिलाएं स्त्रियों के इ-शौचालय के बारे में अनजान हैं।

श्रीमती केशम्मा, गन्ने के रस की विक्रेता से बातचीत:

श्रीमती केशम्मा, आयु 40 वर्ष, गन्ने के रस की विक्रेता ने बताया कि बीडीएल-बृहैननि ने दिलसुख नगर बस अड्डे के प्लैटफार्म संख्या 1 के पास स्त्रियों का इ-शौचालय साल भर पहले लगवाया था। वह इस शौचालय का उपयोग तब से कर रही हैं, जब से यह लगाया गया है। उन्होंने बताया कि उन्हें पहले सार्वजनिक शौचालय में जाना पड़ता था। वह उनकी गन्ने के रस की दुकान से आधा किलोमीटर दूर है। यह उनके लिए और भी सुविधाजनक इसलिए है कि उन्हें वहाँ पन्द्रह-बीस मिनट तक कतार में लगना पड़ता था। फिर वे शौचालय बड़े गन्दे थे। उनका रख-रखाव खराब था। स्त्रियों के इ-शौचालय की स्थापना से साफ-सुथरे शौचालय तक उनकी पहुँच आसान हो गई है। वह इसका उपयोग नियमित रूप से करती हैं।

श्रीमती स्वप्ना, रूप निखारन से बातचीत:

श्रीमती स्वप्ना, आयु 40 वर्ष, रूप निखारन ने बताया कि अनेक स्त्रियां सार्वजनिक शौचालयों में जाने से इसलिए कतराती हैं कि वहाँ जाने से प्रतिष्ठा कम हो जाती है, निजता नहीं रह जाती और वे सुरक्षित नहीं हैं।

लेकिन,बीडीएल-बृहैननि की स्त्रियों का अनन्य इ-शौचालय लगाने की पहल से इन समस्याओं को बड़ी सीमा तक सुलझाने में सहायता मिली है। वह अपने रूप निखारालय जाते-जाते दिलसुख नगर बस अड्डे के स्त्रियों के इ-शौचालय में प्रायः जाती हैं। वह शौचालय की सुविधाओं से बड़ी सन्तुष्ट हैं।

प्रभाव:

यह पहल फरवरी 2017 में अमल में लाई गई। इसलिए इसके प्रभाव का अभी-अभी मापन जल्दबाज़ी होगी। उपयोगकर्ताओं के सन्तोष का अध्ययन किया गया है। स्त्रियों के इ-शौचालय में कायम साफ-सफाई से 90% उपयोगकर्ता अत्यन्त सन्तुष्ट हैं।

परियोजना 2 और 3: तेलंगाणा के सरकारी विद्यालयों में शौचालयों के लिए अविरल जल की व्यवस्था

1) तेलंगाणा राज्य के सरकारी विद्यालयों में शौचालयों के लिए अविरल जल की व्यवस्था
   स्थल: संगारेड्डी, नलगोण्डा, रंगारेड्डी ज़िले (पुराने ज़िला क्षेत्र), तेलंगाणा राज्य
   कार्यान्वियन में भागीदार: सर्व शिक्षा अभियान, तेलंगाणा राज्य
   बजट आवंटन: रु. 16.43 लाख
   खर्च बजट: रु. 16.43 लाख
2) आन्ध्र प्रदेश राज्य के सरकारी विद्यालयों में शौचालयों के लिए अविरल जल की व्यवस्था
   स्थल: विशाखापट्टणम् ज़िला, आन्ध्र प्रदेश राज्य
   बजट आवंटन: रु. 4.20 लाख
   खर्च बजट: रु. 4.20 लाख
   सरकारी विद्यालयों में अविरल जल की व्यवस्था की पहल पर बीडीएल ने दो कार्य किए
   क) नलों की कतार (पाँच से सात नलों की शृंखला) युक्त हाथ धोने की जगह का निर्माण
   ख) शौचालयों के लिए अविरल जल की व्यवस्था

जिन विद्यालयों का दौरा किया गया: कुल 4

क्रम सं.	**दौरा किया गया विद्यालय**	**छात्रों की संख्या**
1	एम पी पी एस स्कूल, बी जे आर नगर, काप्रा मण्डल, मेडचल ज़िला	111
2	एम पी पी एस स्कूल, मल्कारम, काप्रा मण्डल, मेडचल ज़िला	80
3	एम पी पी एस स्कूल, अरुंधती नगर, काप्रा मण्डल, मेडचल ज़िला	80
4	एम पी पी एस स्कूल, शान्तिनगर, हयातनगर मण्डल, मेडचल ज़िला	72

पणधारकों से आपसी चर्चा

बातचीत-1:

श्री जी रमेश, प्रधान अध्यापक

बी जे आर नगर, काप्रा मण्डल, मेडचल ज़िला, तेलंगाणा

भेंट की तारीख: 3-4-2018

बीडीएल से निर्मित टंकी में जड़े नलों की कतार युक्त हाथ धोने की जगह

श्री जी रमेश, प्रधान अध्यापक ने कहा कि बीडीएल ने स्कूली बच्चों के लिए पानी की टंकी में जड़े नलों की कतार युक्त हाथ धोने की जगह का निर्माण वर्ष 2016-17 में कराया था। स्कूली बच्चों को प्रशिक्षण दिया गया है कि हर बार खाने से पहले और खाने के बाद ही नहीं, शौचालय जाने के बाद भी हाथ धोने चाहिए। उन्हें यह स्वास्थ्यप्रद और आत्मशुचिता की आदत डाली गई। फ़िलहाल चार नल अच्छी और कामकाजी दशा में हैं।

चौथी कक्षा के छात्रों से बातचीत पर देखा गया कि स्कूली बच्चे हाथों की सफाई के लिए हाथ धोने की पानीदार जगह का नियमित रूप से उपयोग करते हैं।

बातचीत-2:

श्री लक्ष्मा रेड्डी, प्रधान अध्यापक

शान्तिनगर, हयातनगर मण्डल, मेडचल ज़िला, तेलंगाणा

भेंट की तारीख: 7-4-2018

श्री लक्ष्मा रेड्डी, प्रधान अध्यापक ने कहा कि बीडीएल ने स्कूली बच्चों के लिए पानी की टंकी में जड़े नलों की कतार युक्त हाथ धोने की जगह का निर्माण वर्ष 2016-17 में कराया था। इसके साथ ही विद्यालय

के शौचालयों के लिए अविरल पानी की व्यवस्था भी की थी। फ़िलहाल तीन नल अच्छी और कामकाजी दशा में हैं। सभी स्कूली छात्र पर्याप्त पानी युक्त साफ-सुथरे शौचालयों की सुविधा का लाभ उठा रहे हैं।

साई, महेश और राघवी पाँचवीं कक्षा के छात्र हैं। उनसे बातचीत पर पाया गया कि विद्यार्थी शौचालयों और हाथ धोने की जगह का नियमित रूप से उपयोग करते हैं। छात्र अब अच्छे स्वास्थ्य और स्वच्छ तन की आदतों के प्रति अधिक जागरूक हैं। विद्यालय के छात्रों और अध्यापकों ने बीडीएल के स्वच्छ विद्यालय अभियान की स्तुत्य पहल की प्रशंसा की।

परियोजना 4

तेलंगाना के सरकारी पाठशालाओं के शौचालयों का रखरखाव

स्थान: संगारेड्डी, नलगोंडा, रंगारेड्डी जिले, तेलंगाना राज्य

कार्यान्वियन भागीदार: सर्वशिक्षा अभियान, तेलंगाना राज्य

बजट आवंटन: रु.27.81 लाख

बजट खर्च: रु.27.81 लाख

इस पहल के लिए चयनित पाठशालाओं की कुल संख्या: 103

देखे गए पाठशालाओ की संख्या: 11

क्र.सं.	**देखे गए पाठशाला का नाम**	**पाठशाला के बच्चों की संख्या**
1	एम पी पी पाठशाला, बीजेआर नगर, काप्रा मंडल, मेडचल जिला	111
2	एम पी पी पाठशाला, मलकाराम, काप्रा मंडल, मेडचल जिला	80
3	एम पी पी पाठशाला, अरुंधती नगर, काप्रा मंडल, मेडचल जिला	80
4	एम पी पी पाठशाला शांतीनगर, हैथनगर मंडल, रंगारेड्डी जिला	72
5	एम पी पी पाठशाला राजीव ग्रुखकाल, हैथनगर मंडल, रंगारेड्डी जिला	30
6	एम पी पी पाठशाला, रविनारायण रेड्डी कॉलोनी, हायतनगर मंडल, रंगारेड्डी जिला	85
7	एम पी पी पाठशाला, मारिपली, हायतनगर मंडल, रंगारेड्डी जिला	40
8	जेड पी एच हाई पाठशाला सुल्तानपुर, अमीनपुर मंडल, संगारेड्डी जिला।	104
9	एम पी पी पाठशाला गोथमनगर, पटानचेरु मंडल, संगारेड्डी जिला	60
10	एम पी पी पाठशाला शांतीनगर, पटानचेरु मंडल, संगारेड्डीजिला	61
11	यूपीएस गांधीगुडा, अमीनपुर मंडल, संगारेड्डी दूर।	133

परियोजना5

आंध्र प्रदेश सरकारी पाठशालाओ के शौचालयों का रखरखाव

स्थान: विशाखापट्टनम जिला, राज्य आंध्रप्रदेश

कार्यान्वियन भागीदार: सर्व शिक्षा अभियान, तेलंगाना राज्य

बजट आवंटन: रु.2.25 लाख

बजट खर्च: रु.2.25 लाख

इस पहल के लिए चुने गए पाठशालाओं की कुल संख्या: 25

निरीक्षण गए पाठशालाओं की संख्या: 5

क्र.सं.	**देखे गए पाठशाला का नाम**	**पाठशाला के बच्चों की संख्या**
1	एमपीपी पाठशाला, मधुरमामिदी, जी माडुगुला मंडल, विशाखापट्टनम जिला	31
2	सरकारी पाठशाला पी एस (TW), कर्णिकलंका, माडुगुलामंडल, विशाखापट्टनम जिला	17
3	एम पी पी पाठशाला, बुरुगुवेदी, जी माडुगुला मंडल, विशाखापट्टनम जिला	1
4	सरकारी पाठशाला पी एस (TW), आगम्पाडू, जी.माडुगुला मंडल, विशाखापट्टनम जिला	72
5	सरकारी पाठशाला पीएस (TW), उबालागरुवु, जी.मदुगुलामंडल, विशाखापट्टनम जिला	1

बातचीत-1:

श्री राजरत्नम, उप कार्यपालक अभियन्ता

सर्व शिक्षा अभियान कार्यालय, हैदराबाद, तेलंगाणा

भेंट की तारीख: 2-4-2018

श्री राजरत्नम्, उप कार्यपालक अभियन्ता, सर्व शिक्षा अभियान, तेलंगाणा ने कहा कि बीडीएल के सहयोग से सर्व शिक्षा अभियान ने स्कूली शौचालयों की देख-रेख और स्कूली शौचालयों के विकास की अन्य गतिविधियां रंगारेड्डी, नलगोण्डा, संगारेड्डी (पुराने ज़िला क्षेत्र) के 103 सरकारी विद्यालयों में वर्ष 2016-17 के दौरान प्रारम्भ कीं।

उन्होंने आगे बताया कि स्कूली शौचालयों के रख-रखाव के लिए अविरल जल बड़ा महत्वपूर्ण पहलू है। भारत में बहुसंख्यक स्कूली शौचालय अविरल जल की समस्या के कारण ही कामकाजी दशा में नहीं हैं। इस समस्या से पार पाने और स्कूली शौचालयों की बेहतर देख-रेख के लिए सर्व शिक्षा अभियान ने ध्यान अविरल जल की व्यवस्था, पानी की टंकी में जड़े नलों से युक्त हाथ धोने की जगह, पर्याप्त अविरल जल की सुविधा और स्कूली शौचालयों में अन्य सुविधाओं की मरम्मतों पर केन्द्रित किया। बीडीएल के सहयोग से सर्व शिक्षा अभियान ने वर्ष 2016-17 में तेलंगाणा के 103 सरकारी विद्यालयों में स्कूली शौचालयों में विकास और मरम्मत की ये सारी गतिविधियां सम्पन्न कीं। सर्व शिक्षा अभियान तेलंगाणा में स्कूली शौचालयों के रख-रखाव के लिए सरकारी विद्यालयों को प्रति मास रु 3000/- देता है।

बातचीत-2:

श्री जी महादेव सिंह, प्रधान अध्यापक

मर्रिपल्ली, हयातनगर मण्डल, रंगारेड्डी ज़िला, तेलंगाणा

भेंट की तारीख: 7-4-2018

श्री जी महादेव सिंह, प्रधान अध्यापक ने कहा कि बीडीएल ने सर्व शिक्षा अभियान के माध्यम से वर्ष 2016-17 में स्कूली शौचालयों के रख-रखाव के लिए पैसा दिया था। विद्यालय ने भंगी नियुक्त किया है। वह शौचालय दिन में दो बार साफ करता है। विद्यालय के अध्यापकों और छात्रों की ओर से अच्छे रख-रखाव और पर्याप्त अविरल जल के कारण शौचालय साफ-सुथरे हैं। बीडीएल ने शौचालयों के दो खण्ड बनवाए हैं। प्रत्येक खण्ड में तीन मूत्रालय, भारतीय ढब की खुड्डी और वाश बेसिन है। चालीस स्कूली बच्चे पर्याप्त सुविधाओं से लैस इन शौचालयों का लाभ उठा रहे हैं।

विद्यालय ने बीडीएल से प्राप्त पैसे का उपयोग भंगी की पगार रु 2,500/- अदा करने और रु 500/- की लागत से स्वच्छता किट खरीदने के लिए भी किया है। उन्होंने स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत बीडीएल के श्लाघ्य प्रयासों की प्रशंसा की।

एम पी पी एस विद्यालय, मर्रिपल्ली, हयातनगर मण्डल, रंगारेड्डी ज़िला में स्कूली शौचालयों का रख-रखाव

बातचीत-3

प्राथमिक विद्यालय, गौतमी नगर, पटानचेरु मण्डल, संगारेड्डी ज़िला में चौथी और पाँचवीं कक्षा के छात्रों से बातचीत

विद्यालय के चौथी और पाँचवीं कक्षा के छात्रों से बातचीत पर पाया गया कि अधिकतर स्कूली बच्चे पर्याप्त पानी युक्त शौचालय की सुविधा का लाभ उठा रहे हैं। वे शौचालय के प्रयोग के बाद हाथ वाश बेसिन में धो रहे हैं। विद्यालय में कुल 60 छात्र इस शौचालय की सुविधा का नियमित रूप से लाभ उठा रहे हैं। वे इस सुविधा से बहुत सन्तुष्ट हैं।

टिप्पणियां:

- अधिकतर विद्यालयों में शौचालयों और हाथ धोने की जगह के लिए अविरल जल की सुविधा है।
- सभी विद्यालयों के शौचालयों में अविरल जल की बेहतर सुविधा उपलब्ध है।
- स्कूली बच्चे दोपहरी से पहले और दोपहरी के बाद तथा शौचालय के प्रयोग के बाद भी वाश बेसिन में हाथ धोते हैं।
- देखा गया कि बीडीएल की निधि का उपयोग भंगी की पगार और सफाई किट की खरीद के लिए किया गया, जिससे वर्ष 2016-17 के दौरान स्कूली शौचालयों का रख-रखाव किया जा सके।
- अधिकतर विद्यालयों में सफाई की स्थिति में बड़ा सुधार आया है।
- बहुसंख्यक स्कूली बच्चे पर्याप्त पानी युक्त शौचालयों में जाते हैं।
- अधिकतर विद्यालयों में शौचालय कामकाजी स्थिति और अच्छी दशा में हैं।
- अधिकतर विद्यालयों में भंगी शौचालयों को भली-भाँति साफ करते हैं।
- अधिकतर विद्यालयों में छात्र सफाई, पीने के सुरक्षित पानी और विद्यालय में स्वास्थ्य की अच्छी आदतों के प्रति कहीं अधिक सजग हैं।
- जी.मदगुल्ला मण्डल, विशाखापट्टणम् ज़िला में बीडीएल की ओर से निर्मित स्कूली शौचालयों में पानी की भारी समस्या है। वह इसलिए कि इस क्षेत्र में पानी है ही नहीं। फिर भी, स्कूली बच्चे नलकूप और जल के अन्य संसाधनों से पानी लाकर शौचालय की सुविधा का उपयोग करते हैं।
- समाज में अधिकतर पणधारकों ने बीडीएल की ओर से स्कूली शौचालयों के निर्माण और रख-रखाव की श्लाघनीय पहल की प्रशंसा की।

प्रभाव:

क्र।सं	**पाठशालाओ में बच्चों**	**संचालक& शिक्षकों**	**गाँव सरपंच& वुर्द**	**पाठशालाओ प्रबंध समिति**	**एसएसए अधिकारियों**
1	पाठशालाओ में बेहतर स्वच्छता सुविधाएं	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ

2	पाठशालाओ के बच्चों की बेहतर स्वास्थ्य और स्वच्छता	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
	पाठशालाओ में खुले शौचालय में घटाना	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
3	पाठशालाओ में स्वच्छ पानी, स्वच्छता और स्वच्छता की आदतों के बारे में जागरूकता में वृद्धि	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
4	पाठशालाओ शौचालयों में बेहतर चलनेवाली पानी की सुविधाएं	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
5	पाठशालाओ में बच्चों,शिक्षा छोड़ने में कमी	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
6	पाठशाला शौचालयों के बेहतर रखरखाव	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
7	कुल संतुष्टि स्तर	**ऊंचा**	**ऊंचा**	**ऊंचा**	**ऊंचा**

क्षेत्र-IV: शिक्षा

मध्याह्न भोजन योजना
स्थल:
i) संगारेड्डी ज़िला, तेलंगाणा राज्य
ii) विशाखापट्टणम् ज़िला, आन्ध्र प्रदेश राज्य
बजट आवंटन: 160.50 लाख रुपये
खर्च: 151.89 लाख रुपये
कार्यान्वियन में भागीदार: अक्षयपात्र
भेंट की तारीख: 10-4-2018

मध्याह्न भोजन योजना क्या है

मध्याह्न भोजन योजना भारत में लोकप्रिय स्कूली भोजन की योजना है। इसके अन्तर्गत कार्य-दिवसों में विद्यालयों में मुफ्त दोपहरी दी जाती है। देश में प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण

कार्यक्रमों में से एक है। इस कार्यक्रम का लक्ष्य है बच्चों को भूख और कुपोषण से बचाना, विद्यालयों में भरती और उपस्थिति बढ़ाना, सभी जातियों के बच्चों में आपसी हेल-मेल में सुधार और महिलाओं के लिए रोजगार के अवसरों के माध्यम से सामाजिक सशक्तीकरण।

भारत के विद्यालयों में मध्याह्न भोजन का लम्बा इतिहास है। सन् 1925 में मद्रासनगरनिगम में दीन-हीन बच्चों के लिए मध्याह्न भोजन योजना प्रारम्भ की गई थी। सन् 1980 के आसपास गुजरात,केरल, तमिलनाडु राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेश पुदुचेरि ने अपने-अपने संसाधनों से प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए पके-पकाए मध्याह्न भोजन को व्यापक रूप दे दिया। सन् 1990-91 तक मध्याह्न भोजन योजना को व्यापक या बड़े पैमाने पर कार्यान्वित करने वाले राज्यों की संख्या बढ़कर 12 हो गई थी। सन् 2001 में भारत के सर्वोच्च न्यायालय के "भोजन का अधिकार" पर ऐतिहासिक निर्णय और इस योजना के सुनियोजित कार्यान्वयन के बाद बड़े सकारात्मक परिणाम देखने में आए हैं।

वर्तमान स्थिति:

देश में लगभग तीन करोड़ बच्चे भूखे रह जाते हैं, क्योंकि वे मध्याह्न भोजन कार्यक्रम की परिधि के बाहर हैं और इस योजना का पैसा भी पूरा-पूरा खर्च नहीं किया जाता है। वर्ष 2016-17 में आवंटित रु. 9,700 करोड़ में से केवल रु. 8,964 करोड़ खर्च किए गए। विद्यालयों में भरती 13.2 करोड़ बच्चों में से 10.3 करोड़ ही मध्याह्न भोजन योजना का लाभ उठा रहे हैं। यह सूचना मानव संसाधन विकास मन्त्रालय को राज्य सरकारों से प्राप्त आँकड़ों के अनुसार है।

अक्षयपात्र के साथ बीडीएल का समझौता ज्ञापन

बीडीएल ने राज्य सरकार की मध्याह्न भोजन योजना में भागीदारी के लिए सर्वश्री अक्षयपात्र न्यास निधि के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। पटानचेरु मण्डल, मेदक ज़िला, तेलंगाणा राज्य के सरकारी विद्यालयों में पढ़ाई कर रहे 10,000 स्कूली बच्चों को और विशाखापट्टणम ज़िला, आन्ध्र प्रदेश में नगर निगम के विद्यालयों में 5,000 स्कूली बच्चों को मध्याह्न भोजन दिया जा रहा है।

बीडीएल-अक्षयपात्र भोजन वितरण वाहन

अक्षयपात्र न्यास निधि:

अक्षयपात्र न्यास निधि लाभकामी संगठन नहीं है। इसका मुख्यालय बेंगलूरु, भारत में है। यह संगठन सरकारी और सरकार से सहायता प्राप्त विद्यालयों में मध्याह्न भोजन योजना के कार्यान्वियन से कक्षाओं में भूख के उन्मूलन का प्रयास करता है। अलावा इसके, अक्षयपात्र का उद्देश्य यह भी है कि कुपोषण का प्रतिकार किया जाए और सामाजिक-आर्थिक रूप से दीन-हीन बच्चों के शिक्षा के अधिकार को सम्बल दिया जाए।

वर्ष 2000 से अक्षयपात्र अपने समस्त प्रयास इस ओर केन्द्रित कर रहा है कि स्कूल के दिनों में बच्चों को ताज़ा और पौष्टिक भोजन दिया जा सके। इस दिशा में अपनी पहुँच बढ़ाने की दृष्टि से अक्षयपात्र तकनीक का निरन्तर प्रयोग कर रहा है। अक्षयपात्र की रसोइयां सघन प्रौद्योगिकी से भरपूर हैं। उनमें न्यूनतम मानवीय सहायता से साढ़े चार घण्टे से भी कम समय में एक-सी गुणवत्ता का कम से कम 100,000 बच्चों का खाना पकाया जा सकता है। पका-पकाया धूल रहित भोजन इस उद्देश्य के विशेष वाहनों से गरमागरम वितरित किया जाता है।

पटानचेरु मण्डल, संगारेड्डी ज़िला, तेलंगाणा राज्य में बीडीएल सम्बलित मध्याह्न भोजन योजना का भौगोलिक क्षेत्र

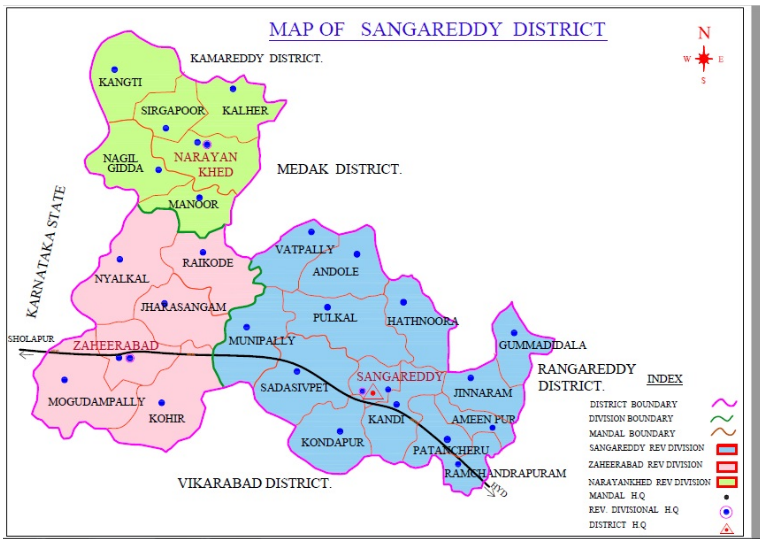

विद्यालय में पंजीयन में ज़बर्दस्त सुधार, कक्षाओं में उपस्थिति, विद्यालय में बढ़ी हुई भर्ती और स्कूली पढ़ाई बीच में छोड़ने की दर में गिरावट ऐसी मूर्त उपलब्धियां थीं कि बीडीएल और अक्षयपात्र सुविधाओं से वंचित बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा दे सकें।

मिड डे भोजन सूची रेखा-चित्र

क्र.सं.	**दिन**	**रेखा-चित्र**
1	सोमवार	चावल, हरीपत्ता की दाल और विशेष भोजन पदार्थ
2	मंगलवार	चावल, सांबर और विशेष भोजन पदार्थ
3	बुधवार	चावल, हरीपत्ता की दाल और विशेष भोजन पदार्थ
4	गुरुवार	चावल, सांबर और विशेष भोजन पदार्थ
5	शुक्रवार	चावल, टमाटर दाल और विशेष भोजन पदार्थ
6	शनिवार	सब्जी बिरयानी, दही अचार, दलचा और विशेष भोजन पदार्थ

पणधारकों से आपसी चर्चा:

मध्याह्न भोजन कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए 63 में से नौ विद्यालयों का और परियोजना के सभी पणधारकों का सर्वेक्षण किया गया। टीमों ने छात्रों से, अभिभावकों से और विद्यालय के प्रबंधन वर्ग से बातचीत की। पटानचेरु स्थित अक्षयपात्र न्यास निधि की रसोई का दौरा भी किया। सर्वेक्षण और आँकड़े इकट्ठे करने के लिए रचित प्रश्नावलियों और संकेन्द्रित सामूहिक चर्चा का प्रयोग साधनों के रूप में किया गया। नौ विद्यालयों के 89 छात्रों, 22 अभिभावकों और नौ प्रधान अध्यापकों से भेंट वार्ता की गई।

अधिकतर विद्यालय रसोईघर से पाँच से दस किलोमीटर की परिधि में स्थित हैं। इनकी औसत दूरी सात किलोमीटर है। भोजन की गुणवत्ता और ताज़गी बनाए रखने के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं की गई हैं। भोजन को विशेष कनस्तरों में पैक किया जाता और आपूर्ति-मार्ग के आधार पर अलग-अलग वाहनों से भेजा जाता है। गाड़ी में भोजन लादने का समय, गाड़ी की रवानगी और वापसी का समय समेत वाहन के संचलन के अद्यतन रिकॉर्ड रखे जाते हैं। भोजन की सुपुर्दगी के समय का मॉनिटरन नियमित रूप से किया जाता है। इसका सत्यापन विद्यालय के प्राधिकारियों से भी किया जाता है। विद्यालय के प्राधिकारियों के अनुसार, भोजन उन तक समय से काफ़ी पहले पहुँच जाता है और परोसने तक ताज़ा तथा गरमागरम बना रहता है।

टीम ने इन स्थलों पर आँकड़े प्रधान अध्यापक, अध्यापकों, विद्यालय के छात्रों और कुछ अभिभावकों से एकत्र किए। कुछ विद्यालयों का दौरा भोजन-अवकाश में किया गया, जिससे परोसे जा रहे भोजन की गुणवत्ता प्रत्यक्ष देखी जा सके। यह सुनिश्चित करने के लिए कि भोजन खाने योग्य है, विद्यालय के प्राधिकारी परोसगारी से पहले भोजन चख लेते हैं। यह भी देखा गया कि विद्यालय में छात्रों को पर्याप्त भोजन परोसा जा रहा है। यहाँ तक कि

उपलब्धता और माँग के आधार पर अतिरिक्त भोजन छात्रों को घर ले जाने दिया जा रहा है, जिससे वह बेकार न जाए और उनके परिवारों की यथा सम्भव सहायता की जा सके।

स्कूल-दौरे के विवरण

क्रम सं.	विद्यालय का नाम	दिनांक	जिनसे बातचीत की	कुल छात्र (लाभार्थी)
1	ज़िला परिषद हाईस्कूल, कन्या विद्यालय	10-4-2018	1. श्री आर प्रकाश, प्रधान अध्यापक 2. श्रीमती अरुणा, आया 3. श्रीमती सुजाता, शिक्षान्य कर्मचारी 4. 10 छात्र	254
2	ज़िला परिषद हाईस्कूल, सुल्तानपुर	10-4-2018	1. श्री मुरलीधर, प्रधान अध्यापक 2. 2 अभिभावक 3. 10 छात्र	104
3	एम पी पी एस सुल्तानपुर	10-4-2018	1. श्री उदय कुमार, प्रधानाध्यापक 2. 6 छात्र	63
4	एम पी पी एस गौतमी नगर	10-4-2018	1. श्रीमती रजनी, अध्यापिका 2. 4 अभिभावक 3. 13 छात्र	65
5	यू पी एस गंडीगुड़ा	10-4-2018	1. प्रधान अध्यापक 2. 8 छात्र	133
6	एम पी पी एस शान्तिनगर	10-4-2018	1. श्री पी वेंकटेश, प्रधान अध्यापक 2. 16 छात्र	61
7	ज़िला परिषद हाईस्कूल, रुद्रारम किष्टारेड्डी पेट	10-4-2018	1. श्रीमती रमादेवी, प्रधानाध्यापिका 2. श्री जीवनदास, विद्यालय स्टाफ़	252

			3. 6 अभिभावक	
8	ज़िला परिषद हाइ स्कूल, किष्टरेड्डीपेट	10-4-2018	1. श्री डी राव, प्रधान अध्यापक 2. 4 अभिभावक 3. 8 छात्र	130
9	एम पी पी एस चिटकोलु	10-4-2018	1. श्री देवदास, प्रधान अध्यापक 2. 6 अभिभावक 3. 12 छात्र	370

जांच परिणाम :

1) मुख्य अध्यापक सर्वे परिणाम- 63 पाठशालाओं से 9 मुख्य अध्यापको के साथ बातचीत आयोजित किए गए

क्र.सं.	**प्राचल**	**सर्वेक्षण परिणाम**
1	मिड डे मील योजना की उपलब्धता बीडीएल-अक्षयपात्र मिड डे से पहले भोजन	कुल 9 योजना के सर्वेक्षण कि एलेकिन गुणवत्ता एवं प्रक्रिया से कोई भी संतुष्ट नहीं था
2	क्या भोजन की खपत के बाद बच्चों के बीमार गिरने के कोई मामले हैं	एक भी मामला दर्ज नहीं किया गया है
3	छात्रों में पर्याप्त भोजन से संतुष्टि	88.89%
4	बीडीएल-अक्षयापात्र के बारे में जागरूकता पहल	100%

2) छात्र सर्वेक्षण के परिणाम: 9 पाठशालाओं में 100 छात्रों के साथ बातचीत हुई

क्र। सं	**प्राचल**	**सर्वेक्षण परिणाम**
1	घर के भोजन से बेहतर	87.64% छात्रों ने कहा कि मिड डे भोजन घर के भोजन से बेहतर है
2	भोजन सेवा की नियमितता	100% नियमितता
3	स्वच्छता का रखरखाव	98.88% छात्रों स्वच्छता स्तर से संतुष्ट थे
4	सम्पूर्ण संतुष्टि	95.51 छात्र मिड डे भोजन से संतुष्ट हैं
5	बीडीएल-अक्षयपात्र के बारे में जागरूकता	96.63% छात्रों को बी डी एल अक्षयपात्र के बारे में पता हैं

3) अभिभावक सर्वेक्षण के परिणाम: 9 पाठशालाओ में 100 छात्रों के साथ बातचीत हुई

क्र.सं	**प्राचल**	**सर्वेक्षण परिणाम**
1	क्या उनके बच्चे भोजन की गुणवत्ता से खुश हैं?	भोजन की गुणवत्ता के साथ कुल 90.91% माता-पिता ने कहा कि उनके बच्चे खुश हैं
2	क्या स्वास्थ्य में कोई सुधार है	कुल 81.82 % माता-पिता ने कहा कि बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार है
3	क्या आप बीडीएल के बारे में सब कुछ जानते हैं	कुल 31.82% माता-पिता बी डी एल के बारे में जानते है
4	आपकी कुल संतुष्टि स्तर क्या है	कुल 95.46% माता-पिता मिड डे मील कार्यक्रम से संतुष्ट हैं

मिड डे मील का प्रभाव योजना:

सर्वेक्षण के निष्कर्ष

मध्याह्न भोजन योजना का प्रभाव

क्रम सं.	मानदण्ड	प्रभाव
1	पंजीयन की दर	सर्वेक्षण के परिणाम बताते हैं कि चार विद्यालयों में पंजीयन की दर छह से आठ प्रतिशत तक बढ़ गई है। तीन विद्यालयों में यह पाँच से सात प्रतिशत तक तनिक घट गई है और दो विद्यालयों में जस की तस रही है। पंजीयन की दर समग्रतः दो से तीन प्रतिशत बढ़ गई है।
2	छात्रों की उपस्थिति	मध्याह्न भोजन छात्रों की उपस्थिति के आधार पर परोसा जाता है। उपस्थिति अनुमानतः 86% है। अधिकतर प्रधान अध्यापकों ने सूचित किया है कि बीडीएल-अक्षयपात्र के सहयोग से मध्याह्न भोजन प्रारम्भ किए जाने के बाद उपस्थिति में सुधार आया है।
3	छात्रों का पोषण-स्तर	सभी विद्यालयों के प्रधान अध्यापकों ने स्वास्थ्य-रिपोर्ट के आधार पर बताया है कि छात्रों के पोषण-स्तर में सुधार आया है।

सुलतानपुर, पटानचेरु मण्डल, संगारेड्डी ज़िला में अक्षयपात्र मध्याह्न भोजन

निष्कर्ष/टिप्पणियां

- अध्ययन से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि पणाधारकों के सन्तोष, बच्चों के पोषण स्तर में सुधार, उपस्थिति में सुधार और पंजीयन में सकारात्मकता के मामले में इस परियोजना का धनात्मक प्रभाव पड़ा है।
- अधिकतर विद्यालयों ने सूचित किया है कि मध्याह्न भोजन योजना के कारण उनके यहाँ दोपहर बाद की उपस्थिति में ख़ासा सुधार आया है। मध्याह्न भोजन में उपाहार भी सम्मिलित है।
- अक्षयपात्र न्यास निधि उपकरणों से लैस है, पेशेवर है और बच्चों के लिए भोजन पकाने, पहुँचाने और सुपुर्द करने में पोषण और संरक्षा के सभी दिशानिदेशों का पालन करती है।
- बच्चों के पास भोजन करने विशेष के लिए कोई अलग जगह नहीं है।
- अक्षयपात्र मध्याह्न भोजन योजना के प्रारम्भ होने से पहले प्रधान अध्यापक, अध्यापक और अन्य कर्मचारियों का ध्यान भोजन-सामग्री की खरीद, भोजन पकाने और तैयार भोजन परोसने पर लगा रहता था। यह परिस्थिति विद्यालय के कार्यकलापों और अच्छी पढ़ाई के आड़े आती थी। अक्षयपात्र मध्याह्न भोजन योजना के बाद से अध्यापकों को कक्षाओं में पढ़ाने और विकास की अन्य गतिविधियों के लिए पर्याप्त समय मिल रहा है।
- अधिकतर प्रधान अध्यापकों ने बताया कि मध्याह्न भोजन का वाहन विद्यालय में प्रतिदिन समय पर पहुँच जाता है। बच्चों को भोजन दोपहर बाद एक से दो बजे के बीच परोस दिया जाता है।

- स्कूली बच्चों को भोजन परोसने से पहले प्रधान अध्यापक और अध्यापक उसे चख लेते हैं। यदि भोजन के स्वाद और गुणवत्ता में परिवर्तन दिखाई दे, तो वे अक्षयपात्र के अधिकारियों को तुरन्त सूचना देते हैं। अक्षयपात्र के फील्ड अधिकारी भी विद्यालयों का दौरा नियमित रूप से करते हैं। वे मध्याह्न भोजन कार्यक्रम के बारे में अध्यापकों, बच्चों और अभिभावकों से प्रतिसूचना लेते हैं।

- ज़िला परिषद हाइ स्कूलों में मध्याह्न भोजन कार्यक्रम का मॉनिटरन विद्यालय भोजन समिति करती है। वह सुनिश्चित करती है कि स्कूली बच्चों को भोजन ढंग से परोसा जाए और प्रयास करती है कि भोजन की बरबादी कम हो। समिति में एक अध्यापक और नवीं-दसवीं कक्षा से चार छात्र प्रतिनिधि होते हैं। प्राथमिक विद्यालयों में मध्याह्न भोजन का मॉनिटरन आया और अध्यापक करते हैं।

- अधिकतर विद्यालय बच्चों को रिवर्स ऑस्मोसिस का सुरक्षित पेय जल उपलब्ध नहीं कराते। मध्याह्न भोजन के समय बच्चे नलकूप/नल का पानी पीते हैं।

- बहुसंख्यक विद्यालयों में तरकारी की बिरयानी और पुलिहोरा बच्चों के सबसे मनपसन्द आहार हैं।

- अधिसंख्यक छात्र, अभिभावक और अध्यापक उपलब्ध कराए जा रहे भोजन की गुणवत्ता और मात्रा से सन्तुष्ट हैं।

स्कूली बच्चों के बीच मध्याह्न भोजन का वितरण

सुझाव:

- बहुसंख्यक अध्यापकों,बच्चों और अभिभावकों ने इस सुझाव पर बल दिया कि वर्तमान उपाहारों में कुरकुरे,बिस्कुट,चिकोड़ी और मुरुकु के स्थान पर फल,चना, फल्ली की पट्टी,तुवुला पट्टी और मिठाई रखी जाए।
- वर्तमान आहार-सूची में अण्डे जोड़े जा सकते हैं।
- विभिन्न सब्जियों और अचारों पर भी विचार किया जाए।
- सब्जियां स्थानीय ढंग से पकाई जाएं,जिससे बच्चे अच्छी तरह खा सकें।

मध्याह्न भोजन कार्यक्रम – पणधारकों से आपसी चर्चा

श्री आर. प्रकाश,वरिष्ठ प्रधान अध्यापक

ज़िला परिषद हाइ स्कूल,कन्या विद्यालय,पटानचेरु

भेंट की तारीख: 10-4-2018

श्री आर प्रकाश,वरिष्ठ प्रधान अध्यापक, ज़िला परिषद हाईस्कूल ने कहा कि बीडीएल-अक्षयपात्र छठी से दसवीं कक्षा के 255 स्कूली बच्चों को मध्याह्न भोजन उपलब्ध करा रहे हैं। पके-पकाए भोजन का वितरण विद्यालयों को प्रति दिन सुबह 10:00 से 10:30 बजे के बीच किया जाता है। भोजन को गरम रखने के लिए विशेष पैकिंग में, धूल-मिट्टी से मुक्त, विशेष वाहनों से भेजा जाता है। भोजन प्रति दिन दोपहर बाद 1.00 बजे परोसा जाता है। विद्यालय में छात्र भोजन समिति भोजन-संग्रह के लिए बच्चों की प्रणालीबद्ध कतार की व्यवस्था करती है। इस समिति में एक अध्यापक और नवीं-दसवीं कक्षा के छात्र प्रतिनिधि होते हैं। भोजन करने के बाद छात्र हाथ और प्लेटें धोने के लिए भी कतार में लगते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि स्कूली बच्चों को पर्याप्त भोजन दिया जाता है और अन्न की बरबादी नाममात्र की है। पूर्व-निर्धारित आहार-सूची का कड़ाई से पालन किया जाता है और राष्ट्रीय स्तर का अनुपालन बखूबी किया जाता है। दाल-भात, साम्बर, तरकारी भात और दही चटनी अक्षयपात्र मध्याह्न भोजन के प्रमुख पकवान हैं। बच्चों के लिए उपाहार में प्रति दिन चिकोड़ी, मुरुकु और बिस्कुट भी परोसे जाते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि पहले विद्यालय बीच में ही छोड़ देने वाले बच्चों में प्रायः प्रवासी परिवार होते थे। वे भिन्न-भिन्न उद्योगों में मजूरी करते थे। आय का स्तर नीचे होने से दो जून का खाना जुटाने के लिए परिवार के सभी सदस्यों को मेहनत-मजूरी करनी पड़ती थी। बहुसंख्यक प्रवासी परिवार भी बच्चों को विद्यालय भेजने लगे

हैं,क्योंकि उन्हें वहाँ भर पेट भोजन मिल सकता है और वे पढ़ाई तथा सुपरिणामों में रुचि दर्शाने लगे हैं। ये सारे के सारे सकारात्मक परिवर्तन मध्याह्न भोजन की बदौलत सम्भव हो पाए हैं।

उन्होंने सुझाव दिया कि भोजन सामग्री मे विविधता बढ़ाई जा सकती है, जिससे बच्चे भली भाँति खा सकें और भोजन की एकरसता न रहे।

पाँचवीं कक्षा के छात्रों से बातचीत
अनुराधा, अंजी रेड्डी, चरण, शिव और आदीश
एम पी पी एस चिटकोलु
भेंट की तारीख: 10-4-2018

पाँचवीं कक्षा के छात्रों अनुराधा, अंजी रेड्डी, चरण, शिव और आदीश से बातचीत पर पाया गया कि बहुसंख्यक बच्चे मध्याह्न भोजन नियमित रूप से कर रहे हैं। उनका मनपसन्द आहार है तरकारी की बिरयानी। उसने कहा कि मुरुकु, कुरकुरे, बिस्कुट, चिगोड़ी जैसे उपाहारों के बदले फल, मिठाई, फल्ली की पट्टी, नुवुला पट्टी, चना आदि दिए जा सकते हैं। बेहतर पोषण की दृष्टि से इनमें अण्डे जोड़े जा सकते हैं। बीडीएल-अक्षयपात्र मध्याह्न भोजन से अधिकतर छात्र सन्तुष्ट हैं।

प्रभाव का विश्लेषण:

क्र. सं.	**प्राचल**	**छात्र**	**माता-पिता**	**प्रमुख मास्टर & शिक्षकों की**	**ग्रामीणों**
1	मिड डे मील योजना शुरू करने के बाद प्रवेश की संख्या में वृद्धि	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
2	मिड डे मील योजना शुरू करने के बाद छात्रों की उपस्थिति में वृद्धि	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
3	पाठशाला छोड देने में कमी	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
4	बच्चों को पर्याप्त मात्रा में भोजन दिया जाता है	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
5	पाठशालाओ के बच्चों की स्वास्थ्य स्थितियों में सुधार	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
6	बच्चों के प्रदर्शन में सुधार	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
7	खाद्य स्वाद और गुणवत्ता	अच्छा	अच्छा	अच्छा	अच्छा
	कुल संतुष्टि स्तर	**बहुत अधिक**	**बहुत अधिक**	**बहुत अधिक**	**बहुत अधिक**

परियोजना-2: विद्यालय का फर्नीचर

गतिविधि का नाम: नलगोण्डा और सूर्यापेट ज़िलों में सरकारी विद्यालयों के लिए स्कूली फर्नीचर

स्थल: नार्कट पल्ली, नलगोण्डा, चिलकुरु, तिप्पर्ती, चिट्याल

आवंटित बजट: 20 लाख रुपये

खर्च बजट: 9.75 लाख रुपये

कार्यान्वियन में भागीदार: केन्द्रीय कारागार, चंचलगुड़ा, हैदराबाद

देश के नवीनतम राज्य तेलंगाणा ने बन्दियों के आर्थिक सशक्तीकरण के लिए अनेक कदम उठाए हैं। कारागार में ही बनाई गई मदों के विपणन से लेकर पेट्रोल पम्प चलाने तक बन्दी अपने-अपने मनपसन्द क्षेत्र में छाप छोड़ रहे हैं और जेल विभाग के हित आय का दोहन कर रहे हैं आर्थिक गतिविधि प्रारम्भ करने के लिए कैदियों को खूब बढ़ावा दिया जा रहा है। इसमें स्टील की कुर्सियों, लकड़ी के फर्नीचर, साबुन, पूजन सामग्री, कालीन, चादरों और तौलियों से लेकर बेकरी के सामान तक का उत्पादन सम्मिलित है।

जेल में रहते और जेल से रिहाई के बाद बन्दी-जीवन को अधिक सार्थक और उपयोगी बनाने के उद्देश्य से उन्हें विभिन्न हुनर सिखाए जा रहे हैं, जिससे रिहाई के बाद वे समाज में पुनः खप सकें। लम्बी अवधि के बन्दियों को विविध गतिविधियों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। छोटी अवधि के बन्दियों को राजमिस्त्री, नलकारी, बिजली के तार बिछाने और घरू बिजली के तार बिछाने जैसे कार्य सिखाए जा रहे हैं। भारत सरकार का उद्यम राष्ट्रीय निर्माण अकादमी बन्दियों को ये हुनर सिखा रहा है।

जीवन-सुधार और समाज में कैदियों के पुनर्वास के उद्देश्य से सुधार की आधुनिक संकल्पनाएं विविध कार्यक्रमों की सुविधा देती हैं। इनमें से कुछ हैं व्यक्तिगत और सामूहिक उपचार सत्र, शिक्षा, दस्तकारी का प्रशिक्षण, रख-रखाव के कार्य और अन्य मनोरंजक गतिविधियां। इससे बन्दियों को नए-नए हुनर सीखने और स्वाभिमान से प्रतिष्ठित जीवन यापन में सहायता मिली है। बीडीएल ने निसादा के अन्तर्गत वर्ष 2016-17 में बन्दियों के पुनर्वास और सुधार कार्यक्रम के अंग के रूप में केन्द्रीय कारागार, चंचलगुड़ा, हैदराबाद को नलगोण्डा और सूर्यापेट ज़िलों के पाँच मण्डलों में 1300 दो दराज़ी स्कूली बेंच बनाने का कार्यादेश दिया था।

श्री वीरस्वामी,प्रशासनिक अधिकारी,चंचलगुड़ा जेल से भेंट-वार्ता:

श्री वीरस्वामी,प्रशासनिक अधिकारी,चंचलगुड़ा जेल ने कहा कि बीडीएल ने निसादा के अन्तर्गत बन्दियों के पुनर्वास और सुधार कार्यक्रम के भाग के रूप में केन्द्रीय कारागार, चंचलगुड़ा, हैदराबाद को नलगोण्डा और सूर्यापेट ज़िलों के पाँच मण्डलों में 1300 दो दराज़ी स्कूली बेंच बनाने का कार्यादेश दिया था। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य केन्द्रीय कारागार के बन्दियों को विविध हुनर सिखाना है, जिससे वे समाज में फिर खप सकें। यह कौशल विकास कार्यक्रम बन्दियों की सहायता पैसा कमाने और उनके अपने परिवारों की मदद में भी करता है। यह उन्हें कोई न कोई हुनर सिखा देता है, जो अन्ततः उनके पुनर्वास में सहायक हो।

उन्होंने आगे बताया कि 650 दो दराज़ी मेज़ें (स्कूली बेंच) बनाने में 45 बन्दी लगे रहे। यह परियोजना छह महीने में सम्पन्न हो गई। वर्ष 2017-18 में 1300 दो दराज़ी मेज़ें नर्काटपल्ली, चिट्याल, नलगोण्डा, तिप्पर्ती और चिलुकुरु मण्डल के ज़िला परिषद हाइ स्कूलों को सौंप दी गईं। परियोजना के दौरान केन्द्रीय कारागार ने हुनरमंद बन्दियों को रु.50/- और अकुशल बन्दियों को रु. 30/- दिहाड़ी अदा की। सभी 45 बन्दियों ने मन लगाकर काम किया और परियोजना सफलतापूर्वक सम्पन्न की। अधिकतर बन्दियों ने यह कमाई अपने-अपने परिवार को भेज दी।

उन्होंने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा, “खाली दिमाग शैतान का घर।” बन्दियों को इस परिस्थिति से बचाने के लिए केन्द्रीय कारागार उन्हें कौशल विकास, मनोरंजन और शिक्षा की विविध गतिविधियों में व्यस्त रखता है। इस प्रकार की पहल से बन्दियों का रवैया बदल सकता है, उनका चरित्र-निर्माण हो सकता है और उनमें अनुशासन आ सकता है। ये सभी गतिविधियां जेल से रिहाई के बाद बन्दियों के लिए बड़ी सहायक होंगी।

सरकारी विद्यालयों को बीडीएल से उपलब्ध कराया गया फर्नीचर

ज़िला परिषद हाइ स्कूल, चिट्याल: 130 दो दराज़ी बेंच

ज़िला परिषद हाईस्कूल, नार्कटपल्ली: 98 दो दराज़ी बेंच+ज़िप हाईस्कूल,अम्मनबोलु – 32

ज़िला परिषद हाईस्कूल, नलगोण्डा: 130 दो दराज़ी बेंच

ज़िला परिषद हाईस्कूल, चिलुकुरु: 130 दो दराज़ी बेंच

ज़िला परिषद हाईस्कूल, तिप्पर्ती: 130 दो दराज़ी बेंच

ज़िला परिषद हाईस्कूल,चिट्याल और नार्कटपल्ली को बीडीएल से प्रदत्त दो दराज़ी बेंचें

श्री रवीन्द्र, मण्डल शिक्षा अधिकारी ने कहा कि बीडीएल ने ज़िला परिषद हाईस्कूल,चिट्याल को 130 दो दराज़ी बेंचें उपलब्ध कराई थीं। ये बेंचें कक्षा में छात्रों के बैठने के लिए सुविधाजनक हैं। इनमें स्कूली बच्चों की पुस्तकें रखने की जगह है और पुश्ता भी। इन बेंचों की व्यवस्था के बाद बच्चों को श्यामपट्ट भी कहीं अच्छी तरह दिखाई देता है और वे पढ़ाई-सिखाई के दौरान कक्षा में अब सक्रियता से भाग लेते हैं। बच्चे कक्षा में पहले बेदराज़ और बेपुश्ता बेंचों पर बैठते थे। वे बड़ी कष्टप्रदथीं और लिखने के लिए पर्याप्त जगह भी न थी। यही वह कारण था कि कक्षाओं में बैठे बच्चे शारीरिक-मानसिक दबाव पाल लेते थे और कक्षा में सिखलाई की प्रक्रिया में सक्रियता से भाग न लेते थे। इस दुःखदायी परिस्थिति से बच्चों की पढ़ाई गड़बड़ा जाती थी।

उन्होंने आगे कहा कि चिट्याल मण्डल में ज़िला परिषद हाईस्कूल एस एस सी का परीक्षा केन्द्र भी है। दसवीं कक्षा के लगभग 300 बच्चे हर साल इस केन्द्र में सार्वजनिक परीक्षा लिखते हैं। विद्यालय के प्रधान अध्यापक को परीक्ष्य छात्रों के लिए बेंच-कुर्सियां किराए पर लेनी पड़ती थीं, ताकि बच्चे परीक्षा में लिख सकें। बीडीएल के सकरुण प्रयास से विद्यालय की फर्नीचर की समस्या हल हो गई है। यह साज-सामान विद्यालय की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए पर्याप्त है। उन्होंने विद्यालय को दो दराज़ी फर्नीचर उपलब्ध कराने के बीडीएल के भगीरथ प्रयास की सराहना की।

आपसी चर्चा

श्री के नरसिंह, मण्डल शिक्षा अधिकारी, नार्कटपल्ली मण्डल और

श्री श्रीनिवास रेड्डी, प्रधान अध्यापक, ज़िला परिषद हाइ स्कूल, नार्कटपल्ली से भेंट वार्ता

चिट्याल मण्डल, नलगोण्डा ज़िला

भेंट की तारीख: 9-4-2018

कक्षाएं: छठी से दसवीं

स्कूली बच्चों की संख्या: 339 छात्र

श्री के नरसिंह, मण्डल शिक्षा अधिकारी, नार्कटपल्ली मण्डल ने कहा कि बीडीएल ने ज़िला परिषद हाइ स्कूल, नार्कटपल्ली को 98 दो दराज़ी बेंचें और ज़िला परिषद हाईस्कूल, अम्मनब्रोलु, नार्कटपल्ली मण्डल को 32 दो दराज़ी बेंचें उपलब्ध कराई थीं। इससे पहले ज़िला परिषद हाईस्कूल, नार्कटपल्ली में आठवीं से दसवीं कक्षा के छात्र बेदराज़-बेपुश्ता बेंचों पर बैठते थे और छठी-सातवीं कक्षा के छात्र फर्श पर। स्कूली ढाँचे, विशेष रूप से पढ़ाई की बेंचों और कुर्सियों के अभाव में शैक्षिक कार्यक्रमों के आयोजन, सार्वजनिक परीक्षाओं के आयोजन, बैठकों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन में विद्यालय ढेर सारी समस्याओं का सामना करता था। छात्र भी न ध्यान केन्द्रित कर पाते थे न कक्षा में सक्रियता से भागीदारी ही। बीडीएल की बेहतरी की पहल से शैक्षिक ढाँचे की सारी समस्याएं हल हो गई हैं।

ज़िला परिषद हाईस्कूल, चिट्याल में आठवीं कक्षा के छात्रों सोनु कुमार, पी वाई एल एन स्वामी, दिनेश, भार्गवी, नव्य तेजश्री और नदीम से बातचीत में पाया गया कि छात्र अब दो दराज़ी बेंचों पर बैठते हैं और समापक परीक्षा में आराम से लिखते हैं। उन्होंने यह तथ्य साझा किया कि छात्र परीक्षा में लिखने के लिए पहले फर्श पर बैठ जाते थे। इस प्रकार फर्श पर बैठकर परीक्षा में लिखना कष्टप्रद होता है। इससे छात्र का लेखन-कौशल भी प्रभावित होता है। विद्यालय को अब बीडीएल से पर्याप्त फर्नीचर मिल गया है तो छात्र बड़े प्रसन्न हैं। वे कक्षा में पढ़ाई बहुत लगन से करते हैं। अपने लिए अच्छी किस्म की दो दराज़ी बेंचें उपलब्ध कराने पर छात्रों ने बीडीएल की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

एकल तिपाई- इससे पहले कक्षा के कमरे जेड पी एच उच्च् पाठशालाओ नार्कटपल्ली में एकल तिपाई पर बैठे छात्र

अवलोकन अँड जांच परिणाम :

- यह बी डी एल द्वारा एक अद्‌भुत पहल थी।इस पहल मे दो महत्वपूर्ण विषय हैं।

1) सामाजिक जिम्मेदारी और मनोबल की बेहतर भावना के साथ सुधारित और पुनर्वासित अभियुक्त

2) नालगोंडा और सूर्यपेट जिलों के५ मंडल जेड पी एच पाठशालाओं को पर्याप्त शिक्षा बुनियादी ढांचा

(दोहरीडिस्क्स**)** प्रदान की गई।

- इस बुनियादी ढांचे की सुविधा से 1500 पाठशालाओ के बच्चों को लाभान्वित किया गया था और 45 कैदियों के जेलवार्ड नियोजित कौशल के साथ प्रदान किए गए थे।

संतुष्टि

क्र. सं.	**पैरामीटर**	**छात्र**	**माता-पिता**	**प्रमुख मास्टर & शिक्षकों की**	**मिद्ध दोष**
1	बैठने में आराम बढ़ाया	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
2	कक्षा में बेहतर एकाग्रता	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
3	कैदियों के लिए बेहतर आजीविका	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
4	कैदियों का पुनर्वास	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
5	कुल संतुष्टि स्तर	बहुत अधिक	बहुत अधिक	बहुत अधिक	बहुत अधिक

क्षेत्र-IV: सुरक्षित पेय जल

निसादा परियोजना: सुरक्षित पेय जल परियोजना

क्षेत्र: पीने का पानी

स्थल: नारायणपुर, जनगाँव, पीपल पहाड़

ज़िला: यादाद्री

नान्दी न्यास निधिक्या है

नान्दी न्यास निधि सार्वजनिक धर्मार्थ न्यास है। इसकी स्थापना सन् 1998 में की गई थी। इसका अभियान था गरीबी का उन्मूलन डॉ. के. अंजी रेड्डी इस संगठन के संस्थापक अध्यक्ष थे। इस समय श्री आनन्द महिन्द्रा इस संगठन के प्रधान हैं। नान्दी नई पीढ़ी का सामाजिक संगठन है। यह पीने के सुरक्षित पानी, बाल विकास और सम्पोष्य आजीविका के क्षेत्र में नवोन्मेषी, किफायती और टिकाऊ समाधान उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य कर रहा है। इन क्षेत्रों में नान्दी न्यास निधि की पहल ने भारत के 13 राज्यों के कुछ सबसे पिछड़े अंचलों के करीब-करीब तीस लाख लोगों के जीवन को कहीं न कहीं लाभान्वित किया है।

आधार रेखा अध्ययन के परिणाम:

गाँव में कच्चे पानी की उपलब्धता और संदूषण, पीने के पानी के वर्तमान स्रोत तथा स्थानीय शासी निकाय से प्राप्त सहकार और सम्बल जैसे मानदण्डों के आधार पर गाँवों में परियोजना की आवश्यकता के विश्लेषण के लिए प्रारम्भिक फील्ड मूल्यांकन अध्ययन किया गया। नलगोण्डा ज़िला आम तौर पर इस बात के लिए जाना जाता है कि वहाँ अधिसंख्य आबादी लगभग दशकों से फ्लुओरोसिस से ग्रस्त है। यह रोग भू-जल में अत्यधिक फ्लुओराइड के संदूषण से होता है। इससे जोड़ों का दर्द, घुटने के विकार और दाँतों की समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। सामुदायिक जल उपचार केन्द्रों से लोगों को पीने का सुरक्षित पानी मिलने में भारी सहायता मिली है। इससे जन-स्वास्थ्य पर फ्लुओराइड संदूषण के दुष्प्रभावों की आगे रोकथाम हो गई है।

क्रम सं.	रासायनिक मानदण्ड	अनुमेय सीमाएं	जनगाँव		नारायणपुर		पीपल पहाड़	
			RW	PW	RW	PW	RW	PW
1	घुले हुए कुल ठोस पदार्थ	500 mg/lt	1486	55	1640	55	1080	62
2	कुल कड़ापन	200 mg/lt	690	10	860	10	580	28
3	कुल क्षारतत्व	200 mg/lt	810	40	925	40	610	28
4	फ्लुओराइड	1 mg/lt	2	≤0.1	2	≤0.1	1।2	≤0.1

बीडीएल– नान्दी न्यास निधि के संचालन की कार्य-प्रणाली:

बीडीएल और नान्दी न्यास निधि ने सन् 2012 में नलगोण्डा ज़िले के तीन गाँवों में पीने का पानी के संयन्त्रों की स्थापना, परिचालन और रख-रखाव के लिए तीन साल के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए थे। तीन सामुदायिक जल केन्द्रों (साज के=सीडब्ल्यूसी) की स्थापना के लिए नान्दी न्यास निधि को पूँजी लागत के रूप में रु.79,24,148/- प्राप्त हुए थे। अक्तूबर 2015 में बी डी एल और नान्दी न्यास निधि के बीच समझौता ज्ञापन को तीन और बरस के लिए आगे बढ़ा दिया गया। समझौता ज्ञापन के अनुसार, बीडीएल ने संयन्त्रों के तीन वर्षों तक परिचालन और रख-रखाव के लिए रु.16.20 लाख की राशि आवंटित की है। प्रत्येक साज के रख-रखाव के लिए नान्दी न्यासनिधि को बीडीएल से हर महीना रु.1,55,000/- मिलते हैं। शेष लागत परिष्कृत जल की बिक्री से उगाही जाती है। प्रत्येक साज केपर प्रति मास रख-रखाव की लागत रु.38000/- आती है। इसमें परिचालक की पगार,बिजली का बिल,खपने वाले सामान और ऊपरी खर्च सम्मिलित हैं।

नारायणपुर जल संयन्त्र से पानी भरती हुई महिलाएं

जनगाँव जल संयन्त्र –- एटीएम जल कार्ड

जल संयन्त्र

- **मशीनरी**— संदूषित जल के उपचार के लिए यूवी एवं यूएफ प्रौद्योगिकी युक्त रिवर्स ऑस्मोसिस प्रणाली
- **ढाँचा**–- बना-बनाया ढाँचा और भण्डारण टंकियां -- पाँच-पाँच सौ लीटर क्षमता की दो टंकियां

सामुदायिक जल सेवा तक पहुँचने वालों की संख्या

संयन्त्र का नाम	2014-2015	2015-2016	2016-2017
जनगाँव	2626	3386	3600
पीपलपहाड़	2433	1862	1000
नारायणपुर	3204	3235	3000

यह सुनिश्चित करने के लिए कि लोग नियमित रूप से पीने के सुरक्षित पानी का ही उपयोग करें, सामुदयिक जल केन्द्र प्रत्येक ग्राहक को महीने के प्रारम्भ में प्रि-पेयड़ कार्ड जारी करता है। प्रत्येक कार्ड पर मास भर में 20 लीटर के 30 कनस्तर लिए जा सकते हैं। चार-पाँच सदस्यों के परिवार की दैनिक औसत खपत 20 लीटर पानी का कनस्तर होती है।

जल उपचार संयन्त्र के रख-रखाव की प्रक्रिया

नान्दी न्यास निधि की कार्यान्वयन सहभागी है नान्दी सामुदायिक जल सेवा उनके पास उनकी अपनी परिचालन, रख-रखाव और गुणवत्ता टीम है। यह सेवा साजके के परिचालन और रख-रखाव की ज़िम्मेदारी कम से कम सात से दस वर्षों के लिए लेती है। इस अवधि में गुणवत्ता जाँच और अन्य सेवाएं नीचे दर्ज बारम्बारिता के आधार पर की जाती हैं।

क्र।स।	**गतिविधि**	**कार्यक्रम**	**विवरण**
1	निवारक रखरखाव	महीने	स्पॉट सुधारों और सर्विसिंग के लिए योजना पर उपकरण, पौधे का निरीक्षण
2	नष्टकरना रखरखाव	जब आवश्यक हो	किसी भी मशीनरी से संबंधित टूटने के लिए समस्या समाधान
3	संयंत्र स्वच्छता	त्रैमासिक	पौधे, पाइप काम और टैंक के नसबंदी के लिए गतिविधि

4	कच्चे पानी में रासायनिक विश्लेषण	सालाना	कच्चे पानी के स्रोत से एक लीटर पानी का नमूना एकत्र किया जाएगा और विश्लेषण के लिए एन एबी एल प्रमाणित प्रयोगशाला में भेजा जाएगा।
5	रासायनिक विश्लेषण उत्पाद पानी	सालाना	एक लीटर पानी का नमूना वितरण प्रकार से एकत्र किया जाएगा और विश्लेषण के लिए एक एन ए बी एल प्रमाणित प्रयोगशाला को भेज दिया जाएगा। पीने के पानी के लिए आई एस ओ १०५००मानकों का पालन किया जाता है। नवीनतम परीक्षण परिणाम उपयोगकर्ताओं के संदर्भ के लिए सी डब्ल्यू सी में उपलब्ध कराए जाएंगे।
6	माइक्रो बियल परीक्षण	त्रैमासिक	
7	जलाशय सफाई	सफाई	कच्चे और उत्पादक की सफाई और नसबंदी की सफाई

अमल करने की कार्य-प्रणाली

नान्दी न्यास निधि के पास विशेषज्ञ फील्ड टीम है। यह परियोजना की गतिविधियों के कार्यान्वियन में उनकी सहायता करती है। सबसे निचले स्तर पर तकनीशियन है। वह नियमित रूप से संयन्त्रों का दौरा करता है। फिर खराबी विश्लेषक है। वह क्षेत्र अधिकारी के रूप में छह से दस संयन्त्रों का प्रभारी होता है। इसके बाद समूह प्रधान होता है। वह संयन्त्रों के समूह का प्रभार लेता है। शीर्ष पर अंचल प्रधान होता है। समूचे अंचल का प्रभारी। सामुदायिक जल सेवाओं का सुचारु कामकाज सुनिश्चित करने के लिए गाँव के स्तर पर जल केन्द्र परिचालक और सामुदायिक संयोजक भरती किए गए हैं। समुदाय संयोजक पीने के सुरक्षित पानी के बारे में जागरूकता के प्रचार-प्रसार के लिए विस्तृत सामुदायिक संग्रहण गतिविधियों का आयोजन भी करता है।

संयन्त्र को ग्राम समुदाय के सुपुर्द करने की भावी योजनाएं

ग्राम समुदाय के साथ नान्दी न्यास निधि सामान्यतः सात से दस बरसों तक जुड़ी रहती है। यह अवधि सामुदायिक जल केन्द्र के उद्घाटन की तारीख से प्रारम्भ होती है। ग्राम समुदाय के साथ समझौता ज्ञापन की अवधि के अन्त में यह निर्णय सभी पक्षों की सहमति से किया जाता है कि साजके को ग्राम समुदाय के सुपुर्द किया जाना है या फिर निधि की ओर से साज के परिचालन और रख-रखाव की अवधि आगे बढ़ाई जानी है। साज के ग्राम समुदाय के सुपुर्द किए जाने की स्थिति में नान्दी न्यास निधि के साथ गाँववासियों का सात साल का सिखलाई अनुभव स्वशासन, जल से जुड़े मामलों में विवाद सुलझाने और आस्ति प्रबन्धन में काम आता है।

लाभार्थियों की प्रतिसूचना:

नान्दी न्यास निधि घर-घर अभियान के दौरान लाभार्थियों से नियमित आधार पर प्रतिसूचना इकट्ठा करती है। उनका निःशुल्क फोन नम्बर भी कूपनों पर दिया गया है। ग्राहक प्रतिसूचना और शिकायतों के लिए इसका उपयोग कर सकते हैं।

नोट: तारीख संयन्त्र परिचालक देते हैं।

अवलोकन और जांच परिणाम :

बीडीएल-नांदी फाउंडेशन आर वो जल संयंत्र संचालन और उपयोग विवरण

क्र.सं.	रासायनिक प्राचल	जनगाँव	नारायणपुर	पिपाला पह्द
1	कच्चे जल भंडारण क्षमता	5000 लि.	5000 लि.	5000 लि.
2	फ़िल्टर की गई जल संग्रहण क्षमता	5000 लि.	10000 लि.	5000 लि.
3	1 घंटे में जल शोधन	2000 लि.	2000 लि.	2000 लि.
4	औसत घंटे यंत्र का चालन	**5** घंटे	6 घंटे	1 घंटा
5	बरसात और सर्दी के मौसम के दौरान पौधे का औसत उपयोग	5000 -6000 लि.सलीटर (250-300 कैन औसत)	6000 -7000 लीटर (300-350 कैन औसत)	(800-1000 लीटर (40-50 कैन औसत)
6	गर्मी के मौसम के दौरान पौधे का औसत उपयोग	8000 लीटर (400 कैन औसत)	9000 लीटर (450 कैन औसत)	12000 लीटर (60 कैन औसत)
7	जारी किए गए कार्ड की कुल संख्या	350 पंजीकृत कार्ड	**550** कार्ड	80 पंजीकृत कार्ड
8	पौधों के लिए कच्चे पानी का स्रोत	बोअर का पानी	बोअर का पानी	बोअर का पानी
9	सामुदायिक जल सेवाओं के समय	सुबह 6.00 बजेसे 10.00 बजे और शाम 5.00 बजे से 9.00 बजे तक	24 X 7 सेवा (ए टी एम सुविधा के कारण)	सुबह 6.00 बजे से 10.00 बजे और शाम 5.00 बजे से 9.00 बजे तक

10	आर वो ओ पानी के २० लीटर के लिए कीमत	रु. 2	रु. 3	रु. 2

ध्यान दें : संयंत्र चालक द्वारा समाचार प्रदान किया गया है

- आर वो जल संयंत्रों की स्थापना से पहले, ग्रामीण विभिन्न स्रोतों से पानी का उपयोग करेंगे, जो पीने के उद्देश्य के लिए उपयुक्त नही थे।
- इन गांवों में अन्य नए आर वो पानी संयंत्रों की स्थापना के कारण पीपल पहड और नारायणपुर गांवों के पानी के पौधों में उपभोक्ताओं की संख्या में कमी आई है।
- आर वो इलाज वाले पानी की खपत के बाद अधिकांश ग्रामीणों को संयुक्त दर्द और ऑस्टियो आर्थराइटिस से राहत मिली।
- अधिकांश ग्रामीण लोग सुरक्षित पेयजल, स्वच्छता और अच्छे स्वास्थ्य के लाभों से अवगत हैं।
- पानी का स्वाद बहुत बेहतर है और यह बेहद सस्ती है।
- ए टी एम जल मशीन सुविधा हाल ही में जनसमुदाय जल केंद्र में स्थापित की गई हैं। ए टी एम जलकार्ड को स्वाइप करके किसी भी समय ग्रामीण पेय सुरक्षित पेयजल सुविधा का उपयोग करते हैं।
- बी डी एल- नांदी फ़ौंडेशन सामुदायिक जल सेवाओं से अधिकांश ग्रामीण लोग बेहद संतुष्ट हैं।

फील्ड में दौरे के ब्योरे:

लोक उद्यम संस्थान (लोउसं) की टीम ने 23 मार्च 2018 को यादाद्रि ज़िले में नारायणपुर, जनगाँव और पीपल पहाड़ नामक तीन गाँवों का दौरा किया। लक्ष्य था सुरक्षित पेयजल के सम्बन्ध में अलग-अलग पणधारकों से बातचीत, उनकी प्रतिक्रिया जानना और यह पता लगाना कि वे पीने के सुरक्षित पानी का उपयोग आखिर क्यों करते हैं। लोउसं की टीम ने विभिन्न पणधारकों से सघन साक्षात्कारों के साथ-साथ संकेन्द्रित सामूहिक चर्चा सत्रों का आयोजन भी किया। टीम ने हर एक गाँव में कोई बीस-पच्चीस लाभार्थियों से बातचीत की। दौरे में कुल 63 लाभार्थियों से चर्चा की गई।

प्राथमिक समाचार विश्लेषण और फ़लीताए

कुल लाभार्थियो का सर्वेक्षण - 63

1 जल सेवा की गुणवत्ता:

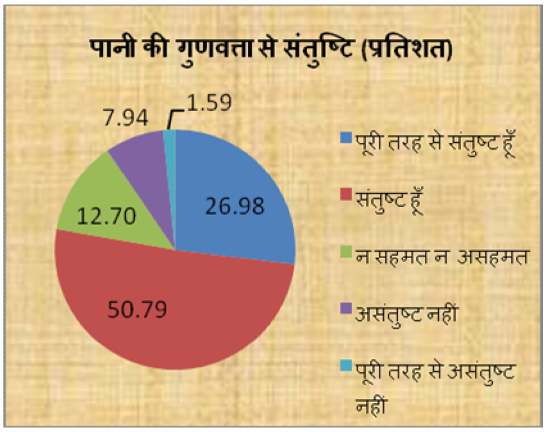

हक़ीक़त से पता चलता है कि अधिकांश पानी के उपयोगकर्ता पानी की गुणवत्ता से संतुष्ट हैं।

2 **मूल्य से संतुष्टि**

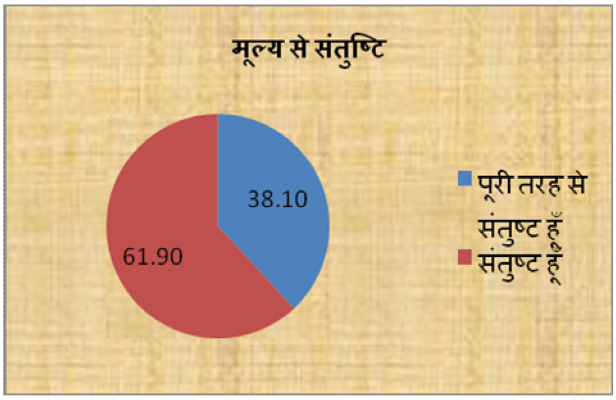

हक़ीक़त यह स्पष्ट करता है कि अधिकांश पानी उपयोगकर्ता २० लीटर के मूल्य से संतुष्ट हैं।

3 कुल सेवा से संतुष्टि

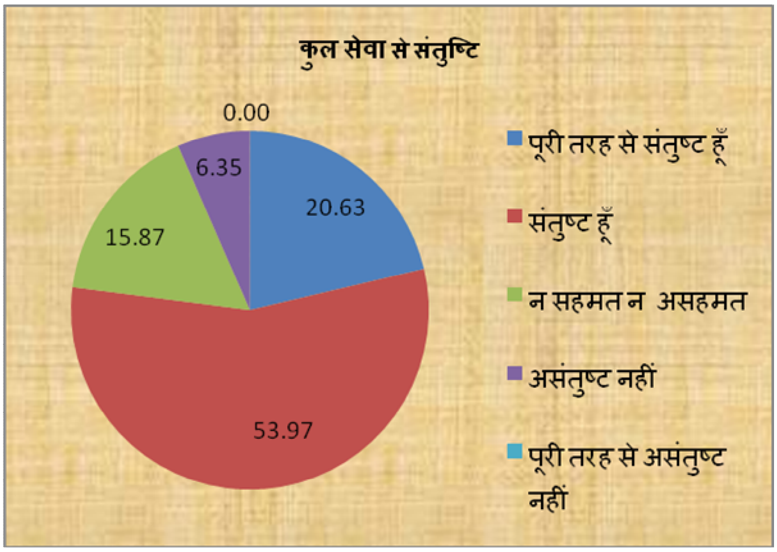

बहुसंख्य में उपयोगकर्ता समग्र समुदाय जल सेवा से संतुष्टि

4 बी डी एल के बारे में जागरूकता

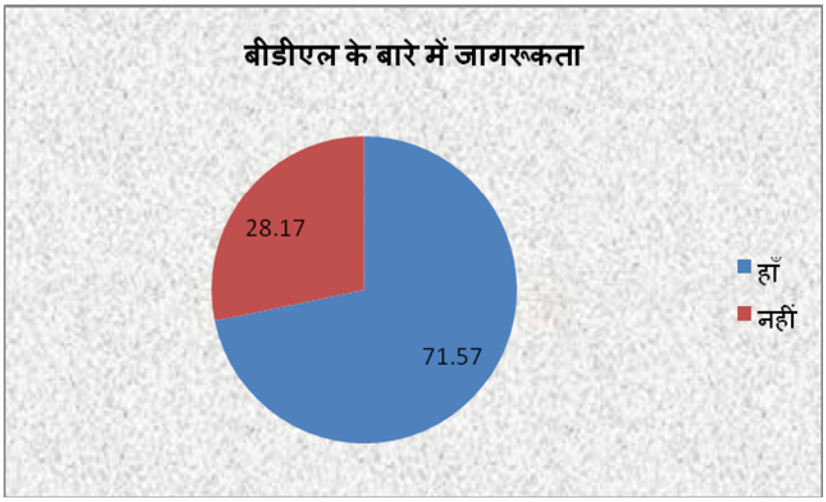

बहुसंख्य में उपभोक्ता बी डी एल जलसेवा के बारे में जानते हैं

कार्यान्वयन तंत्र:

नांदी फाउंडेशन की एकविशेष क्षेत्रीय टीम है जो परियोजना गतिविधियों के कार्यान्वयन के साथ उनकी मदद करती है। सबसे निचले स्तर पर, उनके पास एक टेकनीशियन है जो नियमित रूप से पौधों का दौरा करता है, एक ब्रेक डाउन विश्लेषक, एक क्षेत्रीय अधिकारी जो 6-10 पौधों का प्रभारी होता है, एक क्लस्टर हेड जो पौधों

के समूह का प्रभारी होता है और अंततः एक जो नलसिर कुलक्षेत्र का प्रभारी है। गाँव के स्तर पर, सामुदायिक जल सेवाओं की सुचारु कार्य सुनिश्चित करने के लिए एक जल केंद्र प्रचालक और एक समुदाय आयोजक की भर्ती की गई है। सामुदायिक आयोजक भी सुरक्षित पेयजल के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए व्यापक सामुदायिक आंदोलन गतिविधियों का आयोजन करता है।

गाँव समुदाय को पौधे के हाथों की भविष्य की योजनाएं

गाँव समुदाय के साथ नांदी फ़ौडेशन की भागीदारी आमतौर पर सामुदायिक जल केंद्रों के उद्घाटन की तारीख से शुरू होने वाली सात से दस वर्ष की अवधि के लिए होती है। समुदाय के साथ समझौता ज्ञापन के अंत में – सी डब्ल्यू सी को समुदाय में सौंपने का निर्णय या सी डब्ल्यू सी के संचालन और रखरखाव के साथ जारी रखने के लिए नांदी के साथ अपने एम ओ यू का विस्तार; सभी पार्टियों की पारस्परिक सहमति के आधार पर बनाया गया है। सी डब्ल्यू सी को सौंपने के मामले में – नांदी के साथ ७ वर्षों का सीखने का अनुभव उन्हें आत्म-शासन के पहलुओं, पानी से संबंधित मुद्दे और परिसंपत्ति प्रबंधन पर विवाद समाधान में मदद करता है।

लाभार्थियों प्रतिक्रिया:

नांदी फ़ौंडेशन दरवाजे के दौरान नियमित आधार पर लाभार्थियों से फीडबैक एकत्र करता है अभियान। उनके कूपन पर एक टोल फ्री नंबर भी है जो ग्राहक प्रतिक्रिया और शिकायतें देने के लिए उपयोग कर सकते हैं।

अवलोकन और जांच परिणाम :

बी डी एल-नांदी फाउंडेशन आर वो जल संयंत्र संचालन और उपयोग विवरण

क्र.सं.	रासायनिक प्राचल	जनगाँव	नारायणपुर	पिपाला पहद
1	कच्चे जल भंडारण क्षमता	5000 लि.	5000 लि.	5000 लि.
2	फ़िल्टर की गई जल संग्रहण क्षमता	5000 लि.	10000 लि.	5000 लि.
3	1 घंटे में जल शोधन	2000 लि.	2000 लि.	2000 लि.
4	औसत घंटे यंत्र का चालन	**5** घंटे	6 घंटे	1 घंटा
5	बरसात और सर्दी के मौसम के दौरान पौधे का औसत उपयोग	5000 -6000 लि. लीटर (250-300 कैन औसत)	6000-7000 लीटर (300-350 कैन औसत)	(800-1000 लीटर(40-50 कैन औसत)
6	गर्मी के मौसम के दौरान पौधे का औसत उपयोग	8000 लीटर (400 कैन औसत)	9000 लीटर (450 कैन औसत)	12000लीटर (60 कैन औसत)

7	जारी किए गए कार्ड की कुल संख्या	350 पंजीकृत कार्ड	**550** कार्ड	80 पंजीकृत कार्ड
8	पौधों के लिए कच्चे पानी का स्रोत	बोअर का पानी	बोअर का पानी	बोअर का पानी
9	सामुदायिक जल सेवाओं के समय	सुबह 6.00 बजेसे 10.00 बजे और शाम 5:00 बजेसे 9:00 बजे तक	24 X 7 सेवा (ए टी एम सुविधा के कारण)	सुबह 6:00 बजेसे 10:00 बजे और शाम 5:00 बजे से 9:00 बजे तक
10	आर वो ओ पानी के २० लीटर के लिए कीमत	रु. 2	रु. 3	रु. 2

ध्यान दें : संयंत्र चालक द्वारा समाचार प्रदान की गया है

अमल करने की कार्य-प्रणाली

नान्दी न्यास निधि के पास विशेषज्ञ फील्ड टीम है। यह परियोजना की गतिविधियों के कार्यान्वियन में उनकी सहायता करती है। सबसे निचले स्तर पर तकनीशियन है। वह नियमित रूप से संयन्त्रों का दौरा करता है। फिर खराबी विश्लेषक है। वह क्षेत्र अधिकारी के रूप में छह से दस संयन्त्रों का प्रभारी होता है। इसके बाद समूह प्रधान होता है। वह संयन्त्रों के समूह का प्रभार लेता है। शीर्ष पर अंचल प्रधान होता है। समूचे अंचल का प्रभारी। सामुदायिक जल सेवाओं का सुचारु कामकाज सुनिश्चित करने के लिए गाँव के स्तर पर जल केन्द्र परिचालक और सामुदायिक संयोजक भरती किए गए हैं। समुदाय संयोजक पीने के सुरक्षित पानी के बारे में जागरूकता के प्रचार-प्रसार के लिए विस्तृत सामुदायिक संग्रहण गतिविधियों का आयोजन भी करता है।

संयन्त्र को ग्राम समुदाय के सुपुर्द करने की भावी योजनाएं

ग्राम समुदाय के साथ नान्दी न्यास निधि सामान्यतः सात से दस बरसों तक जुड़ी रहती है। यह अवधि सामुदायिक जल केन्द्र के उद्घाटन की तारीख से प्रारम्भ होती है। ग्राम समुदाय के साथ समझौता ज्ञापन की अवधि के अन्त में यह निर्णय सभी पक्षों की सहमति से किया जाता है कि साजके को ग्राम समुदाय के सुपुर्द किया जाना है या फिर निधि की ओर से साजके के परिचालन और रख-रखाव की अवधि आगे बढ़ाई जानी है। साजके को ग्राम समुदाय के सुपुर्द किए जाने की स्थिति में नान्दी न्यास निधि के साथ गाँववासियों का सात साल का सिखलाई अनुभव स्वशासन, जल से जुड़े मामलों में विवाद सुलझाने और आस्ति प्रबन्धन में काम आता है।

लाभार्थियों की प्रतिसूचना:

नान्दी न्यास निधि घर-घर अभियान के दौरान लाभार्थियों से नियमित आधार पर प्रतिसूचना इकट्ठा करती है। उनका निःशुल्क फोन नम्बर भी कूपनों पर दिया गया है। ग्राहक प्रतिसूचना और शिकायतों के लिए इसका उपयोग कर सकते हैं।

नोट: तारीख संयन्त्र परिचालक देते हैं।

- गाँवों में रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्रों की स्थापना से पहले गाँववासी पानी विभिन्न स्रोतों से लाते थे। उन स्रोतों से प्राप्त पानी पीने योग्य न था।
- पीपल पहाड़ और नारायणपुर गाँवों के जल संयन्त्रों के उपभोक्ताओं की संख्या में कमी इसलिए आई है कि इन गाँवों में रिवर्स ऑस्मोसिस जल के और भी नए-नए संयन्त्र लग गए हैं।
- रिवर्स ऑस्मोसिस से परिष्कृत पानी पीने से बहुतेरे गाँव वालों को जोड़ों के दर्द और हड्डियों में छेदों की शिकायत से राहत मिली है।
- बहुसंख्यक ग्रामीण सुरक्षित पेय जल, सफाई और अच्छे स्वास्थ्य के लाभों से परिचित हैं।
- पानी का स्वाद कहीं बेहतर है और यह नितान्त सस्ता है।
- पानी की एटीएम मशीन जनगाँव सामुदायिक जल केन्द्र में हाल ही में लगाई गई है।
- बी डी एल-नान्दी न्यास निधि सामुदायिक जल सेवा से बहुसंख्यक गाँववासी अत्यन्त सन्तुष्ट हैं।

फील्ड में दौरे के ब्योरे:

लोक उद्यम संस्थान (लोउसं) की टीम ने 23 मार्च 2018 को यादाद्रि ज़िले में नारायणपुर, जनगाँव और पीपल पहाड़ नामक तीन गाँवों का दौरा किया। लक्ष्य था सुरक्षित पेय जल के सम्बन्ध में अलग-अलग पणधारकों से बातचीत, उनकी प्रतिक्रिया जानना और यह पता लगाना कि वे पीने के सुरक्षित पानी का उपयोग आखिर क्यों करते हैं। लोउसं की टीम ने विभिन्न पणधारकों से सघन साक्षात्कारों के साथ-साथ संकेन्द्रित सामूहिक चर्चा सत्रों का आयोजन भी किया। टीम ने हर एक गाँव में कोई बीस-पच्चीस लाभार्थियों से बातचीत की। दौरे में कुल 63 लाभार्थियों से चर्चा की गई।

पणधारकों से आपसी चर्चा

श्रीमती राधा, समुदाय संयोजक से भेंट वार्ता

जनगाँव, नारायणपुर मण्डल

भेंट की तारीख: 23-3-2018

श्रीमती राधा जनगाँव में बी डी एल-नान्दी न्यास निधि सामुदायिक जल केन्द्र के लिए समुदाय संयोजक के रूप में पिछले तीन साल से काम कर रही हैं। उन्होंने बताया कि सामुदायिक जल केन्द्र का प्राथमिक उद्देश्य है गाँव में लोगों को पीने का सुरक्षित पानी उपलब्ध कराके जलजन्य रोगों में कमी लाना और जोड़ों का दर्द, हड्डियों में छेद पड़ जाने जैसे अन्य रोगों की रोकथाम। वह गाँववासियों को पीने के सुरक्षित पानी, सफाई और अच्छे स्वास्थ्य की आदतों का महत्व समझाती हैं। इस प्रयोजन के लिए वह स्कूली बच्चों, स्वयं-सहायता समूहों, गणमान्य ग्रामीणों और पंचायत के सदस्यों के सहयोग से भिन्न-भिन्न रैलियों का आयोजन करती हैं। वह ऐसे लोगों के घर नियमित रूप से जाती हैं, जिन्होंने संयन्त्र से परिष्कृत पानी पीना बन्द कर दिया है। वह इसके कारणों का पता लगाती हैं। उन्हें पीने के सुरक्षित पानी के महत्व की सीख देती हैं। वह सुनिश्चित करती हैं कि वे फिर से पीने का सुरक्षित पानी पीने लगें। उन्होंने आगे बताया कि गाँव की 95% गिरस्तियां सुरक्षित पेय जल ही पी रही हैं और गाँववासियों के लिए बी डी एल-नान्दी न्यास निधि की पहल बहुत लाभदायक रही है।

श्री नरसिंह, रिवर्स ऑस्मोसिस संयन्त्र परिचालक से भेंट वार्ता

जनगाँव, नारायणपुर मण्डल

भेंट की तारीख: 23-3-2018

श्री नरसिंह, रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र परिचालक के रूप में इस संयन्त्र की स्थापना के समय से ही कार्य कर रहे हैं। वह सुनिश्चित करते हैं कि रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र सुचारु ढंग से काम करे। उन्होंने बताया कि बीडीएल-नान्दी न्यास निधि की ओर से स्थापित पानी की एटीएम मशीन से गाँव में पीने का सुरक्षित पानी चौबीसों घण्टे मिलने की व्यवस्था हो गई है। जल संयन्त्र परिचालक नए उपयोक्ताओं को नए एटीएम कार्ड देता

है और वर्तमान उपयोक्ताओं के कार्ड रिचार्ज करता है। उदाहरण के लिए, रु। 90/- के रिचार्ज से 30 बार 20 लीटर पानी लिया जा सकता है। एटी एम कार्ड को मशीन में जितने बार स्वाइप करें, उतने बार 20 लीटर पानी निकल आता है। इसके बाद मशीन पानी की निकासी अपने आप रोक देती है। इससे सुनिश्चित हो जाता है कि पानी बेकार न जाए।

उन्होंने आगे कहा कि गाँववासी पहले ग्राम पंचायत से प्राप्त नलकूप का जल पीते थे या कृष्णा नदी का पानी (सागर जल)। ग्राम पंचायत से प्राप्त नलकूप के जल में फ्लुओरायड की मात्रा बहुत अधिक थी। वह पीने योग्य न था। नदी का पानी भी प्लास्टिक और रसायनों जैसे विभिन्न प्रदूषकों से संदूषित था। वह कभी-कभी तो रंगीन विषैला पानी बन जाता था। इससे पेचिस, टॉयफायड, विषम ज्वर, सर्दी-खाँसी जैसे रोग हो जाते थे। गाँव में रिवर्स ऑस्मोसिस पेय जल संयन्त्र लगाए जाने से स्वास्थ्य की इन सभी समस्याओं पर लगाम कस गई है।

लाभार्थियों से आपसी चर्चा

लाभार्थी-1

श्री वेंकटेश, बुनकर
कार्ड सं. 249
आयु: 30 वर्ष
परिवार में कुल सदस्य: 04
स्वास्थ्य की समस्याएं: शून्य
नारायणपुर, यादाद्रि ज़िला
भेंट की तारीख: 23-3-2018

नारायणपुर गाँव के निवासी श्री वेंकटेश, बुनकर, आयु 30 वर्ष ने कहा कि बीडीएल-नान्दी न्यास निधि ने पीने के सुरक्षित पानी का रिवर्स ऑस्मोसिस संयन्त्र छह बरस पहले लगाया था। जब से संयन्त्र लगा है, वह रिवर्स ऑस्मोसिस से परिष्कृत जल ही ले रहे हैं। इससे पहले उनका परिवार ऐसा पानी निजी सप्लाईकर्ता से खरीदता था। वह 20 लीटर पानी के कनस्तर के रु। 10/- लेता था। पानी समुचित रूप से शुद्ध न होने के कारण वह उसकी गुणवत्ता से सन्तुष्ट न थे। उन्हें रिवर्स ऑस्मोसिस जल न मिलने पर कभी-कभी तो ग्राम पंचायत के नलकूप का पानी भी पीना पड़ जाता था।

उन्होंने आगे कहा कि ग्राम पंचायत के नलकूप के पानी में फ्लुओरायड भारी मात्रा में मिला रहता था। इस कारण बहुतेरे गाँववासी हड्डियों या दाँतों के फ्लुओरोसिस रोग से ग्रस्त रहते थे। रिवर्स ऑस्मोसिस जल संयन्त्र की स्थापना के बाद स्वास्थ्य की ये सभी समस्याएं नियन्त्रण में हैं। उनके परिवार में चार सदस्य हैं। वह रिवर्स

ऑस्मोसिस जल संयन्त्र से प्रति दिन दो रुपये में 20 लीटर पानी ले आते हैं। बी डी एल-नान्दी सामुदायिक जल पहल से वह बहुत सन्तुष्ट हैं।

जनगाँव में पानी की रिवर्स ऑस्मोसिस एटीएम मशीन से चौबीसों घण्टे पीने के पानी की व्यवस्था

लाभार्थी-2

श्री रामुलु, निजी अध्यापक
आयु: 50 वर्ष
कार्ड सं। 35
परिवार में कुल सदस्य: 04
स्वास्थ्य की समस्याएं: शून्य
जनगाँव

श्री रामुलु, आयु 48 वर्ष, निजी अध्यापक के रूप में कार्य कर रहे हैं। वह रिवर्स ऑस्मोसिस से परिष्कृत जल तब से ले रहे हैं, जब से यह संयन्त्र गाँव में लगा है। वह घरेलू कामकाज और पीने के लिए पहले ग्राम पंचायत से प्राप्त नलकूप का पानी लेते थे या कृष्णा नदी का पानी। दोनों ही जल पीने योग्य न थे। ग्राम पंचायत के नलकूप के पानी में फ्लुओरायड भारी मात्रा में मिला रहता था। इस कारण बहुतेरे गाँववासी अनेकों रोगों से ग्रस्त रहते थे। स्वयं उन्हें भी जोड़ों का दर्द और हड्डियों में छेद का रोग झेलना पड़ा। वह जब से रिवर्स ऑस्मोसिस से परिष्कृत जल लेने लगे हैं, जोड़ों के दर्द से राहत मिली है। वह बच्चों को बढ़ावा देते हैं कि सफाई और अच्छे स्वास्थ्य के महत्व को देखते हुए रिवर्स ऑस्मोसिस से परिष्कृत जल ही पिया करें। उन्होंने बी डी एल-नान्दी न्यास निधि की सामुदायिक जल सेवा की भगीरथ पहल को खूब सराहा।

लाभार्थी-3
श्रीमती बी.कमलम्मा, खेती-बाड़ी
आयु: 45 वर्ष
कार्ड सं.120
परिवार में कुल सदस्य: 05
स्वास्थ्य की समस्याएं: जोड़ों का दर्द

कृषि व्यवसायी श्रीमती बी.कमलम्मा, आयु 45 वर्ष रिवर्स ऑस्मोसिस कृत पानी तब से ले रही हैं, जब से यह संयन्त्र गाँव में लगा है। इससे पहले वह ग्राम पंचायत की ओर से प्राप्त या कृष्णा नदी का पानी लेती थीं, लेकिन उसकी गुणवत्ता से सन्तुष्ट न थीं। उन्हें जोड़ों का दर्द रहने लगा था। वह चिकित्सा के लिए बार-बार अस्पताल जाती थीं, लेकिन आराम नहीं आ रहा था। उन्हें फ्लुओरायड संदूषित पानी जो पीना पड़ता था! उन्हें रिवर्स ऑस्मोसिस कृत पानी के सेवन के बाद जाकर कहीं थोड़ी-बहुत राहत मिली। वह बीडीएल-नांदी न्यास निधि की इस द्रवित पहल से अत्यन्त सन्तुष्ट हैं।

सामुदायिक प्रतिभगिता और अनुकूलनशीलता, जिसमें तीन वर्ष से अधिक लगे

- अधिकतर गाँववासी खेती-बाड़ी में सुबह से शाम तक दिहाड़ी पर काम करते हैं। दिन में मंजूरी पर जाने के समय साजके से पानी लेने में समय लग जाता है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि लोगों को पीने का पानी सातों दिन और चौबीसों घण्टे मिलता रहे, बीडीएल ने साजके को स्वचल इकाइयों से लैस करके उन्नत दर्जा दे दिया है।
- संयन्त्र में बिजली सुबह 3:00 बजे से 6:00 बजे तक और दोपहर 12:00 से 2:00 बजे तक छह घण्टे के लिए ही रहती है। इससे गाँववासियों के लिए परिष्कृत जल के उत्पादन में रुकावट आ रही है।

सुझाव: अधिकतर गाँववासियों ने सुझाव दिया कि पीने के पानी की घर-घर सप्लाई लागू की जाए।

प्रभाव

क्र.स.	**प्राचल**	**पानी लाभार्थी**	**गाँव के बुजुर्ग और ग्रामीण लोग**	**पौधा प्रचालक**	**नांदी फाउंडेशन अधिकारी गण**
1	सुरक्षित पेयजल (आर वो जल) सुविधा (24X7) तक पहुंच में वृद्धि	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
2	सुरक्षित पीने के पानी की खपत में वृद्धि	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
3	स्वास्थ्य लाभों पर	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ

	जागरूकता पैदा करने में पहल और समर्थन के सामुदायिक 4 स्वामित्व में वृद्धि				
4	टायफाइड, कोलेरा, डाइसेंटरी, मलेरिया जैसे पानी से उत्पन्न बीमारियों में कमी और आदि।	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
5	संयुक्त दर्द, ऑस्टियो आर्थराइटिस जैसी स्वास्थ्य समस्याओं में कमी	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
6	पानी का स्वाद और गुणवत्ता	अच्छा	अच्छा	अच्छा	अच्छा
7	मूल्य सामर्थ्य	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
8	**कुल मिलाकर संतुष्टि स्तर**	**उच्च**	**उच्च**	**उच्च**	**उच्च**

क्षेत्र-V: कौशल विकास

परियोजना-1: पुराने शहर के औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र को गोद लेना:

उद्देश्य: बीडीएल ने अपने निगमित सामाजिक दायित्व के अन्तर्गत पुराने शहर के औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र को गोद लेने के लिए कक्षाओं का निर्माण, छात्रों के लिए आवश्यक फर्नीचर और बुनियादी सुविधाओं से लैस कारखाने, औजारों, उपकरणों और कच्ची सामग्री की खरीद जैसा ढाँचागत सहयोग दिया है।

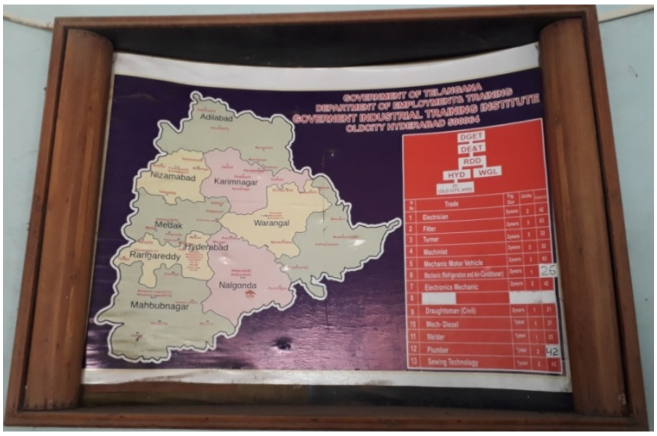

तेलंगाणा राज्य में औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र के कॉलेज

संचालन विवरण (पुराने शहर के औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र और बीडीएल के बीच समझौता ज्ञापन): यह समझौता ज्ञापन प्रारम्भ में 30 अगस्त 2016 से 29 अगस्त 2017 तक साल भर प्रभावी रहेगा। यदि दोनों पक्ष सहमत हों, तो इस समझौते को आगे बढ़ाया जा सकता है।

वर्ष 2016-17 में पुराने शहर के औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र के लिए निसादा का बजट

कुल बजट आवंटन: रु: 2: 88 करोड़

खर्च किया गया बजट: रु. 1.85 करोड़

सिविल वर्क्स की स्थिति (बीडीएल सी एस आर-फंड)

क्र.स.	**आई टी आई नाम**	**काम का नाम**	**उसका मकाना मजिस के लिए प्रशासनिक प्रशासक को मंजूरी दे दी गई है (लाखों में)**	**स्थिति प्रशासनिक मंजूरी**	**कार्य हीनं**	**कार्यकारी एजेंसी का नाम और अभियंता का संपर्क नंबर**
1		कक्षा कक्ष का निर्माण	95.00	प्रगति पर काम	आई डी सी	तेलंगाना राज्य शिक्षा

	आईटीआईपुरानेशहरहैदराबादकोगोदलेना	प्लंबर कार्यशाला का निर्माण	30।00	90% काम केवल प्लास्टिंग पूरा हो गया है	एल/3099/2016 दिनांकित: 17-02-2017 निदेशालय, रोजगार और प्रशिक्षण, हैदराबाद	कल्याण बुनियादी ढांचा विकास निगम, राहेलकर देवदासराव, मंडल अभियंता, 9704701603
		(6) कार्यशालाओं का नवीनीकरण	56।00	कार्यशालाओं और विद्युत कार्यों के लिए जी आई शीट छत लगाई जा रही है		

ध्यान दें : 2016-17 के दौरान सभी कार्यों को मंजूरी दे दी गई थी, फिर भी वे प्रगति पर हैं।

बीडीएल ने बुनिया दी ढांचागत विकास गतिविधियों को बाहर निकाला – स्नैपशॉट

आईटीआई पुराने शहर में बीडीएल फंड (30 लाख रुपये) के साथ प्लम्बर कार्यशाला का निर्माण

आई टी आई पुराने शहर में बीडीएल लागत(95 लाखरुपये) के साथ छह कक्षा के कमरे का निर्माण

अस्बेस्टास के टिनों को हटाकर और नई जस्तीकृत शीट (नवीनीकरण) किऐ नवीकरण (आ ई टी आई पुराना शहर मे बीडीएल धनखोश (56 लाख) से 6 वर्कशापों का नवीकरण

आई टी आई प्रशिक्षु और प्रशिक्षक विवरण

क्र.स.	व्यापार का नाम	इकाइयों	सेवन क्षमता	पंजीगत	शिक्षक
1	फिटर	3 इकाइयों	63	53	आर श्रीनिवास राव और एम डी.वासिफुद्दीन दोनों हैं प्रशिक्षण अधिकारी
2	टर्नरवी	2 इकाइयों	32	24	प्रशंथा, डी टी ओ और एस पवनकुमार, एटी ओ
3	मशीनिस्ट	2 इकाइयों	32	29	एम डी माजिद, एटी ओ (सी)

4	मैकेनिक मोटर वाहन	3 इकाइयाँ	63	59	आर प्रमाकुमार, ए टी ओ और मोहम्मद मोइनुद्दीन, ए टी ओ (सी)
5	बिजली मिस्त्री	2 यूनिट्स	42	29	अजयकुमार, डीटीओ
6	इलेक्ट्रॉनिक्स मैकेनिक	1 यूनिट	26	25	एम डी अतारुद्दीन, डीटीओ
7	प्रशीतन और वायु की स्थिति	1 यूनिट	26	14	के.बालीराम, एटी ओ (सी)
8	ड्राफ्ट्समैन सिविल	1 यूनिट	26	16	फरहेम बेगम, एटी ओ (सी)
9	मैकेनिक डीजल	1 यूनिट	21	17	मुथ्याम रेड्डी, एटी ओ (सी)
10	वेल्डर	1 यूनिट	21	17	प्रसाद, एटीओ
11	सिलाई प्रौद्योगिकी	2 यूनिट	42	31	मुहम्मद सबर, एटीओ
12	प्लंबर	2 इकाइयाँ	52	14	शंकर, एटीओ
	कुल		**446**	**328**	

टिप्पणियां:

वर्ष 2016-17 में फिटर, टर्नर, मशीनिस्ट, मोटर वाहन मिस्त्री, बिजली मिस्त्री, इलेक्ट्रानिकी मिस्त्री, रेफ्रिजरेशन और वातानुकूलन, नक्शा नवीस सिविल, डीज़ल मिस्त्री, वेल्डर, सिलाई प्रौद्योगिकी और नलकारी जैसे 12 हुनरों में 300 छात्रों को प्रशिक्षण दिया गया।

क. इस औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र के कॉलेज में पंजीकृत अधिकतर छात्र गरीबी की रेखा से नीचे की कोटि के हैं। वे दूर-दराज के गाँवों के वासी हैं।

ख. इस औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना वर्ष 1972 में की गई थी। इसमें अधिकतर कक्षाएं और कार्यशालाएं बदहाल थीं। भारत सरकार के गौरवशाली कार्यक्रम कौशल विकास को सम्बल देने के लिए बीडीएल ने पुराने शहर के औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र को गोद ले लिया। उसने वर्ष 2016-17 में छह कक्षाओं के निर्माण, छह कार्यशालाओं के नवीनीकरण और नलकारी की नई कार्यशाला की स्थापना जैसी ढाँचागत विकास की पहल की।

ग. सभी ढाँचागत कार्य जारी हैं। नलकारी की कार्यशाला का 90% कार्य और छह कार्यशालाओं के नवीनीकरण का काम सम्पन्न हो गया है। कक्षाओं के निर्माण का कार्य प्रारम्भिक स्थिति में है।

घ. समस्त प्रक्रियाओं के आरम्भ के साथ ही कक्षाओं और व्यावहारिक प्रशिक्षण को सम्बल देने के लिए कॉलेज में बेहतर ढाँचा उपलब्ध होगा।

चर्चा:

चर्चा-1:

श्रीमती एस रेणुका, प्राचार्य
औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, पुराना शहर
भेंट की तारीख: 21-4-2018

श्रीमती एस रेणुका, प्राचार्य ने कहा कि बीडीएल के गोद लेने से पहले औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, पुराना शहर बदहाल था, क्योंकि किसी भी प्रकार के नवीनीकरण के लिए सरकारी पैसे की बहुत कमी थी। कक्षाएं चलाने के लिए अपर्याप्त ढाँचे को देखते हुए मशीनरी के रख-रखाव और नई कक्षाओं के निर्माण की बड़ी आवश्यकता आन पड़ी थी।

प्राचार्य ने आगे कहा कि निसादा कार्यक्रम के अन्तर्गत बीडीएल के गोद लेने के बाद औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, पुराना शहर में प्रशिक्षणार्थियों को प्रायोगिक प्रशिक्षण देने और उन्हें उद्योग के लिए तैयार करने की दृष्टि से कक्षाओं/कार्यशालाओं में सैद्धान्तिक और प्रायोगिक कक्षाओं के लिए ढाँचे में भारी विकास हुआ है।

औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, पुराना शहर को गोद लेने और समस्त ढाँचागत विकास के मामले में उन्होंने बीडीएल के सहृदय प्रयासों की प्रशंसा की।

चर्चा-2:

श्री आर प्रेम कुमार, प्रशिक्षण अधिकारी
मोटर वाहन मिस्त्री विभाग
औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, पुराना शहर
भेंट की तारीख: 21-4-2018

श्री आर प्रेम कुमार, प्रशिक्षण अधिकारी, मोटर वाहन मिस्त्री विभाग ने कहा कि निसादा कार्यक्रम के अन्तर्गत बीडीएल के गोद लेने के बाद औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, पुराना शहर में अनेक सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं।

पहले एस्बस्टास की टूटी-फूटी चादरों में से पानी चूता था। उससे बिजली का करंट लग जाता था। उनकी जगह लोहे की चादरों से नवीनीकरण के बाद यह समस्या हल हो गई है और कार्यशालाएं जोर-शोर से चल रही हैं। उन्होंने यह भी कहा कि बीडीएल से भरपूर कच्चे माल और प्रायोगिक मशीनरी/उपकरणों की आपूर्ति के बाद प्रशिक्षणार्थियों के प्रायोगिक प्रशिक्षण में बड़ा सुधार हुआ है।

चर्चा-3:
बी नागेश और आर नवीन
प्रशिक्षु, मशीनिस्ट हुनर
औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, पुराना शहर
भेंट की तारीख: 21-4-2018

मशीनिस्ट हुनर के प्रशिक्षु बी नागेश और आर नवीन ने अपना अनुभव बताया कि कार्यशाला में पहले बैठने की समुचित सुविधा न थी। बरसात में एस्बस्टास की चादरों से पानी चूता था, लेकिन कार्य-शालाओं के नवीनीकरण और एस्बस्टास की चादरों की जगह लोहे की चादरें छाज देने के बाद से यह समस्या कारगर ढंग से हल हो गई है। छात्र अब निश्चिन्त बैठ सकते हैं। वे कार्यशालाओं में उपस्थित रहते हैं।

चर्चा-4:
श्रीमती सफ़िया ख़ातून और जी स्वाति
सिलाई मशीन प्रशिक्षु
औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, पुराना शहर
भेंट की तारीख: 21-4-2018

सिलाई मशीन प्रशिक्षु श्रीमती सफ़िया ख़ातून और जी। स्वाति ने औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, पुराना शहर को गोद लेने के लिए बीडीएल के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की। उन्होंने बताया कि उनके प्रशिक्षण के लिए बीडीएल कच्चा माल और सिलाई की उन्नत मशीनें उपलब्ध कराता है। इससे उन्हें उत्तरोत्तर सिखलाई में सहायता मिली है। इस हुनर से वे अच्छी-खासी जीविका उपार्जन करके अपने परिवार को सहारा दे पा रही हैं। इस हुनर से परिधान उद्योग में उनके लिए अनेक रोजगारों के दरवाजे खुल गए हैं। वे चाहती हैं कि अन्य ग्रामीण अंचलों में महिलाओं को प्रशिक्षित करें, आत्मनिर्भर बनाएं, कमाई का टिकाऊ माध्यम दें और बीडीएल के सौजन्य से प्राप्त प्रशिक्षण को आगे बढ़ाएं।

झलके

एम एम वी पाठ्यक्रम में ऑटोमोबाइल मरम्मत

सिलाई मशीन प्रशिक्षण

परियोजना-2: बेरोजगार युवकों के लिए कौशल का विकास

स्थल: भारतीय विज्ञान संस्थान, चित्रदुर्ग परिसर, कर्नाटक

निसादा बजट आवंटन: रु:1:00 करोड़

कार्यान्वयन एजेंसी: भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलूरु

भारत सरकार के बहु प्रचारित कार्यक्रम 'कुशल भारत' के अन्तर्गत इस परियोजना से बड़ी उपलब्धियों की आशा है। भारतीय विज्ञान संस्थान के प्रो. राम तुरग से टेलिफोन पर चर्चा की गई। उन्होंने उजागर किया कि 22 से 26 जनवरी, 19 से 23 फरवरी और 19 से 23 मार्च 2018 तक कौशल विकास की पहल के अन्तर्गत तीन कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से पैनल, इनवर्टर, विद्यमान ग्रिड से ग्रिड इंटरफेस

जैसी प्रणाली की बुनियादी बातें समझने में सहायता मिलती है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का लक्ष्य प्रतिभागियों को सौर ऊर्जा प्रणाली की स्थापना, परिचालन और रख-रखाव सिखाना भी है। पाठ्यक्रम पूरा कर लेने के बाद सभी प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र दिए गए।

प्रतिभागियों का चुनाव

कुल 267 आवेदनों में से प्रत्येक बैच के लिए बीस-बीस प्रत्याशियों के तीन बैच निम्न लिखित तीन मानदण्डों के आधार पर चुने गए।

योग्यता के आधार पर: डिप्लोमा, बी ई/बी टेक; एम ई; एम टेक; पीएचडी, बी एस सी एवं एम एस सी। पृष्ठभूमि के प्रत्याशियों को प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर दिया गया।

कार्य-क्षेत्र के आधार पर: अध्यापन क्षेत्र के प्रत्याशी, जैसे विभिन्न इंजीनियरिंग संस्थानों के प्रोफेसर, नवीकरणीय ऊर्जा से सम्बद्ध कम्पनियों में कार्यरत लोग और सद्यः-स्नातकों को भी चुना गया।

स्थान के आधार पर: देश भर के विविध स्थानों के प्रत्याशियों को अवसर दिया गया, जिससे इस प्रशिक्षण का प्रचार देश भर में हो।

पाठ्यक्रम में सम्मिलित विषय

भारतीय विज्ञान संस्थान के संकाय सदस्यों ने जिन विषयों पर व्याख्यान दिए, वे हैं

- नवीकरण योग्य ऊर्जा के स्रोतों का परिचय
- सौर प्रकाश वोल्टाई और तापिकी के सिद्धान्त
- प्रकाश वोल्टाई का लक्षण-वर्णन
- विद्युत इलेक्ट्रानिक्स और इनवर्टरों के डिज़ाइन का परिचय
- सौर प्रकाश वोल्टाई और सौर ताप का अनुप्रयोग
- ऊर्जा का भण्डारण
- सम्पोष्यता
- प्रकाश वोल्टाई की स्थापना, ग्रिड का परिचालन और रख-रखाव

प्रयोगशाला के दौरे के विवरण

- इलेक्ट्रानिकी प्रयोगशाला: भाँति-भाँति के पीसीबी और छात्रों के बनाए इनवर्टर दिखाए गए, जो सफलतापूर्वक काम कर रहे हैं।
- जैव नैनो इलेक्ट्रानिकी प्रयोगशाला: डिज़ाइन, संश्लेषण और जैव प्रकाश वोल्टाई कोशिकाओं का लक्षण-वर्णन
- तापिकी प्रयोगशाला: कार्यशील द्रव के रूप में अति क्रान्तिक कार्बन डाइ ऑक्साइड युक्त संकेन्द्रित सौर विद्युत प्रौद्योगिकी

- आइसीईआर प्रयोगशाला: एनविस उपकरणों का परिचालन और छायांकन प्रभाव, अभिनमन प्रभाव, बाह्यपथ और अवरोधी डायोडों का प्रभाव, ग्रिड पर और ग्रिड परे परिचालन, एकल और द्विध्रुरीय अन्वेषण, समय अन्वेषण और दस्ती अन्वेषण के प्रदर्शन के लिए पारि-संवेद मॉडल। प्लॉट 1-5 अभिलक्षणों पर प्रयोग, प्रभावकारिता का निर्धारण और एमपीपी भी किया गया।
- सौर डैशपट्ट: डाटा निष्कर्षण, डाटा भण्डारण, मेघावरण से समक्रमण और डाटा विश्लेषण की कार्यविधि।
- उच्च वोल्टता प्रयोगशाला: आवेग जनित्र, सोपानित ट्रान्सफॉर्मर, विशुद्ध साइन वेव एसी जनित्र, आर्द्रता कक्ष, वातावरण में प्रदूषण की जाँच, आवेष्टन की जाँच, कान्तिचक्र जाँच की सुविधा आदि ।

फील्ड में दौरे के विवरण

- आइसीईआर बाइपीवी: चार हजार वाट ग्रिड सन्दर्भ, सूक्ष्म इनवर्टर युक्त एकीकृत फोटोवोल्टाई प्रणाली का निर्माण, मौसम केन्द्र एवं बैटरी विहीन।
- सीएसटी बाइपीवी: बीस हजार वाट ग्रिड सन्दर्भ, सूक्ष्म इनवर्टर युक्त एकीकृत फोटो वोल्टाई प्रणाली का निर्माण और भवन के अंग के रूप में स्थापित तंत्री इनवर्टर।
- इलेक्ट्रानिकी प्रयोगशाला बाइपीवी: पच्चीस हजार वाट ग्रिड सन्दर्भ, छात्रों से अभिकल्पित सूक्ष्म इनवर्टर से चालित एकीकृत फोटोवोल्टाई प्रणाली का निर्माण।
- चल्लकेरे बड़ा जाँच तल

प्रशिक्षण के बाद भी सम्पर्क कायम रखना

प्रतिभागी गूगल ड्राइव के माध्यम से भारतीय विज्ञान संस्थान से जुड़े रहते हैं। संस्थान में नोट, सामग्री और अन्य सूचना को नियमित आधार पर अद्यतन बनाया जाता है। अलावा इसके, प्रतिभागी जी-ड्राइव के माध्यम से प्रशिक्षकों के सम्पर्क में बने रहते हैं और सौर संस्थापनाओं तथा अनुसन्धान सम्बन्धी संकल्पनाओं या समस्याओं का स्पष्टीकरण लेते रहते हैं। कक्षाएं ऊर्जा और अनुसन्धान अन्तर-अनुशासन केन्द्र (आइसीईआर-भारतीय विज्ञान संस्थान) में लगाई गईं। अपने अनुसन्धान समूह के छात्रों ने दौरे और प्रदर्शन किए।

प्रतिसूचना: दो बैचों के प्रतिभागियों से अच्छी प्रतिसूचना मिली है। तीसरा कार्यक्रम जारी है। समस्त प्रतिसूचना का ऑनलाइन भण्डारण किया जाता है।

Ist Batch: 22nd -26th Jan 2018

2ndBatch: 19th -23rd Feb 2018

3rd Batch: 19th -23rd March 2018

संतुष्टि

सं.	प्राचल	प्रशिक्षित छात्र	प्रशिक्षित प्रशिक्षकों	छात्र	माता-पिता नियक्ता
1	नौकरी नियुक्ति के अवसरों में वृद्धि	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
2	प्रशिक्षित छात्रों के लिए उद्यमशील अवसरों में वृद्धि	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
3	कक्षा के कमरे के शिक्षण और व्यावहारिक सत्रों केलिए आधारभूत सुविधाओं में वृद्धि	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
4	ग्रामीणयुवा/महिलाओं के आजीविका के अवसरों में वृद्धि	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
5	स्थानीय/क्षेत्रीय नियोक्ता को कुशल संसाधनों की आपूर्ति	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
6	बेरोजगारी दर में कमी	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
7	युवा/महिलाओं और उनके परिवारों के सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण में वृद्धि	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
8	कौशल विकास कार्यक्रमों तक पहुंच में वृद्धि	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ
9	कौशल विकास कार्यक्रमों तक पहुंच में वृद्धि	बहुत ऊँचा	बहुत ऊँचा	बहुत ऊँचा	बहुत ऊँचा

क्षेत्र-VI: खेलों के क्षेत्र में विकास

परियोजना का नाम: राष्ट्रीय खेल विकास निधि में योगदान
स्थल: भारतीय खेल प्राधिकरण का खेल प्रशिक्षण केन्द्र, गच्ची बावली, सिकंदराबाद
परियोजना की लागत: रु। 2।25 करोड़
दौरे की तारीख: 8-6-2018

राष्ट्रीय खेल विकास निधि क्या है

राष्ट्रीय खेल विकास निधि की स्थापना धर्मार्थ अक्षयनिधि अधिनियम, 1890 के अन्तर्गत नवम्बर 1998 में की गई थी। इसका लक्ष्य था देश में खेल-कूद को बढ़ावा देना। इस निधि के मुख्य उद्देश्य निम्न लिखित हैं:

- राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कर्ष हासिल करने की दृष्टि से निधि का पैसा सामान्य रूप से खेलों के बढ़ावे के लिए, विशेष खेलों और खास तौर से खिलाड़ियों को देना और उपयोग करना;
- खिलाड़ियों, खेल शिक्षकों और खेल विशेषज्ञों को उनके अपने खेलों के क्षेत्र में विशेष प्रशिक्षण और खेल शिक्षण देना;
- खेल-कूद को बढ़ावा देने के लिए ढाँचे का निर्माण और रख-रखाव;
- खेल-कूद को बढ़ावा देने के लिए संगठनों और खिलाड़ियों को खेल के उपकरणों की आपूर्ति;
- खेलों में उत्कर्ष हासिल करने के लिए समस्याओं की पहचान, अनुसन्धान और विकासात्मक अध्ययन;
- अन्तरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना, विशेष रूप से ऐसा आदान-प्रदान जिससे खेलों के विकास को बढ़ावा मिले; और
- उपर्युक्त में से किसी भी उद्देश्य से सम्बन्धित परियोजनाओं और गतिविधियों के लिए ब्याज की कम दर पर या बिना ब्याज का ऋण उपलब्ध कराना।

बीडीएल का प्रयास: भारत डायनामिक्स लिमिटेड ने राष्ट्रीय खेल विकास निधि में 2।25 करोड़ रुपये के योगदान के लिए युवा मामले और खेल मन्त्रालय के साथ 24-3-2017 को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

इस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर भारत में खेलों की उन्नति और राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में महत्तर ऊँचाइयां हासिल करने के लिए कम्पनी के निगमित सामाजिक दायित्व की पहल के अंग के रूप में किए गए हैं।

भारत डायनामिक्स लिमिटेड के योगदान (रु.2.25 करोड़) से भारतीय खेल प्राधिकरण के खेल प्रशिक्षण केन्द्र, गच्ची बाउली, सिकन्दराबाद का कोटि-उन्नयन इस दृष्टि से किया जा रहा है कि उसे भारतीय खेल प्राधिकरण-भारत डायनामिक्स लिमिटेड खेल प्रशिक्षण केन्द्र का रूप दिया जा सके।

भारतीय खेल प्राधिकरण के खेल प्रशिक्षण केन्द्र, गच्चीबावली में सुविधाओं के कोटि-उन्नयन की प्रक्षिप्त लागत 3:65 करोड़ रुपये है। वहाँ निर्माण-कार्य में छात्रावास भवन में रसोई/भोजनशाला आदि की मरम्मत सम्मिलित है।

यह लागत बीडीएल की निसादा निधि से पूरी की जाएगी। शेष अर्थात् बीडीएल के योगदान से ऊपर की राशि का प्रावधान भारतीय खेल प्राधिकरण करेगा और उसकी भरपाई अपने स्रोतों से करेगा।

छात्रावास भवन में रसोई/मण्डप के नवीनीकरण का कार्य भी प्रारम्भ किया जाना अभी शेष है।

खेल छात्रावास में फ़िलहाल 75 लड़के और 50 लड़कियां ठहरी हुई हैं। उन्हें एथलेटिक, तीरंदाज़ी, हॉकी, हैंडबाल और कबड्डी आदि खेलों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

क्र सं	**प्राचल**	**खेल कोच**	**खेल व्यक्ति**	**एस ए आई अधिकारी**
1	खेल बुनियादी ढांचे तक पहुंच	हाँ	हाँ	हाँ
2	गुणवत्तावाले मनोरंजक कैंटीन बुनियादी ढांचे प्रदान करेगा	हाँ	हाँ	हाँ

3	स्वच्छता सुविधा में सुधार होगा	हाँ	हाँ	हाँ
4	वातावरण	हाँ	हाँ	हाँ
	कुल मिलाकर संतुष्टि स्तर	**बहुत ऊँचा**	**बहुत ऊँचा**	**बहुत ऊँचा**

क्षेत्र- VII: अन्य

परियोजना-1: कंचनबाग पुलिस थाना की सीमाओं में सी सी टी वी लगाना
कार्यान्वयन में भागीदार: हैदराबाद पुलिस विभाग
बजट आवंटन: रु. 15 लाख
खर्च किया गया बजट: रु.15 लाख
स्थिति: सम्पन्न

यह परियोजना लागू भले ही नगर की सीमा के भीतर की गई है, लेकिन है महत्वपूर्ण। वह इसलिए कि कंचनबाग क्षेत्र में बीडीएल, डीआरडीओ, मिधानि जैसे रक्षा संगठन और अन्य कम्पनियां स्थित हैं। अन्य कम्पनियों ने सतर्कता और सुरक्षा पर ध्यान बरसों से केन्द्रित नहीं किया है। इसलिए बीडील ने पहल की है। कंचनबाग पुलिस थाना के अंचल में सीसीटीवी लगाने में बीडीएल ने हैदराबाद नगर पुलिस के साथ भागीदारी की और 24 सीसीटीवी कैमरे लगा दिए गए। इस पहल से अपराधियों के मन में आपराधिक काण्ड करने को लेकर भय उत्पन्न होगा। अपराधों की रोकथाम और नियन्त्रण के अलावा, अपरधियों की धर-पकड़ में सहायता भी मिलेगी।

अपराधों की खोज-बीन में सीसीटीवी कैमरों का महत्व
पुलिस सीसीटीवी कैमरा प्रणाली की सहायता से जगह-जगह आसानी से निगाह रख सकती है और सुरक्षा प्रदान कर सकती है। इसके लिए आवश्यक नहीं कि वह उन जगहों पर सशरीर उपस्थित रहे ही।

सीसीटीवी फुटेज के माध्यम से पुलिस अपराधियों को चीन्ह सकती है। यह वैध साक्ष्य का काम दे सकता है। न्याय दिलाने में सहायक हो सकता है। इसके अतिरिक्त, निगरानी कैमरे धन-सम्पत्ति की चोरी-चकारी और तोड़-फोड़ से बचाते हैं। यदि ये कैमरे क्षेत्र विशेष को फिल्मबंद कर रहे हों, तो चोरी करके इनकी आँख से बच निकलना बहुत कठिन है। कानून-व्यवस्था कायम रखने और अपराधियों को न्याय की पैड़ी पर पहुँचाने में सीसीटीवी कैमरे बड़े कारगर सिद्ध होते हैं। अपराध किए जाने के बाद भी लोग-बाग अपराध से बेखबर ही रहते हैं। इस परिदृश्य में पुलिस की छान्-बीन के दौरान निगरानी फुटेज अत्यन्त महत्वपूर्ण साक्ष्य होता है। निगरानी कैमरों ने अब तक अनेक अपराधों से बचाव किया है और अपराधों की रोकथाम आगे भी करते रहेंगे।

गणेश उत्सव और गणेश विसर्जन, श्रीराम नवमी, हनुमान जयन्ती, रमज़ान, बकरीद आदि त्योहारों के दौरान अप्रिय घटनाएं न होने देने में सीसीटीवी कैमरे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सीसीटीवी कैमरे लगाए जाने से पहले: वर्ष 2015 में छीन-झपट की सात घटनाएं और वर्ष 2016 में चार घटनाओं की रपट मिली थी।

सीसीटीवी कैमरे लगाए जाने के बाद : इस क्षेत्र में विद्यालय जाते बच्चों, महिलाओं और सामान्य जनों की सुरक्षा और संरक्षा में बढ़ोतरी हुई है। वर्ष 2017 और 2018 में (31-3-2018 तक) छीन-झपट की किसी घटना की रपट नहीं मिली है।

सीसीटीवी कैमरे लगाने का मुख्य लक्ष्य और उद्देश्य है हैदराबाद के नागरिकों की सुरक्षा और संरक्षा। अपराध की रोकथाम और कानून-व्यवस्था बनाए रखने में सीसीटीवी कैमरे पुलिस के लिए बड़े उपयोगी और सहायक हैं। विनायक चतुर्थी, बोनालु, रमज़ान, बकरीद, आंजनेय जयन्ती आदि पर्वों के दौरान इनका महत्व और भी बढ़ जाता है। सीसीटीवी कैमरों के बारे में व्यापक प्रचार के चलते अपराधी अपराध करने से डरने लगे हैं। इन सीसीटीवी कैमरों से 30 दिन के दृश्य फुटेज का भण्डारण मिल जाएगा।

बीडीएल-पुलिस विभाग ने 24 सीसीटीवी कैमरे इन स्थलों पर लगाए हैं:

1) बीडीएल के सिंहद्वार पर -- 3 कैमरे 2) डी आर डी ओ टाउनशिप के फाटक पर -- 2 कैमरे

3) साईं बाबा मन्दिर के सामने मारुतिनगर में -- 1 कैमरा 4) मारुति नगर चर्च की गली में -- 1 कैमरा 5) पूर्वी मारुति नगर की कमान -- 1 कैमरा 6) एच।पी। पेट्रोल पम्प पर –- 2 कैमरे 7) गांधी जी की प्रतिमा के पास -– 2 कैमरे 8) डी.बी.नगर रोड नं. 6 पर –-1 कैमरा

9) वड्डुर बस्ती में -- 2 कैमरे 10) सेंट्रल एक्साइज़ कॉलनी में -- 3 कैमरे 11) भाष्यम् स्कूल के पास –- 1 कैमरा 12) डी.बी. नगर में क्रिस्टल बार के सामने -- 1 कैमरा 13) डी-मार्ट के पास, राजी रेड्डी नगर में -- 2 कैमरे

14) इंडो-इंगलिश स्कूल के पास -- 1 कैमरा।

मामले:

वर्ष 2017 के सितम्बर महीने में दो अज्ञात लोगों ने बीडीएल, कंचनबाग के सिंहद्वार पर तैनात पहरुए से हथियार छीनने का प्रयत्न किया था। भारतीय दण्ड संहिता की धारा 392 के अन्तर्गत आपराधिक मामला सं। 174/2017 तुरन्त दर्ज किया गया और सीसीटीवी फुटेज की सहायता से अरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया।

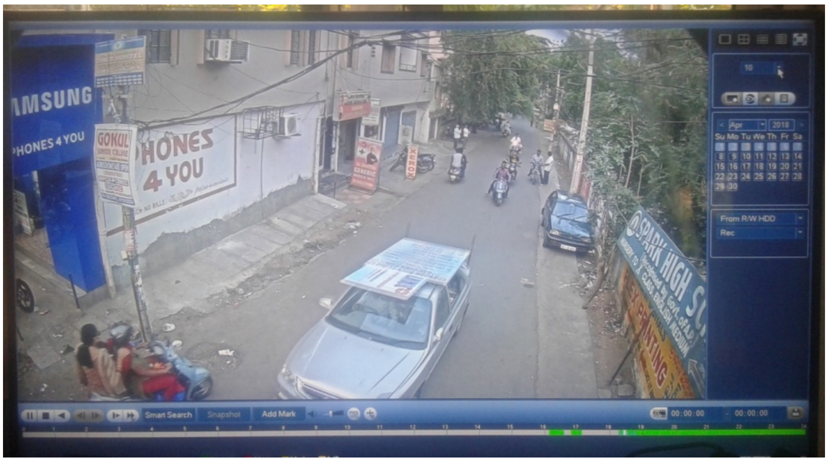

बीडीएल के सिंहद्वार पर सीसीटीवी कैमरा

पणधारकों से आपसी चर्चा:

चर्चा-1

श्री शंकर, सर्कल इंस्पेक्टर

कंचनबाग पुलिस थाना

कंचनबाग, हैदराबाद

भेंट की तारीख: 7-4-2018

पुलिस के सर्कल इंस्पेक्टर श्री शंकर ने कहा कि बीडीएल के सहयोग से हैदराबाद पुलिस विभाग ने कंचनबाग पुलिस थाने के अलग-अलग महत्वपूर्ण स्थलों पर 24 सीसीटीवी कैमरे लगाए हैं। सीसीटीवी कैमरे लगाने का मुख्य लक्ष्य है अपराधों पर नियन्त्रण और इस क्षेत्र के विद्यालय जाते बच्चों, महिलाओं तथा सामान्य जनों को बेहतर सुरक्षा और संरक्षा देना।

उन्होंने आगे कहा कि सीसीटीवी लगाए जाने के बाद अपराध की दर काफी घट गई है। अपराधों की दर घटाने में सीसीटीवी कैमरे बीज-भूमिका निभा रहे हैं। इसलिए घरेलू सुरक्षा की दृष्टि से और चोरी-डाका, तोड़-फोड़ आदि की अवांछित घटनाओं की रोकथाम के लिए सीसीटीवी कैमरे घर-घर में लगाए जाने चाहिए। नेनु सैतम् परियोजना के अन्तर्गत इस पुलिस थाना के क्षेत्र में 2651 कैमरे लगाए गए। इससे अपराध की दर काफी घट गई है।

बातचीत 2:

श्रीरघुमा रेड्डी, व्यापारी

पूर्वी मारुथें नगर, कंचनबाग पुलिस स्टेशन क्षेत्र

हैदराबाद

देखी गई तिथि: 7.4.2018

श्रीरघुमा रेड्डी, व्यापारी ने कहा कि बीडीएल और हैदराबाद पुलिस विभाग ने 1 साल पहले मारुतिनगर में दो सीसीटीवी कैमरे स्थापित किए थे। पुलिस विभाग के निर्देशों के अनुसार, सुरक्षा कारणों से, पूर्वी मारुति नगर बस्ती के सदस्यों ने अपने स्वयं के बस्ती परिसर में सीसीटीवी कैमरे भी स्थापित किए।

उन्होंने यह भी साझा किया कि सी सी टी वी कैमरों की स्थापना से पहले, ४ छीनने वाली घटनाएं हुईं जो सीसीटीवी कैमरे स्थापित होने के बाद रुकाव हुआ

बातचीत3

श्री पी जयपाल रेड्डी, व्यापारी और श्री रघुनाथन रेड्डी, व्यापारी

मारुतिनगर, कंचनबाग पुलिस स्टेशन क्षेत्र, हैदराबाद

देखी गई तिथि: 7/4/2018

श्री पी जयपाल रेड्डी और श्री रघुनाथन रेड्डी ने कहा कि बीडीएल और हैदराबाद पुलिस विभाग ने मारुतिनगर में अपने क्षेत्र में सीसीटीवी कैमरे स्थापित किए और बस्ती के सदस्यों ने अपने परिसर में सीसीटीवी कैमरे भी स्थापित किए।सीसीटीवी कैमरों की स्थापना के बाद, सीसीटीवी फुटेज की मदद से बस्ती में दो मौकों पर चोर पकड़े गए। अब सभी जानते हैं कि बस्ती में सीसीटीवी कैमरे स्थापित हैं, जिसके कारण श्रृंखला छीनने, लूटपाट और महिलाओं और बच्चों के उत्पीड़न की कम घटनाएं हुई हैं। बस्ती के सदस्य अत्यधिक सराहना कर रहे हैं।

सीसीटीवी कैमरों के अधिष्ठापन के प्रयास के लिए बीडीएल और कंचनबाग पुलिस बहुत मेहनत की।

संतुष्टि स्तर

क्र.स.	**प्राचल**	**पोलिस वाला और दूसरे अधिकारी**	**कॉलोनी के सदस्य**	**स्थानीय संघ**
1	स्थानीय लोगों के लिए सुरक्षा और स्वतंत्रता बढ़ी	हाँ	हाँ	हाँ
2	अपराध का पता लगाने और रोकधम करना	हाँ	हाँ	हाँ
3	महिलाओं और बाल सुरक्षा में वृद्धि	हाँ	हाँ	हाँ
4	बर्बरता मे कम	हाँ	हाँ	हाँ
	कुल मिलाकर संतुष्टि स्तर	बहुत ऊँचा	बहुत ऊँचा	बहुत ऊँचा

अध्याय -IV
प्रभाव आकलन

प्रभाव को मुख्य रूप से छह विचारो मापदण्ड में मापा गया है जैसे कि सम्बंधता, कार्य क्षमता, प्रभावशीलता, नई खोज, स्थिरता और सामुदायिक भागीदारी

1 = गरीब, 2= निष्पक्ष, 3 = अच्छा, 4= बहुत अच्छा और 5= प्रकांड

I.ग्रामीण विकास परियोजना मूल्यांकन

क्र.सं.	मापदण्ड	मूल्यांकन
1	प्रासंगिकता	5
2	कार्यक्षमता	4
3	प्रभावशीलता	4
4	नवोत्मेय	4
5	सातत्यता	4
6	सामुदायिक भागीदारी	5
	सर्वागाण	**4**

II.स्वास्थ्य देखभाल परियोजना मूल्यांकन

क्र.सं.	मापदण्ड	मूल्यांकन
1	प्रासंगिकता	5
2	कार्यक्षमता	5
3	प्रभावशीलता	5
4	नवोत्मेय	4
5	सातत्यता	4
6	सामुदायिक भागीदारी	5
	सर्वागाण	**5**

III. **स्वच्छता परियोजना मूल्यांकन**

क्र.सं	मापदण्ड	परियोजना -1	परियोजना-2	परियोजना-3	परियोजना-4	परियोजना-5
		इलेक्ट्रॉनिक शौचालयों का निर्माण (एस एच ई- ई-शौचालय)	सरकारी पाठशालओ में शौचालयों के लिए जरुरत पानी की सुविधा का प्रावधान , तेलंगाना	सरकारी पाठशालाओं में शौचालयों के लिए जरुरत पानी की सुविधा का प्रावधान , आंध्र-प्रदेश	सरकारी पाठशालाओं में शौचालयों को संभालना तेलंगाना	सरकारी पाठशालाओं में शौचालयों को संभालना आंध्रप्रदेश
1	प्रासंगिकता	5	4	3	4	4
2	कार्यक्षमता	5	5	3	4	4
3	प्रभावशीलता	5	4	3	4	3
4	नवोत्मेय	5	4	4	4	4
5	सातत्यता	5	4	4	4	4
6	सामुदायिक भागीदारी	4	4	4	4	4
	सर्वागाण	5	4	4	4	4

IV. **शिक्षा परियोजना मूल्यांकन**

क्र.सं.	मापदण्ड	मध्य:दिन भोजन	पाठशाला फर्नीचर
1	प्रासंगिकता	5	5
2	कार्यक्षमता	5	5
3	प्रभावशीलता	5	5
4	नवोत्मेय	5	5
5	सातत्यता	4	5
6	सामुदायिक भागीदारी	5	4
	सर्वागाण	**5**	**5**

अध्याय- V

निष्कर्ष

बीडीएल ने सामाजिक दायित्व सौंपे जाने के आरम्भिक काल से ही अपने नवोन्मेषी निसादा अभियानों के माध्यम से सामाजिक विकास के क्षेत्र में शीर्षस्थ स्थान अर्जित कर लिया है। सुन्दर से सुन्दर और अधिकाधिक हरे-भरे पृथ्वी ग्रह के विकास के लिए राष्ट्रों ने ज्यों-ज्यों दायित्व सम्हाला, त्यों ही बीडीएल ने शिक्षा, स्वास्थ्य-रक्षा, सफाई और सुख-सुविधाओं से वंचित लोगों के समग्र रूप से सम्पोष्य रहन-सहन के क्षेत्र में ग्रामीण विकास की पहलकदमी से राष्ट्र की नींव को सुदृढ़ बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

बीडीएल ने भूख, कुपोषण, दूर-दराज के अंचलों में महिलाओं, बच्चों और बड़े-बूढ़ों की स्वास्थ्य-रक्षा, पीने के स्वच्छ-सुरक्षित पानी की उपलब्धता, सफाई और शिक्षा के अधिकार के प्रमुख मामलों को लक्ष्य करके सर्वव्यापी रणनीतिक विकास कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की। ये पहलें गाँव गोद लेने के विविध कार्यक्रमों, ग़ैर-सरकारी संगठनों से गठजोड़ और स्वच्छ विद्यालय अभियान तथा कौशल विकास के अन्य कार्यक्रमों जैसी सरकारी पहलकदमी से ताल-मेल बिठाकर अमल में लाए गए।

बीडीएल ने इस कार्यक्रम के अन्तर्गत गोण्डुपालेम और क्यासारम् जैसे दूर-दराज के गाँव गोद लिए। आम लोगों के सहयोग से अपनी विभिन्न योजनाएं सफलतापूर्वक लागू कीं। इनके सुपरिणाम भी सामने आए। बीडीएल की ओर से निर्मित सामुदायिक केन्द्र की सुविधा के ज़रिए रोज़गार पैदा करने के लिए कौशल विकास, जलजन्य रोगों के उन्मूलन और जल की कमी के प्रतिकार के लिए जल प्रसंस्करण केन्द्रों की स्थापना से पेय जल की सुविधा उपलब्ध कराना, प्राथमिक स्वास्थ्य-रक्षा केन्द्र का निर्माण और दिसा-मैदान के कुटेव को रोकने के लिए घर-घर शौचालयों का निर्माण इस संगठन की बड़ी-बड़ी पहलों में से कुछ एक हैं। इन प्रयासों के प्रति गाँवों में सकारात्मकता और कृतज्ञता देखते ही बनती है, जब वे बीडीएल के निसादा गतिविधियों की छतनार छत्रछाया में अपने बाल-बच्चों के उज्वल भविष्य और परिवार के बेहतर रहन-सहन के लिए आस बाँधते हैं।

बच्चों की 'शिक्षा के अधिकार' पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए योजनाओं की रूपरेखा तैयार करते हुए बीडीएल ने अक्षयपात्र न्यास निधि से हाथ मिलाया और संगारेड्डी ज़िला तथा विशाखापट्टणम् के गाँव-गाँव में मध्याह्न भोजन कार्यक्रम लागू किया है। इनकी ओर से हर दिन 15,000 से अधिक बच्चों को दोपहरी परोसी जा रही है, जिससे गरीबी और भूख के चलते विद्यालय की पढ़ाई छोड़ने वाले छात्रों की संख्या नगण्य रह जाए। इस योजना से न केवल गाँववासियों को बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहन मिलता है, बल्कि सुख-सुविधाओं से वंचित इन बच्चों के स्वास्थ्य की बेहतरी में कुपोषण के प्रतिकार के माध्यम से सहायता भी मिलती है। शिक्षा के क्षेत्र में

बीडीएल का एक और अनुकरणीय प्रयास है नलगोण्डा के पाँच गाँवों में स्कूली फर्नीचर उपलब्ध कराने की पहल। यह फर्नीचर चंचलगुड़ा जेल के बन्दियों ने तैयार किया है। इस प्रयास से बन्दियों को आजीविका का साधन मिला, नागरिकता के मूल्य अपनाने का अवसर मिला और बेहतर विद्यालयीन शिक्षा की दिशा में हाथ बँटाने से उन्हें सामाजिक रूप से ज़िम्मेदार बनाने का प्रतिफल भी। इन बन्दियों को समाज में बेहतर ढंग से खपाने के लिए भारत सरकार का उद्यम राष्ट्रीय निर्माण अकादमी अग्रसक्रिय भूमिका निभा रही है। सामूहिक उपचार, व्यावसायिक प्रशिक्षण, सार्थक शिक्षा, रख-रखाव का कामकाज जैसी सुधार की आधुनिक संकल्पनाओं और मनोरंजन की अन्य गतिविधियों से इन बन्दियों का मनोवैज्ञानिक पुनर्वास किया जा रहा है।

बीडीएल के निसादा की पहलों की गढ़ रही हैं स्वास्थ्य-रक्षा की गतिविधियां। उन्होंने हेल्पएज इंडिया के सहयोग से यादाद्रि और विशाखापट्टणम् ज़िलों के गाँववासी बड़े-बूढ़ों के लिए यथा नाम तथा गुण बड़े उपयोगी पग उठाए हैं। स्वास्थ्य जागरूकता शिविरों, मुफ्त दवाओं और निःशुल्क सलाह के माध्यम से उन्हें समुचित चिकित्सा उपलब्ध कराई है। घर-घर पहुँचती और चलती-फिरती स्वास्थ्य-रक्षा इकाइयों के माध्यम से अस्पताल को घर की पैड़ी तक पहुँचा देने के लिए इस पहल की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई है। बड़े-बूढ़ों की ह्रासमान मृत्यु-दर से इस कार्यक्रम ने दिखा दिया है कि ऐसे ग्रामीण क्षेत्रों में भी आम-फ़हम स्वास्थ्य की कायापलट के महत्वपूर्ण सुपरिणाम हासिल किए जा सकते हैं।

बीडीएल ने स्वच्छ तेलंगाणा अभियान के अन्तर्गत बृहैननि के संग भागीदारी से स्त्रियों के लिए हैदराबाद भर में इ-शौचालय बनवाए हैं। उद्देश्य है 'दिसा-मैदान मुक्त नगर' की संकल्पना का कार्यान्वियन। बीडीएल ने वक़्त के तकाज़े को ठीक-ठीक पहचाना है। दीर्घकालीन सम्पोष्यता के लिए प्रौद्योगिकी आधारित रणनीतियों का सूत्रपात किया है। स्त्रियों के लिए इ-शौचालय इसका अनुपम उदाहरण है। आम जनता को अधिकतम सुविधा उपलब्ध कराने के मामले में इन शौचालयों ने अतीव स्वचलता, बेजोड़ रख-रखाव और उपयोक्ताओं के अनुकूल साधनों के साथ हैदराबाद के प्रमुख क्षेत्रों को अपनी परिधि में ले रखा है। इन शौचालयों ने महिलाओं की सुरक्षा, स्वास्थ्य और सफाई को तो आगे बढ़ाया ही है, स्त्रियों के मान-सम्मान को पुनः प्रतिष्ठित किया है और सफाई के स्वास्थ्यप्रद लाभों के प्रति जागरूकता उत्पन्न की है। आइए, ग्रामीण क्षेत्रों की ओर फिर मुड़ें। बीडीएल ने तेलंगाणा के दूर-दराज के गाँवों और विशाखापट्टणम् के अनेक विद्यालयों में शौचालयों और हाथ-मुँह धोने की जगहों के लिए अविरल जल की सुविधा उपलब्ध कराई है। सर्व शिक्षा अभियान और स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत अच्छे स्वास्थ्य और सफाई रखने के लिए हाथ धोने और शौचालयों के उपयोग की आदत छात्रों में कर्तव्य परायणता से डाली जा रही है।

बीडीएलने 'जीने का अधिकार' को अपनी कार्यसूची में अन्तर्हित कर लिया है। उन्होंने नान्दी न्यास निधि के साथ मिल-जुलकर सूक्ष्मगामी पग उठाए हैं। उद्देश्य है संदूषित पानी की आपूर्ति और पेय जल के अभाव से जूझते गाँवों के लिए अपनी पहल से पीने के निर्मल जल की व्यवस्था। ध्यातव्य है कि संदूषित पानी से जलजन्य रोग घेर लेते हैं और स्वास्थ्य बदहाल हो जाता है। विभिन्न गाँवों में जल परिष्करण संयन्त्र लगाए गए हैं। वे रिवर्स

ओस्मोसिस प्रौद्योगिकी से लैस हैं। इनसे अनेकानेक घर-गिरस्तियों को नाममात्र की लागत पर स्वच्छ-सुरक्षित जल उपलब्ध हो गया है।

इन पहलों और उनके उत्कृष्ट परिणामों से बीडीएल ने सिद्ध कर दिया है कि वह राष्ट्र के विकास में आलोक-स्तम्भ है ही, निसादा के वास्तविक स्वरूप का सच्चा उदाहरण भी है। आँकड़े न्याय करें या न करें; पणधारकों तथा लाभार्थियों के अन्तर्मन से आभार-प्रदर्शन में बीडीएल का सद्भाव और सौजन्य अवश्य झलकता है। यह संगठन राष्ट्रीय विकास की भावना से सराबोर है। *